आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 नवम्बर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2016 ★ कार्तिक, 2073
ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

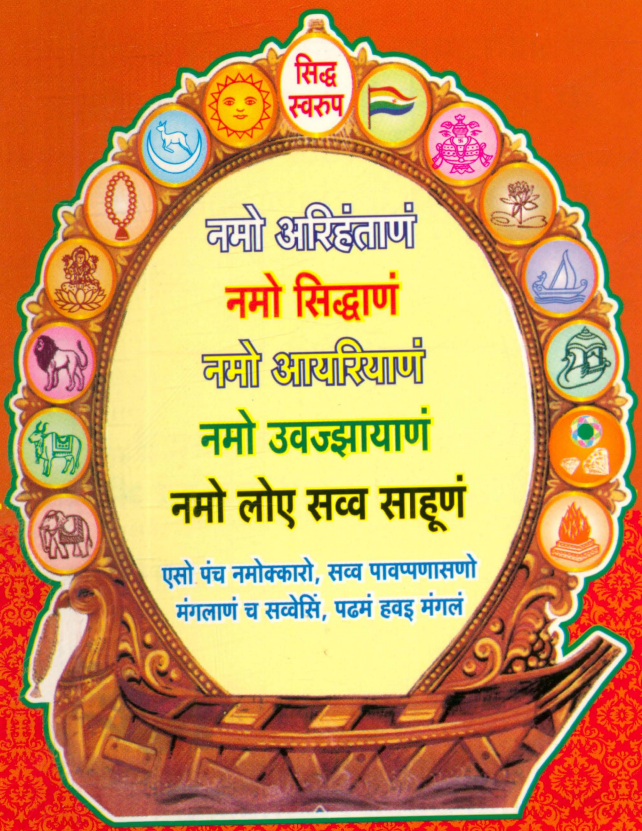

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मिहिलं सपुरजणवयं बलमोरोहं,
च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खंतो,
एगंतमहिडिओ भयवं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.4

जपपदयुत प्रिय मिथिला नगरी,
सेना, रनिवास तथा परिजन।
सब छोड़ शांतिपथ निकल पड़े,
एकान्तवास में स्थिर कर मन।।

नवम्बर, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2543
कार्तिक, 2073

वर्ष 74 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं f हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	निश्चय नय एवं व्यवहार नय	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	10
विचार-वारिधि-	संयम	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	कषाय-विजय की राह के बनें राही	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृतशिक्षा (4)	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	17
दीक्षा-दिवस-	जिनशासन गौरव गुरु हीरा	-श्री ओमप्रकाश गुप्ता	19
आरोग्य -	जीवनशैली और आरोग्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	22
शोधालेख -	दशवैकालिक सूत्र : एक परिचय	-प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन	25
	प्राकृत भाषा में 'ण' और 'न' का प्रयोग	-श्री जम्बूकुमार जैन	65
अध्यात्म -	सामायिक एवं ध्यान-साधना की परस्पर पूरकता	-श्रीमती शान्ता मोदी	38
	अहंकार त्यागें, सर्वहित अपनाएँ	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	50
	ध्यान तथा ऊर्जा	-श्री प्रमोद महनोत	68
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Dialogism in The Jain Canons**	*-Dr. Shweta Jain*	41
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (99)	-श्री धर्मचन्द जैन	52
युवा-स्तम्भ -	युवा हुई युवक-परिषद् से अपेक्षा	-श्री अरूण मेहता	57
नारी-स्तम्भ-	संस्कारों की जननी : नारी	-ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभा जैन	59
धारावाहिक-	लग्न की वेला (23)	-आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु'	74
बाल-स्तम्भ -	ऐसे भी होते हैं बच्चे	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	82
कविता/गीत-	सुख का यही आधार	-श्री दिलीप गाँधी	11
	बिन माँगे सब मिलता है	-श्रीमती सुरेखा-नेमीचन्द नाहर	21
	जब कोई नहीं आता	-श्री अभिषेक जैन	24
	हीरा गुरु श्रेयकारी है	-श्री उम्मेदमल लुणावत	56
	जीवन बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	64
	धर्म मंगल है, मंगलकारी है	-डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'	71
	ओ मेरे गुरुवर हीरा	-श्रीमती अरुणा कर्णावट	79
	करुणा रस बरसाता चल	-डॉ. दिलीप धींग	80
	मुक्ति की मंजिल	-डॉ. रमेश 'मयंक'	85
	संलेखना-संथारा	-श्री जिनेन्द्रकुमार जैन	86
विचार-	चिन्तन की मनोभूमि	-श्री सम्पतराज चौधरी	49
	क्रोध से कलह	-श्री राजेन्द्रसिंह चौधरी	51
	विचार-कणिकाएँ	-श्री पीरचन्द चोरडिया	58
	करें, सोच समझकर	-श्रीमती पी. आशा दुग्गड़	70
	सूक्ति-समुच्चय	-श्री पारस सांखला (जैन)	81
	पानी और जिनवाणी	-श्री चन्द्रसिंह लोढ़ा	89
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	87
पर्युषण-रिपोर्ट-	स्वाध्याय संघ, जोधपुर की पर्युषण रिपोर्ट (2)	-संकलित	90
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	98
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

सम्पादकीय

निश्चय नय एवं व्यवहार नय

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आचार्य कुन्दकुन्द ने जैन परम्परा में आत्मा के शुद्धस्वरूप को समझाने हेतु निश्चय नय का प्रयोग किया है। वे आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसे शरीर, गति, जाति आदि पर्यायों से पृथक् प्रतिपादित करते हैं। वे देह एवं उससे सम्बद्ध सभी पौद्गलिक पर्यायों को आत्मा के शुद्ध स्वरूप से भिन्न बतलाते हैं। उनके प्रतिपादन का आधार सिद्धों की शुद्ध आत्मा है। सिद्धों की आत्मा गति, जाति, पर्याप्ति, प्राण आदि सभी उपाधियों से रहित है। वह राग-द्वेष, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि से भी रहित है। अतः शुद्ध आत्मा का स्वरूप इनसे पृथक् है। आचार्य कुन्दकुन्द यह ध्यान दिलाते हैं कि ऐसी शुद्ध आत्मा स्वरूपतः प्रत्येक संसारी जीव में भी विद्यमान है। जीव कर्मों से आबद्ध है, राग-द्वेष से युक्त है, देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, पर्याप्ति, प्राण आदि से युक्त है, ऐसा व्यवहार नय से स्वीकार किया जाता है। कई बार व्यवहारनय से जीने वाला व्यक्ति सम्यग्दर्शन के अभाव में सुखभोगों में उलझा रहता है।

बाह्य संसार के सुखभोगों में उलझे हुए प्राणियों को सद्बोध देने के लिए आचार कुन्दकुन्द ने निश्चय नय का आलम्बन लिया है। वे समयसार में कहते हैं-

सुदपरिचिदाणुभूया सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।। -समयसार, 4

सभी प्राणियों को काम भोग विषयक बन्ध की कथा तो सुनने में, परिचय में एवं अनुभव में आयी है, इसलिए सुलभ है, किन्तु शरीरादि पुद्गलों से विभक्त आत्मा का स्वरूप सुलभ नहीं है। अतः आत्मा के स्वरूप से परिचित कराने के लिए कुन्दकुन्दाचार्य ने समयसार, प्रवचनसार, नियमसार आदि ग्रन्थों की रचना की है। उनके इन ग्रन्थों पर आचार्य अमृतचन्द्र एवं आचार्य जयसेन ने क्रमशः आत्मख्याति एवं तात्पर्यवृत्ति नामक टीकाएँ लिखी हैं।

प्रश्न यह है कि आचार्य कुन्दकुन्द के पूर्व जैन आगमों में निश्चय नय एवं व्यवहारनय का उल्लेख हुआ है या नहीं? इस सम्बन्ध में व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र का वह सन्दर्भ उल्लेखनीय है, जिसमें कहा गया है कि निश्चय से भ्रमर में कृष्ण, नील आदि पाँच वर्ण होते हैं, किन्तु व्यवहार से उसे काले वर्ण का कहा जाता है। इसी प्रकार व्यवहार नय से गुड़ हमें मीठा लगता है, किन्तु निश्चय से उसमें पाँचों वर्ण होते हैं। इस प्रकार निश्चय नय परमार्थ का कथन करता है, इसे भूतार्थ अथवा आत्यन्तिक सत्य (Absolute truth) भी कहा जा सकता है। सम्भव है आचार्य कुन्दकुन्द ने यहाँ से निश्चय नय शब्द का ग्रहण किया हो। क्योंकि निश्चय शब्द का प्रयोग जैन

आगमों में अन्यत्र एवं अन्य भारतीय दर्शनों में प्रायः प्राप्त नहीं होता है।

आचार्य कुन्दकुन्द के पूर्व बौद्ध दर्शन में आचार्य नागार्जुन ने क्रान्तिकारी कदम उठाते हुए बुद्ध के उपदेश को संवृति सत् एवं परमार्थ सत् के रूप में समझने की प्रेरणा करते हुए कहा था-

द्वे सत्ये समुपाश्रित्य, बुद्धानां धर्मदेशना।
एकं संवृतिसत्यं च सत्यं च परमार्थतः।।

'संवृति सत्य' व्यवहार सत्य का तथा 'परमार्थ सत्य' आत्यन्तिक सत्य (Absolute truth) का वाचक है। नागार्जुन ने जगत् के सभी पदार्थों को समझाते हुए संवृति सत्य एवं परमार्थ सत्य शब्दों का प्रयोग किया है। नागार्जुन के पश्चात् या उनके समकालीन आचार्य कुन्दकुन्द भी सत्य को समझने के लिए नयों का आश्रय लेते हैं तथा निश्चय नय एवं व्यवहार नय शब्दों का प्रयोग करते हैं। वे व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र के भ्रमर, गुड आदि के वर्णादि के कथन में प्रयुक्त निश्चय एवं व्यवहार शब्दों का प्रयोग पौद्गलिक वस्तुओं को समझाने में करने की अपेक्षा कुन्दकुन्द आत्मस्वरूप को स्पष्ट करने में ही करते हैं।

यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र आदि जैन आगमों में प्रतिपादित द्रव्यार्थिक नय एवं पर्यायार्थिक नय ही क्रमशः निश्चय नय एवं व्यवहारनय के रूप में परिणत हुए हैं। आचार्य अमृतचन्द्र ने समयसार की टीका में स्पष्ट कहा है- व्यवहारनयः किल पर्यायाश्रितत्वात्..। निश्चयनयस्तु द्रव्याश्रितत्वात्...। (समयसार, गाथा 56 की टीका)। निश्चय नय द्रव्याश्रित है तथा व्यवहारनय पर्यायाश्रित है। निश्चय नय अभेदात्मक बोध कराता है तथा व्यवहार नय से भेदात्मक बोध होता है। अतः दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि निश्चय नय का विषय सामान्य या द्रव्य है तथा व्यवहार नय का विषय विशेष या पर्याय है। आचार्य कुन्दकुन्द ने इन नयों का प्रयोग प्रमुखतः शुद्ध आत्मस्वरूप का निरूपण करने में किया है।

निश्चय नय को आचार्य कुन्दकुन्द शुद्ध नय भी कहते हैं। इस शुद्ध नय का आश्रय लेकर ही जीव सम्यग्दृष्टि होता है-

ववहारोऽभूदत्थो भूदत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो।। -समयसार,11

आचार्य अमृतचन्द इस गाथा का अर्थ करते हुए कहते हैं कि व्यवहार नय अभूतार्थ है तथा निश्चय नय भूतार्थ है। भूतार्थ (वास्तविक सत्य) का आश्रय लेकर ही जीव सम्यग्दृष्टि होता है। आचार्य जयसेन ने इस गाथा की एक भिन्न व्याख्या करते हुए कहा है- ''**द्वितीय-व्याख्यानेन पुनः ववहारो अभूदत्थो व्यवहारोऽभूतार्थो भूदत्थो भूतार्थश्च देसिदो देशितः कथितः न केवलं व्यवहारो देशितः सुद्धणओ शुद्धनिश्चयनयोऽपि। दु शब्दादयं शुद्ध-निश्चयनयोऽपीति व्याख्यानेन भूताभूतार्थभेदेन व्यवहारोऽपि द्विधा, शुद्धनिश्चयाशुद्धनिश्चयभेदेन निश्चयनयोऽपि द्विधा इति**

नयचतुष्टयम्।'' अर्थात् व्यवहार नय अभूतार्थ एवं भूतार्थ दोनों प्रकार का कहा गया है तथा शुद्ध नय भी भूतार्थ एवं अभूतार्थ दोनों प्रकार का है। इस तरह नय के चार प्रकार हो जाते हैं- 1. भूतार्थ व्यवहार नय, 2. अभूतार्थ व्यवहार नय, 3. शुद्ध निश्चय नय एवं 4. अशुद्ध निश्चय नय। यहाँ जयसेनाचार्य व्यवहारनय की भी महत्ता को अंगीकार कर रहे हैं।

जब तक साध्य की अर्थात् सिद्धावस्था की प्राप्ति नहीं हुई है तब तक व्यवहार नय की उपयोगिता का निषेध नहीं किया जा सकता। कुन्दकुन्दाचार्य की दृष्टि में समिति-गुप्ति व्रतादि का पालन व्यवहारनय की कोटि में आता है। ये सब साधन हैं, ऐसा तत्त्वार्थ सार में स्पष्टतः कहा गया है-

निश्चयव्यवहाराभ्यां मोक्षमार्गो द्विधा स्थितः।
तत्राद्यः साध्यरूपः स्याद् द्वितीयस्तस्य साधनम्।।

-तत्त्वार्थसार, श्लोक 2

निश्चयनय आत्माश्रित है तथा व्यवहारनय पराश्रित है, ऐसा अमृतचन्द्र आत्मख्याति टीका में कहते हैं-''आत्माश्रितो निश्चयनयः पराश्रितो व्यवहारनयः।।'' (समयसार, गाथा 272 की आत्मख्याति टीका) शुद्ध आत्मा का निरूपण करने वाला नय निश्चय नय है तथा उससे भिन्न का निरूपण करने वाला नय व्यवहार नय है।

कुन्दकुन्द निश्चयनय से व्यवहारनय का प्रतिषेध अंगीकार करते हैं तथा निश्चयनय का आलम्बन लेने वाले मुनियों की ही निर्वाण प्राप्ति मानते हैं। (समयसार, गाथा 272) वे व्यवहारनय को उपदेश का माध्यम मानते हैं। उनका कथन है कि जिस प्रकार म्लेच्छ व्यक्ति को उसकी अनार्य भाषा के बिना नहीं समझाया जा सकता, उसी प्रकार व्यवहार नय के बिना परमार्थ का उपदेश अशक्य है।

आगम में जीव का विवेचन करते हुए पर्याप्त, अपर्याप्त, सूक्ष्म, वादर आदि का जो विवेचन आता है, उसे कुन्दकुन्द व्यवहार नय से स्वीकार करते हैं, परमार्थतः नहीं-

पज्जत्तापज्जत्ता जे सुहुमा बादरा य जे चेव।
देहस्स जीवसण्णा सुत्ते ववहारदो उत्ता।। -समयसार, 67

अर्थात् जो पर्याप्त, अपर्याप्त, सूक्ष्म, बादर आदि जितनी देह की जीव संज्ञाएँ कही गई हैं वे सभी व्यवहारनय से कही गई हैं। शरीर से जुड़ी हुई जीव की जो भी क्रियाएँ हैं उन्हें कुन्दकुन्द निश्चय से जीव की क्रिया नहीं मानते, व्यवहार से स्वीकार करते हैं। कर्म का बन्धन भी वे निश्चय से नहीं व्यवहार से मानते हैं। शुद्ध आत्मा के वर्णन में उन्होंने कहा है-

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं।
अपदेससुत्तमज्झं पस्सदि जिणसासणं सव्वं।।-समयसार, 15

जो अपने को अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, अविशेष देखता है, वह सूत्रकथित समस्त जिनशासन को देखता है। यहाँ अबद्धस्पृष्ट शब्द इस बात का द्योतक है कि आत्मा कर्मों से बन्धा हुआ नहीं है। यह कुन्दकुन्द की शुद्ध आत्मा के प्रतिपादन की एक दृष्टि है।

आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रतिपादित करने के साथ वे अभेदता का भी अवलम्बन लेते हैं, इसलिए शुद्ध आत्मा में प्राप्त होने वाले ज्ञान, दर्शन आदि के सम्बन्ध में कहते हैं-

ववहारेणुवदिस्सइ णाणिस्स चरित्त दंसणं णाणं।
णवि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो।। -समयसार, 7

अर्थात् ज्ञानी के ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र व्यवहार नय से कहे जाते हैं, निश्चय नय से तो ज्ञान भी नहीं है, दर्शन भी नहीं है एवं चारित्र भी नहीं है, वह एक मात्र शुद्ध ज्ञायक है। कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा ऐसा निरूपण करना उन्हें अद्वैत की ओर ले जाता है एवं जैन परम्परा की मूल धारा से दूर करता है। ज्ञान, दर्शन आदि का निषेध करना उचित प्रतीत नहीं होता।

आचार्य कुन्दकुन्द, उनके टीकाकार अमृतचन्द, कानजी स्वामी आदि जब निश्चयनय के द्वारा व्यवहारनय का प्रतिषेध करते हैं तो जैन दर्शन में इन नयों की तुल्यता का सिद्धान्त खण्डित होता है। वास्तव में दोनों नय जीवन में समान रूप से उपयोगी हैं। निश्चय नय से साध्य का बोध होता है तथा व्यवहारनय साधन के रूप में उपयोगी होता है। कहीं-कहीं व्यवहानय से भी सत्य को जाना जाता है। शुद्ध आत्मा का बोध होना साधक का लक्ष्य हो सकता है, किन्तु वह व्यवहार नय के द्वारा व्रत, समिति, गुप्ति आदि को अपनाकर ही साध्य की ओर अग्रसर हो सकता है। अतः निश्चय नय जितना उपयोगी है, उतना ही व्यवहार नय उपयोगी है। दोनों की आवश्यकता के सम्बन्ध में एक गाथा प्रसिद्ध है-

जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारणिच्छए मुयह।
एक्केण विणा छिज्जइ तित्थं अण्णेण उण तच्चं।।

-समयसार, गाथा 12 पर आत्मख्याति टीका में उद्धृत

यदि जिनमत को अंगीकार करते हो तो व्यवहार एवं निश्चय को मत छोड़ो, क्योंकि एक के बिना तीर्थ का नाश होता है तथा दूसरी (निश्चय नय) के बिना तत्त्व का लोप हो जाता है। यहाँ पर व्यवहार नय को तीर्थ की निरन्तरता हेतु आवश्यक बताया है, किन्तु यही नहीं परम लक्ष्य की प्राप्ति में भेदपूर्वक ज्ञान (व्यवहार नय) एवं स्व-पर (जीव-अजीव) दोनों का स्वरूप बोध भी उपयोगी होता है। समस्त साधना को व्यवहार नय की श्रेणी में रखकर साधना की उपेक्षा नहीं की जा सकती। सामायिक की साधना शुद्ध आत्मा के स्वरूप तक ले जाती है, अतः उस साधना को हीन या हेय नहीं समझा जा सकता। इसी प्रकार समिति-गुप्ति का पालन, द्वादशविध तप भी कर्मनिर्जरा में सहायक होने से समान रूप से उपयोगी हैं।

संसारी आत्मा ज्ञाता-द्रष्टा होने के साथ वास्तव में कर्ता एवं भोक्ता भी होता है। इस सत्य को किसी भी नय से झुठलाना उचित नहीं है। षट्खण्डागम, कषायपाहुड आदि दिगम्बर आगम हों अथवा आचारांग, सूत्रकृतांग आदि श्वेताम्बर आगम हों, सभी में आत्मा को कर्ता-भोक्ता प्रतिपादित किया है। अतः उसे मात्र व्यवहार नय से स्वीकार कर निश्चय नय से प्रतिषेध करना उचित नहीं है। सिद्धों में कर्तृत्व-भोक्तृत्व शेष न रहने के कारण हम जीव मात्र में इसका प्रतिषेध नहीं कर सकते। आत्मा का स्वरूप प्रतिपादन करने में जहाँ कुन्दकुन्दाचार्य ने आध्यात्मिक दृष्टि का परिचय दिया है वहाँ उन्होंने अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता के साथ आगमिक परम्परा में फेराफार भी किया है। लक्ष्य की दृष्टि से जहाँ निश्चयनय स्वीकार किया जा सकता है, वहाँ साधना की दृष्टि से व्यवहार नय भी उतना ही उपयोगी है। निश्चय एवं व्यवहार परस्पर सापेक्ष हैं। आचार्य कुन्दकुन्द के निश्चय-व्यवहार नय के प्रतिपादन में बौद्धिक रूप से आध्यात्मिक दृष्टि का परिचय तो मिलता है, किन्तु उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधना किस प्रकार की जाए, इसका प्रयोगिक अथवा आनुभविक परिचय गौण हो गया है। ❖

जिनवाणी पत्रिका के सम्पादन हेतु अहिंसा इण्टरनेशनल सम्मान

अहिंसा इण्टरनेशनल, दिल्ली की ओर से 8 अक्टूबर 2016 को आदित्य कॉम्प्लेक्स, प्रीत विहार, दिल्ली में उपाध्याय श्री गुप्तिसागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित पुरस्कार समर्पण समारोह-2016 में जिनवाणी पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित जिनवाणी मासिक पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन हेतु **"अहिंसा इण्टरनेशनल विजयकुमार, प्रबोधकुमार, सुबोध जैन पत्रकारिता पुरस्कार"** से सम्मानित किया गया। उनका यह सम्मान जिनवाणी पत्रिका का सम्मान है। डॉ. जैन को यह सम्मान सन् 1994 से जिनवाणी पत्रिका का निरन्तर कुशल सम्पादन करने हेतु प्रदान किया गया है।

डॉ. जैन को सम्मान के रूप में अभिनन्दन-पत्र के साथ 21000/- की राशि का चैक प्रदान किया गया। डॉ. जैन ने यह राशि जिनवाणी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहर्ष अर्पित की है। इससे पूर्व 2500 वें निर्वाण महोत्सव पर देशभर से प्रकाशित विशेषांकों में जिनवाणी "जैन संस्कृति और राजस्थान" विशेषांक को सर्वश्रेष्ठ मानकर दिगम्बर समाज की ओर से मानद् सम्पादक डॉ. नरेन्द्रजी भानावत को लक्ष्मीदेवी जैन पुरस्कार के साथ प्रशस्ति-पत्र एवं स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया गया था। *-डॉ. श्वेता जैन, सह-सम्पादक*

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

चउव्विहा कहा पण्णत्ता, तं जहा- अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी, निवेदणी।-स्थानांग सूत्र, 4.2, सूत्र 246

अर्थ- चार प्रकार की कथा कही गई है, यथा- आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी एवं निर्वेदनी।

विवेचन- जो कही जाती है वह कथा है (कथ्यते इति कथा), किन्तु कथा में घटना-प्रसंगों का भी उल्लेख मिलता है। वर्तमान में कथा उसे ही कहा जाता है, जिसमें घटना-प्रसंग हों। कथा बड़ी भी होती है एवं छोटी भी। आजकल छोटी कथाओं के लिए कहानी शब्द का भी प्रयोग होता है। बाणभट्ट रचित कादम्बरी ऐसी कथा है, जिसमें अनेक उपकथाएँ निबद्ध हैं। आजकल के उपन्यास भी पहले कथा के अन्तर्गत आते थे। विषय वस्तु के आधार पर कथा के दो प्रकार हैं- 1. कथा (धर्मकथा) 2. विकथा।

जैन आगमों में विकथा एवं कथा दोनों का वर्णन आता है। विकथा चार प्रकार की कही गई है- स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा एवं राजकथा। पुरुषों के द्वारा स्त्री सम्बन्धी चर्चा स्त्रीकथा कही जाती है। जब स्त्रियाँ पुरुषों के सम्बन्ध में कामविकार बढ़ाने वाली कथा करती हैं तो वह पुरुषकथा कहलाती है। यहाँ पुरुषकथा को स्त्रीकथा के अन्तर्गत सम्मिलित समझना चाहिए। भोजन आदि के सेवन करने की चर्चा भक्त (भज्+क्त) कथा कहलाती है। देश, विदेश अथवा स्थान विशेष के सम्बन्ध में जो चर्चा की जाती है वह देशकथा है तथा राजनीति, राज्य, राजा, राष्ट्र अथवा सरकार के सम्बन्ध में विकार बढ़ाने वाली कथा राजकथा है। ये चारों विकथाएँ विकार बढ़ाने के कारण अथवा साधक को साधना से विचलित करने के कारण विकथा कही गई हैं।

कथा के भी चार प्रकार हैं- आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी एवं निर्वेदनी। कथा के ये चार प्रकार धर्मकथा के प्रकार हैं, जो जीवन में संशय एवं भ्रान्ति को दूर कर तत्त्वबोध कराते हैं तथा संवेग एवं वैराग्य को उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। धर्मकथा ही वस्तुतः कथा है जो साधक के लिए उपयोगी है। गृहस्थ जीवन जीने वाला व्यक्ति देशकथा, राजकथा आदि अन्य कथाएँ भी करता है, किन्तु साधक जीवन जीने वाले के लिए ये विकथाएँ हैं अर्थात् विकार पैदा करने वाली कथाएँ हैं।

धर्मकथा अथवा कथा के जो चार प्रकार कहे गए हैं, वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। आक्षेपणी कथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप के प्रति आकर्षित करती है। शिष्य को उन्मार्ग

से खींचकर धर्ममार्ग में लाकर स्थापित (आक्षिप्त) करती है। उसके आचार-विचार को पवित्र बनाती है। इसे न्याय की भाषा में तत्त्वबुभुत्सु कथा भी कहा गया है। वीतरागता की ओर ले जाने के कारण इसे वीतराग कथा भी कहते हैं। स्थानांगसूत्र में इसके चार प्रकार कहे गए हैं,- 1. आचार आक्षेपणी, 2. व्यवहार आक्षेपणी, 3. प्रज्ञप्ति आक्षेपणी एवं 4. दृष्टिवाद आक्षेपणी। साधु और श्रावक के आचार को उत्कृष्ट बनाने वाली कथा आचार आक्षेपणी कथा है। प्रायश्चित्त आदि युक्त व्यवहार को शुद्ध बनाने वाली कथा व्यवहार आक्षेपणी है। ज्ञान का सम्यक् प्रकाश करने वाली कथा प्रज्ञप्ति आक्षेपणी कथा है तथा विभिन्न नयों की दृष्टियों से तत्त्व का निरूपण करने वाली कथा दृष्टिवादाक्षेपणी कथा है।

विक्षेपणी कथा के अन्तर्गत परमत का कथन कर उसका निराकरण (विक्षेपण) किया जाता है तथा जिनमत (स्वसमय) को पुष्ट किया जाता है। साधक के संशयों एवं भ्रान्तियों का निराकरण कर वीतराग मार्ग में सुदृढ़ किया जाता है। संवेदनी कथा में उन घटना-प्रसंगों अथवा उपदेशों का कथन किया जाता है जिनके कारण इहलोक, परलोक, स्वशरीर एवं परशरीर से सुखभोग की भावना या अभिलाषा समाप्त होती है एवं शाश्वत दुःखमुक्ति की ओर प्रगति होती है। निर्वेदनी कथा वैराग्य को पुष्ट करती है। इसके अन्तर्गत दुष्कर्मों का दुष्परिणाम एवं सदाचरण का सत्फल प्रतिपादित करने वाली कथाएँ की जाती हैं। सुखविपाक एवं दुःखविपाक सूत्र में इसी प्रकार के कथानक हैं। इन कथानकों से साधक का यह विश्वास दृढ़ होता है कि बुरे कर्म का परिणाम बुरा तथा शुभ कर्म का परिणाम अच्छा होता है। इस तरह ये चारों धर्मकथाएँ साधक को मुक्ति की ओर ले जाने में सहायक होती हैं। गुरु अथवा शास्त्र के माध्यम से साधक इन कथाओं को समझकर अपना लक्ष्य साध लेता है।

अतः मुमुक्षु साधक के लिए वे ही कथाएँ उपयोगी होती हैं जिनसे साधना का मार्ग पुष्ट होता है तथा साधना में दृढ़ता आती है। विकार उत्पन्न करने वाली अथवा साधना शिथिल करने वाली कथाएँ या चर्चाएँ सर्वथा त्याज्य हैं।-**सम्पादक**

सुख का यही आधार

श्री दिलीप गाँधी

अहं भूल खुश रहो, कर थोड़ा उपकार।
दुःख से बचने का यही, एक मात्र उपचार।।
गुस्सा नफरत छोड़ दें, करें ना तिरस्कार।
तन-मन नित स्वस्थ रहें, सुख का यही आधार।।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़ (राज.)

विचार-वारिधि

संयम

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यह सत्य है कि मन अत्यन्त चपल है, हठीला है और शीघ्र काबू में नहीं आता। किन्तु उस पर काबू पाना असंभव नहीं है। बार-बार प्रयत्न करने से अन्ततः उस पर काबू पाया जा सकता है।
- किसी उच्च स्थान पर पहुँचने के लिए एक-एक कदम ही आगे बढ़ाना पड़ता है।
- धर्म-शिक्षा या अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा मन को वशीभूत किया जा सकता है।
- जो शरीर के प्रति ममतावान् है, उसे शरीर के प्रतिकूल आचरण करने पर रोष उत्पन्न होता है, किन्तु जिसने शरीर को पर-पदार्थ समझ लिया है और जिसे उसके प्रति किंचित् भी ममता नहीं रह गई है, वह शरीर पर घोर से घोर आघात लगने पर भी रुष्ट नहीं होता।
- ज्ञान अपने आप में अत्यन्त उपयोगी सद्गुण है, किन्तु उसकी उपयोगिता विरतिभाव प्राप्त करने में है।
- जो विवेकशील साधक विरतिभाव के बाधक कारणों से बचता है, वही साधना में अग्रसर हो सकता है।
- सम्यग्दर्शन आदि भाव-रत्न आत्मा की निज सम्पत्ति हैं। इनसे आत्मा को हित और सुख की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य भोगोपभोग में संयम नहीं रखता, वह प्रलोभनों का सामना नहीं कर सकता। जिस बुराई को मिटाना चाहते हो उसी का आश्रय लेते हो, यह तो उस बुराई को मिटाना नहीं, बल्कि उसकी परम्परा को चालू रखना है।
- समभाव की साधना की विशेषता यह है कि इससे व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त उच्च, उदार, शान्त और सात्त्विक बनता है।
- धर्म एकान्त मंगलमय है। वह आत्मा, समाज, देश तथा अखिल विश्व का कल्याण-कर्त्ता और त्राता है। आवश्यकता इस बात की है कि जनता के मानस में धर्म और नीति के प्रति आस्था उत्पन्न हो जाए।
- जो शासन धर्मनिरपेक्ष नहीं, धर्मसापेक्ष होगा वही प्रजा के जीवन में निर्मल, उदात्त और पवित्र भावनाएँ जागृत कर सकेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

कषाय-विजय की राह के बनें राही

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सुशीला भवन, निमाज, जिला-पाली में 01-02 अक्टूबर 2016 को विद्वत्संगोष्ठी में फरमाए गए इन प्रवचनों का संकलन श्री जगदीश जी जैन द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

प्रथम दिवस (1 अक्टूबर 2016)

जीव का स्वभाव ध्रुव-शाश्वत-स्थिर होते हुए भी वह नाना गति-जाति-योनियों में भटक रहा है। निश्चित ही इस भटकने के पीछे कोई कारण रहा हुआ है। सर्वज्ञों की वाणी में वह कारण 'कर्म' कहा जा रहा है। कर्म का बंध भी बिना कारण के नहीं हुआ करता। उस कर्म बंध का कारण कषाय है। सामान्य रूप से धारणा है कि परिवार में पूर्वजों के रोग संतति में वंशानुगत पाये जाते हैं- जैसे बाप के पसीना अधिक आता है तो बेटे में भी वे लक्षण मिलेंगे। यदि बाप के हार्ट की बीमारी है तो बहुधा वह परिवार में किसी न किसी के हो ही जाती है। पड़ौसी अक्सर उस समय कह ही देते हैं कि इसके बाप-दादा से यह बीमारी चली आ रही है। इसी तरह यदि किसी क्षेत्र के पानी में खराबी है तो वहाँ कई भाइयों के बाला आदि रोग हो जाते हैं। कई भाई गाँवों में निवास कर रहे हैं, वहाँ यदि अनपढ़ अधिक हैं तो संगति का दोष रूपी रोग आ ही जाता है- उदाहरण के लिए असत्य भाषा बोलना सीख जाते हैं। ऐसे ही प्रान्त व देशीय रोग भी हैं- जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, आई फ्लू आदि।

मैं आज एक ऐसे रोग की बात करने जा रहा हूँ- जिसे आप मानें या न मानें, जो प्रत्यक्ष में दिखे या न दिखे, पर वह त्रिलोकव्यापी है। प्रत्येक संसारी जीव उस रोग से ग्रसित है, कोई भी उस रोग से बचा हुआ नहीं है। वह रोग है- कषाय का रोग। अन्य रोग केवल कुछ दिनों के लिये, महीनों के लिये, वर्षों के लिये या अधिक हो तो उस भव के लिये रुलाने वाले हैं। आप सब वणिक् हैं, लाभ-हानि वाले सौदों में प्रज्ञा से काम लेने वाले हैं। आपको एक भव का रोग मिटाना है या भव-भव का रोग मिटाना है, तन के रोग को तो तत्काल मिटाने के लिये आप चिकित्सकों के चक्कर लगाते हैं, पर कषाय का रोग जो अनादिकाल से है, उसके लिये देरी क्यों? दीर्घकालीन लाभ वाले व्यवसाय के लिये आप जितने व्यथित हैं, उतनी तड़फन अनादिकालीन कषाय से छुटकारे के विषय में हो, ऐसा आह्वान कर रहा हूँ। इसके लिये जन्म से रुलाने वाले कषाय के निकंदन के लिये चिन्तन कर पुरुषार्थ करें।

'आगम-साहित्य में कषाय' विषय पर संगोष्ठी चल रही है। इसमें मुझे अनन्तानुबन्धी चतुष्क एवं मिथ्यात्व को लेकर कुछ कहना है। प्रश्न यह है कि अनन्तानुबंधी एवं मिथ्यात्व में से पहले क्या? मुर्गी व अण्डे में पहले कौन? इसी तरह यहाँ भी जिज्ञासा है। इस प्रश्न का उत्तर भी कठिन है, किन्तु विचार करने पर ज्ञात होता है कि दूसरे गुणस्थान में अनन्तानुबंधी है, मिथ्यात्व नहीं, इससे द्योतित हो रहा है कि अनन्तानुबंधी कारण है। जब तक अनन्तानुबंधी है, तब तक सम्यक्त्व नहीं होता। सम्यक्त्व से गिरते अनन्तानुबंधी का उदय होता है। अतः अनन्तानुबंधी के कारण से मिथ्यात्व है, पर मिथ्यात्व के कारण से कषाय है ऐसा नहीं कहा जा सकता। तीसरे गुणस्थान में निर्णायक स्थिति नहीं होने से अज्ञान वाली अवस्था है। अज्ञान नहीं होते हुए भी मिथ्यात्व तो रहता है।

संसार में परिभ्रमण का कारण कषाय है। आसक्ति, तीव्र इच्छानुभूति, मिथ्यात्व, अज्ञान आदि संसारवर्धक कारकों से मुक्त होने का प्रयास करें। कहने के नाम पर मेहनत कर रहे हैं। किन्तु करणीय की ओर प्रयास के कदम जितने बढ़ने चाहिये, नहीं बढ़ रहे। ज्ञान का सार आचार एवं वीतरागता है, उसके लिये अपेक्षित समय व सोच नहीं है। वास्तव में कषायों के छूटने पर ही मुक्ति सम्भव है।-

नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे न तत्त्ववादे न च तर्कवादे।
न पक्षसेवा श्रयेणमुक्तिः, कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।।

दिगम्बर मान्यता वाले दिगम्बरता होने पर ही मुक्ति मानते हैं, तो श्वेताम्बर वस्त्रधारण से मुक्ति मानते हैं। तत्त्वज्ञ तत्त्व से व तर्कवादी तर्क से तथा सेवा करने वाले सेवा से मुक्ति मानते हैं। पर वास्तव में जो कषाय से मुक्त है, वही मुक्त है। अतः इस हार्द को समझकर एक जन्म के रोग के बजाय, भव-भव के रोग मिटाने के लिये कषाय के शमन को प्राथमिकता दें। जैसे- घर में आग लगने पर गूदड़े, जूते, कपड़े आदि पहले बाहर नहीं निकाले जाते अपितु सारभूत वस्तुएँ, चेतनरत्न पहले निकालने का लक्ष्य रहता है। ऐसा ही प्रयास कषायमुक्ति के लिये आवश्यक है।

कम पढ़ा, जघन्यज्ञान वाला भी श्रद्धा आचरण के साथ आगे बढ़ सकता है। क्योंकि उपादान स्वयं का ही काम आता है। अतः कर्म उदय के समय क्रोध नहीं करना, ऐसी सोच रखें। आत्मलक्ष्यी वृत्तिवाले बनें। अपने आपको देखना चालू कर दिया तो कषाय नहीं रहेगी। चिंतन के साथ सारभूत तत्त्व विद्वानों के द्वारा आपके समक्ष रखा जा रहा है। अच्छी से अच्छी बात सुनी किन्तु उसका जीवन निखारने में उपयोग करेंगे, तो सुनना सार्थक होगा।

द्वितीय दिवस (2 अक्टूबर 2016)

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनमोल वाणी का आधार लेकर 'कषाय

विजय' पर चिंतन चल रहा है। अनेक विद्वानों ने अपनी तरह से विवेचन का प्रयास किया। संक्षेप में सार यही है कि संसार का वर्धन करने वाला कषाय है। जन्म-मरण के मूल को सिंचन करने वाला कषाय है। उस कषाय की परिभाषा को समझें- कष+आय=कषाय। अर्थात् संसार की वृद्धि। जैनियों में ही इस कषाय शब्द का विशेष प्रयोग हुआ है। क्रोध-मान-माया-लोभ ही कषाय की आधारशिला है। कषाय के जितने भी भेद-प्रभेद हैं, उन्हें किसी न किसी रूप में हर पंथ वाले मानते हैं। कोई इन्हें पाप, वासना, विकार रूप में मान रहे हैं, तो कोई स्वभाव को मलिन करने वाले दुर्गुणों के रूप में ले रहे हैं तो कोई पतन की ओर ले जाने वाले मानकर कषाय की बात कहते हैं।

जहाँ कषाय है वहाँ ही संसार है। क्रोध-मान-माया-लोभ-राग-द्वेष ये ही संसार की वृद्धि कराने वाले हैं। जैन आगमों में सूक्ष्मता व गहराई से "रागो य दोसोवि य कम्मबीयं" पर विशद विवेचन उपलब्ध है। सम्यग्दृष्टि श्रावक व साधक सिद्ध बनने तक साधना के इन सूत्रों को उपादेय समझकर सजग व सावधानी से संसार में रहे हैं। भरत चक्रवर्ती संसार में किस तरह से रहे, दृष्टांत आपके ध्यान में है। छः खण्ड का अधिपति तो संभल गया। आप सुविज्ञों का भी हर समय, हर पल, हर क्षण यह चिंतन रहे कि मेरी भी कषाय कम हो।

जैसे भूख के अहसास के साथ भोजन की तलाश का सम्बन्ध है। वैसे ही दुःख-मुक्ति की अभिलाषा के साथ कषाय त्याग का सम्बन्ध है। इनकमटेक्स के कागज तैयार करने का काम आ गया तो वकील के पास जाओगे ही। कोई भी सामान्य सी समस्या आने पर तत्काल उपाय खोजते हैं, इसी तरह का प्रयास कषाय मुक्ति के लिये हो। समस्त रोगों का छुटकारा कषाय विजय में ही है। आपने चाहे कितनी ही सामायिक कर ली, मासक्षपण कर लिया, 20 वर्ष संयम पूर्ण कर लिया, पर चिन्तन करें- पूर्व की अपेक्षा कषाय कितनी कम हुई। जब मैं जन्मा था, तब क्या स्थिति थी और आज क्या है? जन्म से बालक मधुर होता है, पर ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जाता है, तो उसकी प्रवृत्तियाँ काषायिक हो जाती हैं। जबकि आम के पेड़ के फल को लें, जब वह लगता है, आता है उस अवस्था में खट्टा रहता है, पर वह परिपक्व अवस्था में ज्योंही आता है, मिठास से भरपूर होता रहता है। पर आदमी विपरीत क्यों हो रहा है। काश! यौवनावस्था वाले हर मानव की भी ऐसी सद्वृत्ति होती। आपका द्वेष, अहंकार, क्रोध, अनपढ़ व्यक्ति से कम होना चाहिये, क्योंकि आप सब ज्ञानी की श्रेणि में आते हैं। प्रायः देखा जाता है कि अनपढ़ों में इतना क्रोध नहीं होता, जबकि पढ़ा लिखा हर बात में कषाय रखता है। कषाय बढ़ने से ज्ञानी भी मूर्ख नहीं, महामूर्ख बन रहे हैं।

ज्ञान से युक्त तप की साधना शरीर व कर्म दोनों को हल्का कर कषाय घटाती है। जो

व्यक्ति कषाय घटाता है वही तपस्वी है, वही व्रती है, वही संयमी है। यदि कषाय नहीं घटी तो वह मात्र अज्ञान तप है। भेदज्ञान क्या? विभाव से स्वभाव में आना, अपने गुणों में आना, शरीर व आत्मा को पृथक् अनुभव करना भेद ज्ञान है। कष्ट शरीर को है, आत्मा को नहीं, ऐसी समझ आना ही भेदज्ञान है। स्वयं के बच्चों की गलत करतूतें सहन कर लेना, वैसी ही हरकतें पराये की हो तो विभाव में आ जाना कषाय का द्वार है। रेत गरम है या ठण्डी? ताप की अधिकता में गरम हो जाना, शीतकाल में ठण्डा रहना, बाहर की परिस्थिति के अनुसार स्थिति रहेगी ही। पानी तेरा रंग कैसा? जैसा रंग मिलाओ वैसा। पर भेदज्ञान का ज्ञाता मानव परिस्थिति के अनुसार नहीं बदलता। बाहर की अनुकूल-प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में वह मनःस्थिति से सम रहता है। लगभग तीन महीने से चल रहे प्रवचनों के संदर्भ में आपसे पूछा जाय, तो यही उत्तर मिलेगा- याद नहीं है। यदि कभी ऊँची या कठोर भाषा में बात कह दी हो, तो वह आज तक गाँठ बाँध कर रखी गई है। जो क्रिया कर रहे हो, उस समय यह भी ख्याल रखें कि इस कारण से कहीं मेरा अहंकार तो नहीं बढ़ रहा है। कषाय कम हो, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिये। बकरा काटने वाला ही कसाई नहीं, क्रोध-मान-माया-लोभ वाला भी कसाई है। क्योंकि वह आत्मगुणों की घात करने वाला कसाई है। कभी किसी के गुणों को देखकर कहते हैं- यह आदमी तो देवता है, यह सदैव प्रसन्नचित्त हँसमुख रहता है। यह तो सभी के साथ मित्र जैसा व्यवहार करता है। अरे! यह तो उपकारी है, यह सभी के उपकार मानता है। इस तरह के गुण ग्रहण करना भी संयम है। कभी साधु को असम्मान जनक भाषा में कहकर देखो- वह सहन करने में कितना सक्षम है? कई गृहस्थ संवत्सरी पर लोच करवाते हैं- मेरा कहना है पहले पाँच इन्द्रियों, चार कषायों का मुण्डन करिये इसके बाद दसवां मुण्डन 'लोच' है। कहने का आशय यही है- संयम के बाद तप है। मुण्डन कराया हुआ यदि पत्नी के साथ बैठता है तो पडिवाइ लगता है। उपहास न हो, ऐसे कारणों से बचने में विवेक रखें। विद्वानों से भी ऊँची-ऊँची बातें सुनने को मिली, पर मात्र सुनने से कुछ होने वाला नहीं है। जैसे- अमृत व संजीवनी की बात सुनने से आरोग्य होने वाला नहीं। चिकित्सा तो ग्रहण करने से ही होगी। ऐसे ही ऊँची व अच्छी बात सुनकर आचरण में लायें।

आप भी चिंतन करें, मैं भी चिंतन करूँ। हमें सोचना है- मैं व्यर्थ में राग-द्वेष कर कषाय तो नहीं बढ़ा रहा हूँ? कषाय को घटाकर सदाचरण करने पर ही कर्मों से मुक्ति मिलेगी। मेरा मित्र एवं शत्रु सबके प्रति समभाव रहे। सुभाषित वचन सुनने को मिल रहे हैं। आज से मन-वचन-काया से कषाय-विजय के लिये कमर कसकर प्रयास में जुट जाएँ, यही मंगल भावना है। ■

प्रवचनांश

नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (4)

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रशिष्या एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. प्रतिदिन 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा को सम्बोधित करते हैं। विभिन्न कक्षाओं में 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पद के सम्बन्ध में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन कर संघ कार्याध्यक्ष श्रावकरत्न श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई ने हमें उपलब्ध कराया है।-**सम्पादक**

52. जो अपनी हर इच्छा का विलय गुरु की इच्छा में कर चुके हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
53. जिनकी बुद्धि प्रभु एवं गुरु-आज्ञा के पालन में कभी तर्क खड़े नहीं करती, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
54. जिन्हें किसी से शिकायत, नाराजगी, अप्रसन्नता नहीं होती, मैत्री की महासाधना करते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
55. जिनका रहने का कोई स्थायी ठिकाना नहीं होता, जब जहाँ जैसा मिले रह लेते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
56. जो तपस्वी होते हैं, पारणा होगा या नहीं, क्या मिलेगा, कब मिलेगा यह सोचे बिना तपस्याएँ करते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
57. जिनके जीवन में पुद्गलों को लेकर कोई आदत नहीं होती, वस्तुओं का कोई आग्रह नहीं रहता, किसी भी चीज से बंधे हुए, जुड़े हुए नहीं रहते, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
58. जो भक्तों से घिरे रहते हैं पर फिर भी किसी को अपना नहीं मानते, जो भ्रम में नहीं वास्तविकता में जीते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
59. जिनकी हर जीव मात्र के प्रति उत्कृष्ट संवेदनशीलता होती है, अत: करुणा अनुकम्पा के मालिक होने से ''नमो लोए सव्व साहूणं''।
60. जो बारिश आने पर आहार नहीं लेते यावत् 'बारिश रुक जाये' इतना भी नहीं सोचते,

अतः "नमो लोए सव्वसाहूणं"।

61. घर-घर जाकर आहार के लिए जाना आसान नहीं है। गृहस्थी में सर्वसुलभता होते हुए भी संयम लेने के बाद घर-घर जाकर याचना करना आसान नहीं है। कोई सम्मान से देता है, कोई अपमान भी करता है। अभिमान के विजेता ही ऐसी जीवन शैली अपना सकते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
62. जिनकी निहार विधि भी जीव रक्षा से युक्त है, चाहे उसके लिये कितना भी श्रम करना पड़े, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
63. जिनका जीवन अन्दर-बाहर से अलग-अलग न होकर एकसा होता है, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
64. जो अपना प्रभाव कभी नहीं दिखाते, मात्र धर्म के प्रभाव को दिखाते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
65. जो संसार में रहकर भी सांसारिक जीवन की तमन्ना से रहित हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
66. जो कुछ न मिलने पर, अल्प मिलने पर या विपरीत मिलने पर भी संतुष्ट रहते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
67. जो त्यागे हुए गृहस्थ जीवन की कभी स्तुति भी नहीं करते, उसकी खबर तक नहीं लेते, पूर्णतः निर्मोही होकर जीते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
68. जिनका चलना-उठना-बैठना-सोना-श्वास लेना-श्वास छोड़ना यावत् पलक झपकाना भी कायगुप्ति से सधा हुआ होता है, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
69. जिनके पास एक रूपया भी नहीं, फिर भी जीवन में दीनता-हीनता की अनुभूति नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
70. जिनके जीवन का एक मिनिट भी आधुनिक साधनों (Computer, Mobile) के प्रयोग में नहीं बीतता, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
71. जो घूमना-फिरना-देखना-खेलना-मौजमस्ती करना इन सभी भावनाओं से परे हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
72. जिन्हें सात भय यावत् मारणान्तिक भय भी भयभीत नहीं करता, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
73. जो रास्ते पर चलते हैं पर वहाँ होने वाले दृश्यों से किंचित् भी नहीं जुड़ते, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"। **(क्रमशः)**

आचार्यश्री के दीक्षा-दिवस पर विशेष

जिनशासन गौरव गुरु हीरा

श्री ओमप्रकाश गुप्ता

इस माटी पर जिसने भी जन्म पाया है, वे सब अपने-अपने ढ़ंग, तौर-तरीके और अन्दाज में जी रहे हैं, पल रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं। इनमें कुछ दिव्य और भव्य आत्माएँ ऐसी भी हैं जो सामान्य मानव की तरह सिर्फ जी नहीं रही वरन् माटी के कण-कण को पावन कर उसका गौरव बढ़ा रही है। अपनी कठोर साधना-आराधना-संयम और तप के द्वारा बंजर दिलों में भी धर्म की फुलवारी खिलाने में निरन्तर व पूर्ण सजगता के साथ समर्पित व तत्परशील हैं। ऐसी ही महान्, यशस्वी, मनस्वी, तपस्वी आत्माओं में एक नाम बहुत आदर-सम्मान श्रद्धा के साथ स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन परम्परा के परम पूज्य चारित्र चूड़ामणि, त्याग-वैराग्य की प्रतिमूर्ति, अध्यात्म योगी, जग उद्धारक, युग द्रष्टा आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी महाराज सा का बहुत गर्व व हर्ष के साथ लिया जा सकता है। रत्नवंशीय आचार्य पद के पच्चीस वर्ष जिन गौरवपूर्ण व अत्यन्त प्रेरणादायी उपलब्धियों के साथ आपने पूर्ण किए हैं, वह सिर्फ जैन जगत् में ही नहीं वरन् पूरे देश में एक अद्भुत व अनूठी मिसाल है। आपश्री के भिन्न-भिन्न राज्यों के बड़े-बड़े शहरों व छोटे-छोटे कस्बों, गाँवों, ढाणियों में जहाँ-जहाँ भी पावन चरण कमल पहुँचे वहाँ लाखों-लाखों लोगों के जीवन में खासकर व्यसन-मुक्ति का जो अलख जगाया-संकल्प कराए, यह उसी का सुपरिणाम है कि अब सम्पूर्ण भारत के बहुत बड़ी संख्या में भक्त उन्हें अपना तारणहार मानने लगे हैं। जैसा नाम 'हीरा' वैसा ही उनका विराट् व करुणा से ओतप्रोत व्यक्तित्व जन-जन में सुखद अनुभूति देता आया है। जो भी उनके निकट एक बार पहुँच गया, फिर उनके प्रति अन्तर की गहराई से श्रद्धाशील व समर्पित हो गया। वीतराग धर्म के संस्कारों को पल्लवित व सुशोभित करने में आपश्री ने अपने सौम्य, सरल, सहज, मधुर व्यवहार के द्वारा जो सुगन्ध चहुँओर फैलाई है, उसी का यह सुफल है कि इस पंचमकाल में भी धर्म की ध्वजा ऊँची होकर शान से लहरा रही है। सबसे खास व उल्लेखनीय बात यह है कि सिर्फ जैन ही नहीं बल्कि बहुत बड़ी संख्या में जैनेतर बन्धु भी उनका सान्निध्य पाकर अपने को धन्य-धन्य समझते हैं और स्वाध्याय-प्रेमी बन गए। उसका यह भी सुपरिणाम है कि सुप्त-लुप्त होती इंसानियत व जैनत्व हरा-भरा हो रहा है। शाकाहार, व्यसनमुक्ति, अहिंसा, परोपकार की बेल निरन्तर फैलती जा रही है। साथ ही दूसरों की पीड़ा को अनुभव करने

वाले हृदय एवं मदद व सहकार के हाथ आचार्य श्री की कृपा से निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। मिले हुए का सदुपयोग करने वालों का काफिला निरन्तर प्रगति पर है। देश भर में आचार्यश्री की मंगलमयी प्रेरणा से सेवा, जीव-दया, अहिंसा, व्यसन-मुक्ति, शाकाहार और धर्म के संस्कारों को पल्लवित करने के अनेक जन उपयोगी व धार्मिक संस्थाएँ और कार्यक्रम निरन्तर गतिशील व उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहे हैं। पाप के अन्धकार में सद्गुणों की रोशनी को मशाल बनाने में पूज्य आचार्य भगवन्त का कोई मुकाबला नहीं। महज एक इशारे पर लाखों-करोड़ों का गुप्त व निष्काम भाव से दान देने वाले भी उनका सामीप्य पाने के लिए तरसते हैं। हालांकि संसार को साक्षात् महावीर, बुद्ध, जीसस, राम, गुरुनानक जैसे महापुरुष भी ठीक नहीं कर पाए, परन्तु खुशी व फख्र की बात यह है कि भारत की पावन धरा पर अभी भी गुरु 'हीरा' जैसे युगद्रष्टा व युगमनीषी विद्यमान हैं जिनकी अनूठी साधना-उपासना-आराधना से उनकी सौरभ की महक जन-जन में सर्व कल्याण व सर्व हितकारी की भावना के साथ प्रेरित कर रही है।

गुणों की खान गुरु हीरा रत्नवंशीय जैन साधु परम्परा के अष्टम पट्टधर हैं। वे देश के सुविख्यात, महान् त्यागी, प्रज्ञा प्रतिभा के धनी और धीर-गम्भीर-शान्तचित्त-करुणानिधान परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी महाराज के परम आज्ञाकारी शिष्य हैं। अपने लाडले शिष्य 'हीरा' की अनेक विशिष्ट खूबियों को एक कुशल जौहरी की तरह निकट से देखकर व परखकर ही वे अपना पद उन्हें सौंप कर संसार से मोक्षपुरी के लिए विदा हुए। अपने आचार्य श्री द्वारा सौंपी गई संघ की बागडोर को आपश्री ने जिन ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, वह निःसन्देह बहुत प्रेरक, अद्वितीय व अभूतपूर्व है। आपश्री के यशस्वी आचार्यत्वकाल में अब तक 84 दीक्षाएँ हो चुकीं, जिनमें 17 संत व 67 महासतियों ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर इस नश्वर व भौतिक संसार के जंजाल से मुक्त होने की तरफ अपने-अपने साहसिक कदम बढ़ाए हैं। आपने पूज्य आचार्यश्री के चरणों के पीछे-पीछे उनके सारभूत व सर्व कल्याणकारी सन्देशों को फैलाने व समझाने में जुटे साधु-संत-साध्वियों का यह वृहद् काफिला हर वर्ष करुणा, अहिंसा, शाकाहार, व्यसन-मुक्ति व वीतरागता की ऐतिहासिक धर्म पताका को लहराने में जो कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वह भविष्य में एक अनूठा स्वर्णिम इतिहास बनेगा। अपने और अपने परिवार के लिए तो सारा संसार जीता व मरता आया है, परन्तु वे कोई-कोई ही माँ के अपूर्व साहसी लाल होते हैं जो सिर्फ अपने लिए नहीं, छह काय के मूक जीवों तक की समान भावना से रक्षा के लिए अखण्ड साधना में समर्पित व तत्परशील हैं। इस आपाधापी व चकाचौंध युक्त युग में भी अपने भीषणतम त्याग, तप, संयम, आचार-विचार-व्यवहार

की उच्चतम कसौटी पर खरा सिद्ध होने के साथ वीतरागता की हित-मित-मधुर वचनों के माध्यम से लाखों-लाखों लोगों तक जो गूंज गुंजायमान की जा रही है, वह हताश-निराश-परेशान व तनाव भरी जिन्दगी में एक प्यासे को अमृत गंगा जैसी बूंदों के समान तृप्ति प्रदान कर रही है।

पूज्य आचार्य भगवन्त गुरु हीरा अब सिर्फ अपने संघ अथवा जैन जगत् के ही गौरव नहीं रहे वरन् वे अब सम्पूर्ण राष्ट्र के महानायक बन चुके हैं। मेरा मानना है कि वे लोग वाकई में बहुत पुण्यशाली व सौभाग्य के धनी हैं जिन्हें ऐसी तपोनिष्ठ, धर्म मर्मज्ञ, आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करने वाले तत्त्व मनीषी व कथनी-करनी की एकरूपता के साक्षात् प्रतीक आचार्य भगवन्त का सान्निध्य-सामीप्य और चरण रज नसीब हो पाती है। जहाँ सारा संसार माया के पीछे दौड़ रहा है और उधर उस माया को ठुकराने वाले कंचन-कामिनी के सम्पूर्ण त्यागी 'हीरा' और उनका धर्म संघ अपनी बुलन्दियों के उस उच्चतम शिखर को छू रहे हैं जिसे ज्ञानियों व तीर्थंकर परमात्माओं ने प्रस्तुत किया है। मेरा यह सौभाग्य है कि बहुत वर्ष पूर्व मुझे भी आचार्य भगवन्त गुरु हीरा के दर्शन एवं प्रवचन-श्रवण करने का लाभ मिला। मोक्ष के ऐसे परम राही, जिनशासन के गौरव और भावी भगवान के चरणों में मन-वचन-काया तीनों योगों की एकरूपता व असीम आस्था के साथ सश्रद्धा विनयपूर्वक शत-शत नमन। हे महानायक! आपका धर्म संघ सम्पूर्ण संसार में असत्य व पाप के अंधकार को दूर करने में और भी तीव्रता से यशस्वी कीर्तिमान कायम कर सके, ऐसी अन्तर्मन की प्रार्थना व अरदास के साथ चरण रजका एक दास।

-सम्पादक, राजस्थान टाइम्स, अलवर (राज.)

बिन माँगे सब मिलता है

श्रीमती सुरेखा-नेमीचन्द नाहर

चरण रखते हैं गुरु जहाँ,
वहाँ पुण्य का सैलाब आता है।
पाप कटते हैं गुरु दर्शन से,
चरणों में मस्तक झुक जाता है।
कुछ मांगो ना अपने गुरुवर से,
बिन माँगे ही सब मिलता है।
गुरु की मुस्कान को देखकर हम,
सबका मन खिल उठता है।।

-जयपुर (राज.), मो. 094133-34031

आरोग्य

जीवनशैली और आरोग्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

(अगस्त अंक से आगे)

24. उन लोगों का समय आनन्द से व्यतीत हो रहा है, जिन्होंने हानिकर पदार्थ, कड़ाई में तली चीजें, दवाइयाँ, अचार, मुरब्बे, तेज मसाले, मैदा, मिठाई आदि व बासी चीजें खाना बिल्कुल छोड़ दिया है।
25. मैदे की रोटी, मैदे की चीजें व हलुआ, पपड़ी आदि गरिष्ठ भोजन खाकर लोग अपने शरीर के साथ घोर अन्याय कर रहे हैं, क्योंकि ये पदार्थ अत्यन्त रोगकारक हैं।
26. ताजा अन्न गुणकारी व आरोग्यदायी होता है। लोग उस अन्न को सुखाकर, बारीक पीसकर, छानकर, सेककर कई चीजें मिलाकर खाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए उतना पौष्टिक नहीं होता।
27. गलत खानपान, नींद रोकना, घोर परिश्रम करके भी आराम न करना, तम्बाखू, शराब व दवा लेना व अधिक विषय भोग करना; ये सब हमारे शरीर, प्राण व दीर्घायु का नाश करने वाले हैं।
28. स्वाभाविक सात्त्विक आहार पर रहते हुए आपको किसी भी नशे या दवा की जरूरत ही नहीं पड़ेगी; न आप अधिक कामी, विलासप्रिय बन सकेंगे, और न नींद आपके लिए इतनी आवश्यक या कष्टदायक बनेगी।
29. भय से पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है और शरीर को बड़ा धक्का पहुँचता है, ऐसा अनेक प्रयोगों व प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है। इसलिये भय व चिंता आदि विकारों से सदा बचना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब हमारा आहार स्वाभाविक हो, हृदय बलवान व विकाररहित हो और शुद्ध हो।
30. चिन्ता करने वाले लोग खराब खानपान करते हैं, नशा आदि करते हैं और उनका शरीर अत्यन्त मलग्रसित व जीर्ण हो जाता है।
31. थोड़े-से आरोग्य विषयक ज्ञान, थोड़े भोजन सुधार द्वारा सभी रोगों से हम बचे रह सकते हैं। पर हम इस ओर सोए हुए हैं। धनी लोग दवाखाने खोलकर मुफ्त दवा बाँटना ही परोपकार समझते हैं। पर उन्हें यह नहीं मालूम कि ऐसा करके वे संसार को और अधिक गुलाम व रोगी बना रहे हैं। जनता दवा खाने के अलावा आरोग्य-रक्षा के लिए कुछ नहीं करती।

32. लोग रात-दिन कमाई और गृहस्थ के धन्धों में फँसे रहते हैं, पर आरोग्य को बनाये रखने के उपाय नहीं करते। (क्रमशः)

-राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (जोधपुर)
इंटरनेशनलज लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004

जिनवाणी का हीरक वर्ष में प्रवेश

जिनवाणी पत्रिका के पाठकों, लेखकों, हितैषियों एवं सर्व-साधारण को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रमोद का अनुभव हो रहा है कि जिनवाणी पत्रिका जनवरी 2017 से 75 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है। भोपालगढ़ के श्री जैन रत्न विद्यालय से जनवरी 1943 से प्रारम्भ हुई यह पत्रिका जोधपुर होती हुई सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित होने लगी। पत्रिका के प्रथम सम्पादक डॉ. फूलचन्द जैन सारंग थे। श्री चम्पालाल कर्णावट, श्री चाँदमल कर्णावट आदि का भी सम्पादन में योगदान रहा। सन् 1967 से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रख्यात विद्वान् प्रो. नरेन्द्र भानावत के द्वारा इस पत्रिका का अक्टूबर 1993 तक कुशल सम्पादन होता रहा। उनके पश्चात् कुछ माह डॉ. शान्ता भानावत एवं डॉ. संजीव भानावत ने सम्पादन कार्य किया। अक्टूबर 1994 से इस पत्रिका का सम्पादन प्रो. धर्मचन्द जैन कर रहे हैं।

जैन धर्म-दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की वाहिका यह पत्रिका आगमवाणी, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, आध्यात्मिक-नैतिक आलेख, युवा स्तम्भ, नारी-स्तम्भ, बाल-स्तम्भ, जिज्ञासा-समाधान, जीवन-व्यवहार, विचार, प्रेरक प्रसंग, साहित्य-समीक्षा आदि विभिन्न स्तम्भों के साथ पाठकों से जुड़ी हुई है। 75 वां वर्ष प्रारम्भ होने के अवसर पर निम्नांकित निर्णय लिए गए हैं-

1. जिनवाणी के प्राचीन अंकों से चयनित श्रेष्ठ लेखों का विषयवार प्रकाशन किया जायेगा।
2. जिनवाणी का एक अंक प्राचीन लेखों से सज्जित होगा तो अन्य अंक नवीन आलेखों से युक्त होगा। इस तरह यह क्रम वर्ष भर चलेगा।
3. जिनवाणी पत्रिका के आकार, कागजादि में गुणवत्ता का अभिवर्द्धन होगा।
4. जिनवाणी में समाचारों का स्वरूप संक्षिप्त किया जाएगा।
5. जिनवाणी के पाठकों का सर्वेक्षण कर जिनवाणी के सम्बन्ध में उनके विचार जाने जायेंगे, जिसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित रहेगा।

इस 75 वें वर्ष में जिनवाणी परिवार को और क्या करना चाहिए, इस हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। *-विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर*

गीत

जब कोई नहीं आता

श्री अभिषेक जैन

जब कोई नहीं आता, गुरु हीरा आते हैं-2।
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।टेर।।

मैं चाहे कहीं भी हूँ, मन आप पे रुकता है,
मेरा ध्यान कहीं भी हो, दिल आपसे जुड़ता है।
गुणगान आपका ही, मेरे कष्ट मिटाते हैं,
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।1।।

माँ-बाप की सेवा करना, यह आपने बतलाया,
सब व्यसनों से मुक्ति, भी आपने सिखलाया।
असली सुख से मुझको, परिचय करवाते हैं,
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।2।।

न जाने कहाँ से आया, कहाँ पर जाऊँगा,
करता रहा जो भी यहाँ, फल उसका पाऊँगा।
नहीं ज्ञान मुझे कुछ भी, सब आप सिखाते हैं,
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।3।।

प्रभु आपकी वाणी से, जीवन को राह मिले,
घर-घर में खुशियाँ हो, जिनवाणी बिगुल बजे।
चाहे मुरझाये हो फूल, वो भी खिल जाते हैं,
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।4।।

जब कोई नहीं आता, गुरु हीरा आते हैं-2।
मेरे अंधेरे जीवन में, सवेरा लाते हैं-2।।

-गोरेगांव, मुम्बई (महा.)

शोधालेख

दशवैकालिक सूत्र : एक परिचय

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

वीतराग पथ के पथिक साधु-साध्वी सदा साधना में उद्यत रहें, इसका उत्कृष्ट सम्प्रेरक है- 'दशवैकालिकसूत्र'। यह साधु को पंच महाव्रत, पंच समिति, त्रिगुप्ति, रत्नत्रय, विनययुक्त व्यवहार एवं आत्म-विजय के मार्ग में सदैव आगे बढ़ने में प्रकाशपुंज का कार्य करता है। इसको पढ़कर जहाँ साधु-साध्वी अपने विचार एवं आचार को परिमार्जित कर सकते हैं, वहाँ श्रावक-श्राविका इसे पढ़कर उनके निर्मल निरतिचार आचार-पालन में सहायक बन सकते हैं। यह आगम विषयों से विरक्ति, कामनाओं के निराकरण, संयम में सजगता, गुरुजनों के प्रति आदर एवं वाणी में संयम का पाठ पढ़ाता है।

दशवैकालिकसूत्र अंगबाह्य आगम है। आगमों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है- 1. अंग आगम एवं 2. अंगबाह्य आगम। तीर्थंकरों की अर्थरूप वाणी के आधार पर गणधर सूत्ररूप में अंग आगम की रचना करते हैं। गणधर कृत आगमों में आचारांग आदि बारह अंग आगम हैं, जिनमें से सम्प्रति ग्यारह अंग आगम उपलब्ध हैं। अंग बाह्य आगमों की रचना तीर्थंकरों की वाणी एवं पूर्वो के आधार पर स्थविर आचार्यों द्वारा की जाती है। ऐसे अंगबाह्य आगमों को अनेक माना गया है। इन आगमों का आगे चलकर उपांग सूत्र, मूल सूत्र, छेद सूत्र आदि में विभाजन हुआ है। दशवैकालिक की गणना मूल सूत्रों में होती है।

स्थविर आचार्य कृत आगमों में दशवैकालिक अत्यन्त प्राचीन आगम है, जिसका उल्लेख नंदीसूत्र में प्रदत्त आगम नामावली में उत्कालिक आगमों के अन्तर्गत प्रथम क्रम पर हुआ है। दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों में भी दशवैकालिक का उल्लेख हुआ है।[1] इसकी रचना चतुर्दश पूर्वधर आर्य शय्यम्भव भट्ट ने अल्पायुष्यक पुत्रशिष्य मनक को श्रमणाचार का संक्षेप में बोध कराने के लिए की थी। यह संक्षिप्त एवं सारगर्भित आगम इतना व्यवस्थित एवं उपयोगी बन गया कि आज भी इस आगम को श्रमणाचार की सम्यक् जानकारी के लिए प्रथम स्थान पर रखा जाता है। श्वेताम्बर परम्परा में दीक्षा के पूर्व इस आगम को कंठस्थ कराने पर जोर दिया जाता है।

दशवैकालिक आगम के प्राकृत भाषा में दो नाम प्राप्त होते हैं- दसकालियं एवं दसवेयालियं। यह आगम दस अध्ययनों से सम्पन्न है। अतः इसका नाम 'दसकालियं'

अथवा 'दसकालिक' रखा गया होगा। निर्युक्तिकार भद्रबाहु ने 'दसकालियं' शब्द का प्रयोग किया है।[2] इस आगम की रचना स्वतंत्र रूप से नहीं हुई है, अपितु इसका पूर्वो से निर्यूहण किया गया है। यह निर्यूहण का कार्य विकाल अर्थात् अपराह्न में पूर्ण हुआ था, इसलिए सम्भवत: इसका नाम 'दसवेयालियं' अथवा 'दशवैकालिक' हो गया। ऐसा स्पष्टीकरण हरिभद्रसूरि ने बृहद्वृत्ति में किया है।[3] इस आगम में कालान्तर में दो चूलिकाएँ योजित की गई, जिनसे इस आगम का महत्त्व और भी बढ़ गया।

दृष्टिवाद नामक एक बारहवें अंग आगम के पांच विभाग स्वीकार किए गये हैं- 1. सूत्र, 2. परिकर्म, 3. पूर्वगत, 4. अनुयोग एवं 5. चूलिका। पूर्व चौदह प्रकार के माने गये हैं- 1. उत्पाद पूर्व, 2. अग्रायणीय, 3. वीर्यप्रवाद, 4. अस्तिनास्ति प्रवाद, 5. ज्ञान प्रवाद, 6. सत्यप्रवाद, 7. आत्मप्रवाद, 8. कर्मप्रवाद, 9. प्रत्याख्यान पद, 10. विद्यानुवाद, 11. अवंध्य, 12. प्राणायु, 13. क्रियाविशाल एवं 14. लोकबिन्दुसार पूर्व। दशवैकालिक आगम का निर्यूहण इनमें से किन-किन पूर्वो से हुआ है, इसका उल्लेख दशवैकालिक निर्युक्ति में करते हुए आचार्य भद्रबाहु ने कहा है-

आयप्पवायपुव्वा निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती।
कम्मप्पवायपुव्वा पिंडस्स उ एसणा तिविहा।।
सच्चप्पवायपुव्वा निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ।
अवसेसा निज्जूढा नवमस्स उ तइयवत्थुओ।।
बीओऽवि अ आएसो गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ।
एअं किर निज्जूढं मणगस्स अणुग्गहट्ठाए।।

-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा 16-18

दशवैकालिक का चतुर्थ अध्ययन 'धर्मप्रज्ञप्ति' (षड् जीवनिका) आत्मप्रवाद पूर्व से, पंचम अध्ययन 'पिण्डैषणा' कर्मप्रवाद पूर्व से, 'वाक्यशुद्धि' नामक सप्तम अध्ययन सत्यप्रवाद पूर्व से निर्यूहण किया गया है। शेष अध्ययन नवम प्रत्याख्यान पूर्व की तृतीय वस्तु से उद्धृत किये गये हैं। निर्यूहण किये गये अन्य आगम हैं- आचारचूला, निशीथ, दशाश्रुतस्कन्ध, व्यवहारसूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र का परीषह नामक द्वितीय अध्ययन।

दशवैकालिक की रचना आचारांगसूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र के पश्चात् हुई है, इसकी पुष्टि दशवैकालिक की विषयवस्तु से होती है। आचारांगसूत्र में षड्कायिक जीवों का वर्णन प्राप्त होता है, जिनकी रक्षा के लिए दशवैकालिकसूत्र में विशद एवं विस्तृत प्रतिपादन हुआ है। आचारांग के अनेक वाक्य भी दशवैकालिक में मामूली भेद के साथ प्रयुक्त हुए हैं, यथा- 'जाए सद्धाए निक्खंते तमेव अणुपालेज्जा।' (आचारांग 1.1.3) का उसी भाव

के साथ दशवैकालिकसूत्र की निम्नांकित गाथा में प्रयोग हुआ है-

जाइ सद्धाइ णिक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसम्मए।।

-दशवैकालिकसूत्र, 8.61

जिस श्रद्धा से गृहस्थ जीवन का त्याग कर उत्तम संयम पर्याय ग्रहण की है, उसका उसी श्रद्धा से पालन करना चाहिए।

उत्तराध्ययनसूत्र के रथनेमीय अध्ययन की कतिपय गाथाएँ दशवैकालिकसूत्र के द्वितीय अध्ययन में ज्यों की त्यों आयी हैं। 'धिरत्थु तेऽजसोकामी.....', 'अहं च भोगरायस्स.....' 'जइ तं काहिसि.....', 'तीसे सो वयणं सोच्चा.....' गाथाएँ उत्तराध्ययनसूत्र के 22 वें रथनेमीय अध्ययन से ली गई हैं, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि उत्तराध्ययन में रथनेमी एवं राजुल का पूरा संवाद है, अत: उसकी कुछ गाथाएँ संयम में स्थिरता का सन्देश देने के लिए दशवैकालिक में गृहीत होना सम्भव है। विनय का प्रतिपादन उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन में भी हुआ है तथा दशवैकालिकसूत्र में भी विनयसमाधि के रूप में नौवें अध्ययन में हुआ है, किन्तु दोनों की गाथाओं में एवं प्रस्तुति में भिन्नता है। दशवैकालिक में धर्म का मूल विनय को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है- 'एवं धम्मस्स विणओ मूलं।' (दशवैकालिक सूत्र, 9.2.2)

दशवैकालिक नामक मूल आगम में न केवल श्रमणाचार का निरूपण हुआ है, अपितु इसमें जीवन- निर्माण के अनेक सूत्र उपलब्ध होते हैं। इसका अध्ययन जहाँ साधु-साध्वियों के आचार-विचार को सुदृढ़ एवं परिष्कृत करता है, वहाँ श्रावकों द्वारा इसका अध्ययन किये जाने पर वे साधु-साध्वियों के सम्यक् आचार पालन में उत्तम सहयोगी बन सकते हैं। कई बार साधु-साध्वियों को अपने आचार-पालन में इसलिए कठिनाइओं का सामना करना पड़ता है कि श्रावकों को साधु के आवश्यक आचार की जानकारी का अभाव रहता है। यही नहीं, श्रावक-श्राविका इस आगम का अध्ययन कर अपने जीवन को संयमी, व्रती एवं बन्धन रहित बना सकते हैं।

दशवैकालिक वस्तुत: का शब्दश: पठन एवं बोध करने पर अनेक ऐसी बारीकियों का बोध होता है, जिससे अपने जीवन को निर्दोष एवं साधनाशील बनाने की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है। हम दशवैकालिक में प्राप्त विषयवस्तु को निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर भी समझ सकते हैं- 1. पंच महाव्रत, 2. अहिंसा एवं यतना, 3. आत्मजय, 4. पाँच समिति, 5. तीन गुप्ति, 6. ज्ञान का महत्त्व, 7. नवतत्त्व, 8. वाणी का सम्यक् प्रयोग, 9. विनय समाधि एवं 10. साधक के लिए सावधानियाँ।

1. पंचमहाव्रत

पंच महाव्रतों एवं रात्रि भोजन विरमण व्रत का एक साथ उल्लेख स्पष्टत: दशवैकालिक सूत्र में प्राप्त होता है। यहाँ महाव्रत के पाठों का उल्लेख इतना व्यवस्थित है कि इनका उपयोग साधुदीक्षा अंगीकार करते समय किया जाता है। ऐसा व्यवस्थित स्वरूप आचारांग सूत्र एवं अन्य आगमों में भी प्राप्त नहीं होता है। इस दृष्टि से इस आगम की 'मूल' संज्ञा उपयुक्त ही है। आचारांगसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में पांच महाव्रतों की पाँच-पाँच भावनाओं का उल्लेख हुआ है। आचारांग का प्रथम श्रुतस्कन्ध साधक को अहिंसा, सत्य, अप्रमत्तता, अपरिग्रह आदि के साथ जीवन जीने की उत्कृष्ट प्रेरणा करता है। दशवैकालिक में रात्रिभोजन के साथ पंच महाव्रतों का जो निरूपण किया गया है वह साधकों के लिए प्रतिज्ञा पाठ भी है और मार्ग निर्देशिका भी।

2. अहिंसा एवं यतना

आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन में जिस प्रकार पृथ्वीकायिक आदि जीवों में चेतना का प्रतिपादन करते हुए इनकी हिंसा न करने की शिक्षा दी गई है, उसी प्रकार दशवैकालिक सूत्र में षट्कायिक जीवों का प्रतिपादन करते हुए उनकी हिंसा से बचने तथा रक्षा करने का संदेश दिया गया है। पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों के प्रकारों या भेदों का भी निरूपण किया गया है तथा इन्हें पीड़ित करने तथा किसी भी प्रकार से इनकी हिंसा करने को त्याज्य प्रतिपादित किया गया है। पृथ्वीकायिक आदि जीवों की हिंसा अनेक प्रकार से हो सकती है। उनका भी संकेत प्रस्तुत आगम में प्राप्त होता है। हिंसा से बचने के लिए यतना का विधान किया गया है। सभी जीव जीना चाहते हैं, सबको जीवन प्रिय है, अत: किसी की हिंसा नहीं की जानी चाहिए। ऐसा कथन आचारांग सूत्र में प्राप्त होता है[4], जिसका कथन दशवैकालिक सूत्र की निम्नांकित गाथा में भी हुआ है-

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोरं, णिग्गंथा वज्जयंति णं।।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 6, गाथा 11

सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। इसलिए प्राणिवध को त्याज्य समझकर निर्ग्रंथ उसका वर्जन करते हैं। सभी प्राणियों के प्रति संयम रखने रूप अहिंसा को निपुण कहा गया है- अहिंसा णिउणा दिट्ठा। (दशवैकालिक, 6.9) सभी प्राणियों को आत्मवद् समझकर जो उनके साथ सम्यक् प्रकार से व्यवहार करता है वह आस्रव के द्वारों को रोककर दान्त बनता है तथा तत्सम्बन्धी पापकर्म का बन्धन नहीं करता है-

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधइ।।

-दशवैकालिक सूत्र, 4.9

सजगतापूर्वक क्रिया करने पर पापकर्म का बन्ध नहीं होता तथा जीवों की रक्षा भी होती है। अयतना अथवा असजगता पूर्वक चलने, बैठने खड़े होने, शयन करने, आहार करने, बोलने आदि में प्राणियों की हिंसा होती है तथा पाप कर्म का बन्ध होता है।

सजगता या यतनापूर्वक कृत क्रियाएँ पापबंधन की कारण नहीं होती हैं-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बन्धइ।।

-दशवैकालिक सूत्र, 4.8

जो यतना से चलता है, यतना से खड़ा रहता है, यतना से बैठता है, यतना से शयन करता है, यतना से भोजन एवं भाषण करता है वह पापकर्म का बन्धन नहीं करता है।

3. आत्मजय

मुनि जीवन आत्म-विजय का पथ है। इसमें अपने क्रोधादि विकारों पर विजय प्राप्त करनी होती है। दशवैकालिक सूत्र में इन विकारों से होने वाली हानियों एवं विजय प्राप्त करने के उपायों का कथन किया गया है। अष्टम अध्ययन में कहा गया है कि क्रोध, मान, माया एवं लोभ ये चारों कषाय पाप का वर्धन करते हैं। इसलिए अपना हित चाहता हुआ साधक इन चारों कषायों का वमन करे। क्रोध से प्रीति का नाश होता है, मान से विनय गुण नष्ट होता है। मायावी व्यवहार से मित्रता नष्ट होती है तथा लोभ तो सर्वविनाशक है, अत: इन पर विजय आवश्यक है। इन पर विजय के उपाय का प्रतिपादन करते हुए कहा गया-

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।

-दशवैकालिक सूत्र,8.29

उपशम अर्थात् क्षमाभाव से क्रोध को, मृदुता से मान को, सरलता से माया को तथा सन्तोष से लोभ को जीता जा सकता है।

यदि क्रोधादि कषायों को निगृहीत न किया जाए तो ये पुनर्भव के मूल का सिंचन करते हैं। तप एवं आचार की आराधना इस लोक एवं परलोक में वैषयिक सुखों की प्राप्ति के लिए नहीं की जानी चाहिए। न प्रशंसा एवं कीर्ति के लिए उनका आराधन करना चाहिए, किन्तु मात्र कर्म-निर्जरा के लिए तप एवं आचार का आराधन होना चाहिए।[5]

साधु समस्त कामनाओं पर विजय प्राप्त करता है। जो कामनाओं का निवारण नहीं

करता वह संकल्पों के वशीभूत होकर पदे-पदे विषाद को प्राप्त होता है- पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ। (दशवैकालिक, 2.1)

4. पाँच समिति

श्रमण के लिए जिस प्रकार पंच महाव्रत आवश्यक हैं उसी प्रकार पाँच समिति एवं तीन गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन माता का परिपालन भी आवश्यक है। समिति स्मृतिपूर्वक अर्थात् सजगतापूर्वक चलने, बोलने, आहार ग्रहण करने, वस्तुओं को उठाने-रखने तथा मलमूत्रादि को परठने की निर्दोष विधि है। इसे यतना शब्द से भी कहा गया है। दशवैकालिक में सीधे तौर पर पाँच समितियों का कथन नहीं हुआ है, किन्तु ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण एवं परिष्ठापनिका इन पाँचों समितियों के सम्बन्ध में सतर्कता हेतु प्रेरणा मिलती है। एषणा समिति का पाँचवें अध्ययन में तथा भाषा समिति का सातवें अध्ययन में विस्तार से निरूपण हुआ है। ईर्या समिति के सम्बन्ध में पाँचवें अध्ययन में कहा गया है-

पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे।
वज्जंतो बीयहरियाइं, पाणे य दगमट्टियं।।

-दशवैकालिकसूत्र, 5.1.3

साधु चार हाथ भूमि देखकर चले तथा बीज, वनस्पति, द्वीन्द्रियादि प्राणियों, जल तथा पृथ्वीकायिक का वर्जन करता हुआ चले। चलते समय साधु को चाहिए कि वह अनुद्विग्न और स्थिर चित्त से गमन करे- चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा। (दशवैकालिक, 5.2) ऊबड़-खाबड़ एवं विषममार्ग में गिरने एवं जीवों की हिंसा की सम्भावना रहती है, अत: ऐसे मार्ग का परिहार करके चलना चाहिए।

भाषा समिति में वचन-प्रयोग की सावधानी रखी जाती है, जिसकी चर्चा आगे 'वाणी का सम्यक् प्रयोग' शीर्षक से की जा रही है। एषणा समिति का निरूपण करते हुए कहा गया है कि अकल्प्य आहारादि को साधु ग्रहण न करे। उचित समय पर भिक्षा हेतु जाए तथा समय पर लौट आए। साधु को प्रत्येक क्रिया समय पर करनी चाहिए- काले कालं समायरे। (दशवैकालिक, 5.2.4)। यदि समय पर गोचरी हेतु जाने पर भी आहार-प्राप्ति न हो तो खिन्न न हो, अपितु तप का लाभ ले। साधु सचित्त आहार को ग्रहण नहीं करते, एषणा के लिए निकलने पर वे अत्यन्त सजगता एवं सावधानी के साथ गृहस्थ के घरों से माधुकरी वृत्ति से आहार लाते हैं एवं बिना किसी निन्दा-प्रशंसा के उसे ग्रहण करते हैं, किन्तु किसी याचक या गृहस्थ को उसमें से कुछ भी अंश प्रदान नहीं करते हैं। साधु के लिए तृतीय अध्ययन में 52 अनाचीर्ण (अनाचरणीय) कार्य बताए गए हैं, उनमें से कई एषणा समिति से

सम्बद्ध हैं। साधु अदीन भाव से भिक्षा की याचना करता है, वह मात्रा को जानता है कि उन्हें कितने आहार की आवश्यकता है तथा भोजन में मूर्च्छाभाव नहीं रखता। श्रावक को चाहिए कि वह साधु-साध्वी को आहार देते समय उच्च भावना रखे तथा निर्दोषतापूर्वक आहार बहरावे। इसीलिए श्रावक को भी श्रमणाचार की जानकारी होना अच्छा रहता है। चतुर्थ आदान-निक्षेपण समिति के सम्बन्ध में भी दशवैकालिकसूत्र में वर्णन प्राप्त होता है। चतुर्थ अध्ययन में त्रसकाय की हिंसा से बचने के लिए कहा गया है कि भिक्ष-भिक्षुणी को सदैव, सोते या जागते समय भी कीट, पतंग, कुंथु, पिपीलिका की रक्षा करनी चाहिए तथा अपने हाथ, पैर, भुजा, वक्ष आदि अंगों पर अथवा वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण आदि उपधियों पर इन जीवों के आने पर उनकी यतनापूर्वक रक्षा करनी चाहिए।[6] साधु साध्वी वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादप्रोञ्छन आदि से अपने शरीर पर हवा नहीं करते।[7]

परिष्ठापनिका समिति के सम्बन्ध में पाँचवें अध्ययन में कहा गया है-

एगंतमवक्कमित्ता, अचित्ते पडिलेहिया।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे।।

-दशवैकालिकसूत्र, 5.1.81

एकान्त में जाकर, अचित्त भूमि का प्रतिलेखन कर यतनापूर्वक बचे हुए जल आदि को परठे और परठ कर प्रतिक्रमण करे। आठवें अध्ययन में कहा गया है-

उच्चारं पासवणं खेलं, सिंघाणजल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए।।

-दशवैकालिक सूत्र, 8.18

संयमी साधु मल-मूत्र, कफ, नाक आदि मैल को अचित्त भूमि देखकर परठे।

इस प्रकार दशवैकालिकसूत्र में पाँचों समितियों के सम्बन्ध में निरूपण उपलब्ध होता है।

5. तीन गुप्ति

मन, वचन एवं काया के निग्रह को गुप्ति कहते हैं। मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति को योग कहा गया है, गुप्ति के द्वारा अशुभ योग का निग्रह किया जाता है। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति एवं कायगुप्ति के रूप में गुप्ति के तीन प्रकार हैं। दशवैकालिक में तीनों गुप्तियों का एक साथ भी उल्लेख हुआ है-

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइण्णओ खिप्पमिवक्खलीणं।।

-दशवैकालिक, द्वितीय चूलिका, गाथा 14

जहाँ पर साधु काया, वाणी एवं मन से दुष्प्रवृत्ति देखे, वहाँ पर ही वह अपने को प्रतिसंहृत कर ले अर्थात् निगृहीत कर ले। द्वितीय अध्ययन में जो कामनाओं के निवारण की प्रेरणा की गई है वह मनोगुप्ति का ही कथन है। वचनगुप्ति का सप्तम अध्ययन में भाषा समिति के साथ ही निरूपण हुआ है। वहाँ कहा गया है कि भाषा के गुण दोषों को जानकर उसके दोषों को सदा तजे।[8] सावद्य भाषा का त्याग मुनि के लिए आवश्यक है- सावज्जं न लवे मुणी।[9] कायगुप्ति का भी उल्लेख दशवैकालिक में अनेक स्थलों पर हुआ है। अष्टम अध्ययन में कहा गया है-

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसीए, सगासे गुरुणो मुणी।।

-दशवैकालिक सूत्र, 8.45

हाथ, पैर, शरीर को संयमित कर जितेन्द्रिय मुनि गुरु के समीप बैठे।

ज्ञान का महत्त्व

उत्तराध्ययनसूत्र में ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप को मोक्ष का उपाय बताया गया है।[10] तप को चारित्र में समाविष्ट करते हुए तत्त्वार्थ सूत्र में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र को मोक्ष का मार्ग कहा गया है।[11] विशेषावश्यकभाष्य में ज्ञान एवं क्रिया को भी मोक्ष का उपाय कह दिया गया है[12], क्योंकि ज्ञान के साथ सम्यग्दर्शन का ग्रहण हो जाता है तथा क्रिया सम्यक्चारित्र की द्योतक है। दशवैकालिकसूत्र में भी ज्ञानपूर्वक क्रिया पर बल देते हुए कहा गया है- पढमं णाणं तओ दया। (दशवैकालिकसूत्र, 4.10) अज्ञानी व्यक्ति श्रेय एवं पाप में भेद नहीं कर पाता है। अत: ज्ञानपूर्वक ही आचरण श्रेष्ठ होता है।

ज्ञान का महत्त्व तभी है जब कोई सम्यग्दृष्टि को प्राप्त कर लेता है। सम्यग्दृष्टि प्राप्त होने पर जीव अमूढ हो जाता है, उसे सही-गलत, आचरणीय-अनाचरणीय का अपने विवेक से बोध होता है। सम्यग्दृष्टि का ही ज्ञान मुक्ति का उपाय बनता है। उस ज्ञान के अनुसार की गई क्रिया कर्म-निर्जरा का कारण होती है। दशवैकालिक के दशम अध्ययन में सद्भिक्षु का स्वरूप निरूपित करते हुए कहा गया है कि सम्यग्दृष्टि साधक अमूढ होकर ज्ञान, संयम और तप में रत रहता है। वह मन, वचन और काया को संवृत कर लेता है अर्थात् वह त्रिगुप्ति का आचरण करता हुआ तप के द्वारा प्राचीन संचित पाप कर्म को धुनता है।[13] धुनने का आशय यहाँ कर्मो की निर्जरा करना है।

यहाँ ध्यातव्य है कि दशवैकालिक सूत्र में "तवसा धुणइ पुराण-पावगं" (दशवैकालिक, 9.47 एवं 10.7) वाक्य इस तथ्य को इंगित करता है कि पाप कर्मो की

निर्जरा करने हेतु ही तप किया जाता है, पुण्य कर्मो की निर्जरा के लिए नहीं। पुण्य कर्म तो अघाती होते हैं, उनसे जीव के ज्ञान, दर्शन आदि गुण आवरित नहीं होते, उनका क्षय करने के लिए केवलि-समुद्घात के अतिरिक्त किसी प्रकार की साधना का उल्लेख नहीं है।

7. नवतत्त्व

ज्ञानपूर्वक क्रिया करने के प्रसंग में दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन में जीव एवं अजीव के ज्ञान को आवश्यक बताया गया है। जीव-अजीव को जानकर ही कोई जीव की विविध गतियों का ज्ञान करता हुआ पुण्य, पाप, बंध, मोक्ष आदि का ज्ञान करता है। इनका ज्ञान होने पर वह आस्रव के द्वारों को रोककर संवर की आराधना करता है। दशवैकालिक में संवर को उत्कृष्ट धर्म कहा गया है।[14] उत्कृष्ट संवर धर्म का आराधक पूर्व संचित कर्मो को धुनता है अर्थात् उनकी निर्जरा करता है।[15] निर्जरा करता हुआ जीव केवल ज्ञान एवं केवल दर्शन को प्रकट कर लेता है। फिर वह योगों का निरोध कर शैलेशी अवस्था को प्राप्त कर सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार दशवैकालिक सूत्र में नवतत्त्वों का बंधन एवं मुक्ति की प्रक्रिया की दृष्टि से संक्षिप्त निर्देश किया गया है।

8. वाणी का सम्यक् प्रयोग

वाणी का सही प्रयोग न होने पर वह क्लेश का कारण बन जाती है। उससे वातावरण विकृत हो जाता है तथा वक्ता का चित्त भी अशान्त हो जाता है, इसलिए भाषा का प्रयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए। दूसरे महाव्रत में जहाँ मृषाभाषण का त्याग कहा गया है वहाँ क्रोध से, लोभ से, भय से एवं हास्य से भी झूठ बोलने का निषेध किया गया है।[16] भाषा के चार प्रकार हैं- सत्य भाषा, असत्य भाषा, मिश्रभाषा एवं व्यवहार भाषा। इनमें से साधु-साध्वी को सत्यभाषा एवं व्यवहारभाषा का ही प्रयोग करना चाहिए, शेष दो प्रकार की भाषाएँ वर्जनीय हैं। कभी सत्यभाषा भी सावद्य हो तो नहीं बोलनी चाहिए। कैसी भाषा या वचनों का प्रयोग करना चाहिए, इसके सम्बन्ध में कहा गया है-

दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं।।

-दशवैकालिक सूत्र, 8.49

आत्मवान् साधक दृष्टवस्तु विषयक (प्रामाणिक), परिमित, सन्देह रहित, प्रतिपूर्ण, व्यक्त, परिचित, चपलता रहित एवं अनुद्विग्न भाषा का प्रयोग करता है।

साधु कानों से बहुत सुनता है, आँखों से बहुत देखता है, किन्तु देखा गया एवं सुना गया सब कहने योग्य नहीं होता।[17]

सातवें अध्ययन 'वाक्यशुद्धि' में साधु को क्या एवं कैसे बोलना चाहिए, इसका विस्तृत निरूपण हुआ है। साधु सोच-विचारकर निर्दोष भाषा का प्रयोग करे। निर्युक्ति में भी कहा है- **पुव्वं बुद्धीए पेहित्ता, पच्छा वयमुदाहरे।** पहले बुद्धि से प्रेक्षण करे, फिर वचन कहना चाहिए। सावद्य का अनुमोदन करने वाली अन्य जीवों को पीड़ा पहुँचाने वाली भाषा का प्रयोग साधु को हँसी-मजाक में भी नहीं करना चाहिए।

भाषा के गुण-दोषों का विचार कर हितकारी एवं अनुकूल रूप में ही वाणी का प्रयोग करना उचित है।[18]

9. विनय समाधि

दशवैकालिक सूत्र में श्रमण-श्रमणी के आचार को ही प्रधान रूप से प्रस्तुत किया गया है, किन्तु 'विनय समाधि' नामक अध्ययन में विनय का विशेष प्रतिपादन है। गुरु के अल्पश्रुत होने पर भी शिष्य को उसका आदर करने की इसमें सीख दी गई है। गुरु की आशातना के भयंकर परिणाम बताए गए हैं। पापों से लज्जा, जीवों पर दया, संयम एवं ब्रह्मचर्य का पालन कल्याणार्थी साधक के लिए विशुद्धि के स्थान हैं। गुरु इनकी सतत शिक्षा देता है, अत: ऐसे गुरु का सतत सम्मान करना चाहिए।[19] धर्म का मूल विनय है एवं उसका परम फल मोक्ष है। विनय के कारण साधक कीर्ति, श्रुत तथा मोक्ष को प्राप्त करता है।[20] अविनीत शिष्य का लक्षण प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि जो क्रोधी, मूढ, अहंकारी, अप्रियभाषी, कपटी और शठ होता है वह अविनीत है।[21] लोक में सुविनीत नर-नारी सुख, ऋद्धि एवं यश प्राप्त करते हुए देखे जाते हैं।[22] विनीत को सद् गुणों की सम्पदा प्राप्त होती है तथा अविनीत को विपत्ति मिलती है।[23] इसलिए साधक को विनयवान् होना चाहिए। सद्गुणों से ही कोई साधु होता है तथा अगुणों से असाधु होता है।[24] गुणसागर गुरुओं के सुभाषितों को सुनकर जो मुनि पाँच समितियों, तीन गुप्तियों में रत रहकर क्रोधादि चार कषायों से दूर रहता है वह पूज्य होता है।[25] विनय समाधि के चार स्थान कहे गए हैं- 1. विनय समाधि, 2. श्रुत समाधि, 3. तप समाधि एवं 4. आचार समाधि। जो साधु जितेन्द्रिय एवं पंडित होते हैं वे अपने को विनय, श्रुत, तप एवं आचार में लगाए रखते हैं। गुरु के द्वारा शिक्षा प्रदान करने पर विनय समाधि से युक्त शिष्य उसे ध्यान से सुनता है, भलीभांति ग्रहण करता है, ज्ञात का आराधन करता है तथा अभिमान नहीं करता है। श्रुत समाधि से युक्त साधक श्रुतज्ञान के लिए, एकाग्रचित्तता (ध्यान) के लिए, अपने को साधना में स्थिर करने के लिए तथा दूसरे को स्थिर करने के लिए स्वाध्याय करता है। तपसमाधि एवं आचार समाधि से युक्त साधक यश-कीर्ति आदि की वांछा से रहित होकर, इहलोक-परलोक के

सुखों की अभिलाषा से दूर होकर मात्र कर्म-निर्जरा को अपना लक्ष्य बनाता है।

10. साधक के लिए सावधानियाँ

यद्यपि प्रत्येक अध्ययन में साधक को साधना में सजग रहने हेतु सावधान किया गया है, तथापि कहीं कहीं विशेष निर्देश भी प्राप्त होते हैं। कतिपय बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. साधु को सुखभोग का आकांक्षी नहीं होना चाहिए। साता के लिए आकुलचित्त नहीं होना चाहिए तथा निर्दिष्ट वेला से अधिक शयन नहीं करना चाहिए। शरीर की शोभा के लिए स्नान एवं हाथ-पैर आदि का प्रक्षालन नहीं करना चाहिए।
2. साधु अपना अधिकांश समय साधना में ही व्यतीत करे।
3. विकथाओं को सुनने एवं सुनाने में न रमे, अपितु सदा स्वाध्याय में रत रहे।
4. विभूषा, स्त्री-संसर्ग, गरिष्ठ भोजन तालपुट के विष के समान त्याज्य है।
5. साधु आहार की गवेषणा सम्यक् प्रकार से दोषों को टालता हुआ करे।
6. साधु को अलोलुप, अक्रोधी, अमायी, अपिशुन एवं अदीनवृत्ति होना चाहिए। उसे कहीं भी याचना में दीन भाव नहीं दिखाना चाहिए।
7. वाणी का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। दुर्वचनों के कांटे को निकालना कठिन होता है। इनसे वैर का अनुबन्ध होता है। निश्चयकारी एवं अप्रिय भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।
8. साधु को मंत्र, तंत्र आदि के प्रयोग से तथा कौतुहलकारी कार्यों से बचना चाहिए।
9. साधक के मन में यदि कदाचित् संयम-जीवन को छोड़ने का मन करे तो उसे संयम में दृढ़ करने के लिए अनेक युक्तियाँ प्रथम चूलिका में दी गई हैं। गृहस्थ-जीवन में जाने पर होने वाली हानियों का वर्णन किया गया है तथा परीषह और उपसर्ग में दृढसंयमी रहने हेतु पौरुष जगाया गया है।

व्याख्या साहित्य

दशवैकालिक सूत्र पर श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु द्वारा 371 प्राकृत गाथाओं में निर्युक्ति की रचना की गई है। अगस्त्यसिंह एवं जिनदास गणि की चूर्णि उपलब्ध है। चूर्णि संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के मिश्रित रूप में गद्य में लिखी जाती है। आचार्य हरिभद्र (700-770 ई.) द्वारा दशवैकालिक पर बृहद्वृत्ति नामक टीका की रचना की गई। 13 वीं से 17 वीं शती के मध्य तिलकाचार्य ने भी टीका का लेखन किया। माणिक्य शेखर ने निर्युक्ति दीपिका, समयसुन्दरगणि ने दीपिका, विनयहंस ने वृत्ति तथा रामचन्द्रसूरि ने वार्तिक लिखा। 18 वीं शती में टब्बा लिखा गया। सन् 1940 में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के

सम्पादन में सौभाग्यचन्द्रिका नामक टीका के साथ दशवैकालिक का प्रकाशन हुआ। 20 वीं शती में पूज्य घासीलालजी महाराज ने संस्कृत टीका की रचना की। हिन्दी अनुवाद अनेक स्थानों से हुए हैं, जिनमें आचार्य आत्मारामजी महाराज, आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज (हिन्दी पद्यानुवाद के साथ), पूज्य उमेशमुनिजी महाराज आदि के अनुवाद विशेष उल्लेखनीय हैं। आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर से मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी महाराज के सत्प्रयत्नों से भी हिन्दी अनुवाद के साथ दशवैकालिक का प्रकाशन हुआ है। आचार्य श्री तुलसी एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा भी सटिप्पण हिन्दी अनुवाद किया गया है। उसी शृंखला में आचार्य श्री सुदर्शनलालजी महाराज के निर्देशन में भी दशवैकालिक के हिन्दी अनुवाद का संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

सन्दर्भ:-

1. आरातीयै: पुनराचार्यै: कालदोषात्संक्षिप्तायुर्मतिबलशिष्यानुग्रहार्थं दशवैकालिकाद्युपनिबद्धम्।- सर्वार्थसिद्धि, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2009, पृ. 87
2. दसकालियंति नाम संखाए कालओ य निद्देसो।
   दसकालियसुअखंधं अज्झयणुद्देस निक्खिविउं।।-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा 7
3. दशवैकालिकसूत्र, (निर्युक्ति-चूर्णि-बृहद्वृत्ति युक्त), श्री हर्ष पुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखा बाबल, जामनगर (सौराष्ट्र), सन् 2001, पृ. 13
4. सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवधा पियजीविणो जीवितुकामा। संव्वेसिं जीवितं पियं।- आचारांग सूत्र, 1.2.3
5. द्रष्टव्य- दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 9, गाथा 3 व 4 के पश्चात् के क्रमिक गद्य।
6. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से कीडं वा, पंयंगं वा, कुंथुं वा, पिविलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंबलसि वा, पायपुच्छणंसि वा, रयहरणंसि वा, गोच्छगंसि वा, उडगंसि वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय एगंतमवणिज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा। -दशवैकालिकसूत्र, 4.23
7. दशवैकालिक सूत्र, 6.39
8. भासाए दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे य दुटठे परिवज्जए सया।-दशवैकालिकसूत्र, 7.56
9. दशवैकालिक सूत्र, 7.2
10. णाणं च दंसण चेव, चरित्तं च तवो तहा।
    एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं।।- उत्तराध्ययन सूत्र, 28.2
11. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग:।- तत्त्वार्थसूत्र, 1.1

12. णाणकिरियाहिं मोक्खो।-विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 3
13. सम्मदिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू।।
-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 10, गाथा 7
14. तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं। -दशवैकालिक सूत्र, 4.19
15. तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।।- दशवैकालिक सूत्र, 4.20
16. से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा।-दशवैकालिक सूत्र, चतुर्थ अध्ययन, द्वितीय महाव्रत का पाठ।
17. द्रष्टव्य, दशवैकालिक सूत्र, 8.20
18. द्रष्टव्य, दशवैकालिक सूत्र, 7.56
19. लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिट्ठाणं।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, तेऽहं गुरुं सययं पूययामि।।-दशवैकालिकसूत्र, 9.1.3
20. दशवैकालिकसूत्र, 9.2.2
21. दशवैकालिकसूत्र, 9.2.3
22. दशवैकालिकसूत्र, 9.2.9
23. विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य।- दशवैकालिक सूत्र, 9.2.22
24. दशवैकालिकसूत्र, 9.3.11
25. दशवैकालिकसूत्र, 9.3.14

-अधिष्ठाता, कला, शिक्षा व समाज विज्ञान संकाय एवं प्रोफेसर, संस्कृत-विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-342005 (राज.)

जिनवाणी विशेषांक पर अभिमत

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

जिनवाणी का **आचार्यपद** विशेषांक मिला। इस 440 पृष्ठ के विशाल ग्रंथ को पढ़ने में काफी समय लगा। सभी लेखकों के विचार पढ़ने को मिले, कई ग्रन्थियाँ सुलझीं, कुछ नई जानकारियाँ मिलीं। सभी रचनाएँ अति सुन्दर हैं। कुछ लेखों को दूसरी बार भी पढ़ना पड़ा।

सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को इस ज्ञानवर्धक सुन्दर अंक के लिए बधाई एवं अभिनन्दन। प्रथम पृष्ठ पर संघनायक आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के **साधु-साध्वियों के लिए संदेश** और अन्तिम पृष्ठ पर **साधक के लिए सावधानियाँ**- हर साधक को सचेत रहने के लिए काफी हैं।

आचार्यपद के इन 25 वर्षों में संघ की गरिमा में अभिवृद्धि हुई है। संघ का संगठन सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित हुआ है। हम सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हैं।

दिनांक-30 सितम्बर, 2016 -52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079(तमिलनाडु)

अध्यात्म

सामायिक एवं ध्यान-साधना की परस्पर पूरकता

श्रीमती शान्ता मोदी

जैन दर्शन के अनुसार सम्यक्त्व के पश्चात् साधक अध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होता है। आध्यात्मिकता से तात्पर्य विभाव दशा से स्वभाव दशा में आना है। आध्यात्मिकता सामायिक की भूमिका पर पल्लवित होती है। सामायिक में मन, वचन, काया के योगों को अशुभ से शुभ की ओर प्रवृत्त किया जाता है। सामायिक व्रत की श्रेणी में आती है, जिससे जाग्रति, श्रद्धा, निष्ठा एवं भक्ति भाव उत्पन्न होते हैं। शनैः-शनैः आत्मशुद्धि, आन्तरिक ऋजुता, विनय जैसे गुण प्रकट होने लगते हैं। समता का आधार ही सामायिक व्रत है। जिससे बाह्य प्रवृत्तियाँ न्यून होती रहती हैं। सामायिक व्रत-धारण करने हेतु व्यवस्थित विधि है। जिससे सामायिक की आराधना होती है। सामायिक एवं समता की साधना में ध्यान-साधना भी सहायक है। एक प्रकार से ध्यान-साधना सामायिक को सफल बनाने से उसकी पूरक है। दूसरे शब्दों में कहें तो दोनों साधनाओं का मूल प्रयोजन समता भाव को पुष्ट करना है। दोनों साधनाओं में योगों के माध्यम से अन्तर जगत् में प्रवेश करना होता है ताकि साधना का उद्देश्य पूर्ण हो।

सामायिक का भगवतीसूत्र में स्वरूप बताया है-"आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे।" इस सूत्र में सामायिक की चिन्तन सामग्री भरी हुई है। आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र में ध्यान के बारे में लिखा-

"न साम्येन विना ध्यानं न ध्यानेन विना च तत्।
निष्कम्पं जायते तस्माद्, द्वयमन्योन्यकारणम्।।"

समभाव का अभ्यास किये बिना ध्यान नहीं होता और ध्यान के बिना निश्चल समत्व की प्राप्ति नहीं होती है। अतः दोनों एक-दूसरे के कारण हैं, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी भी साधना की महत्ता का पूरा परिचय उसे आचरण में लाने से ही होता है। ध्यान-साधना करने से ही ज्ञात हो सकता है कि समता कहाँ तक प्राप्त हुई है। यदि शुद्ध समता भाव से एक सामायिक हो जाए तो केवलज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। जब ध्यान-साधना उत्कृष्ट होगी तभी स्व-स्वरूप के निकट पहुँच सकेंगे। ध्यान में शारीरिक, मानसिक, भौतिक कोई भी परिस्थिति आ जाए समता भाव से आत्म-स्थिरता में रमण करना होता है। तभी मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य के सन्निकट पहुँचा जा सकता है।

सामायिक में पापमय व्यापारों का त्याग कर समभाव अर्थात् शुद्ध मार्ग अपनाया

जाता है। ध्यान साधना में चाहे कितने ही संकल्प-विकल्प आते रहें उन्हें समता भाव से ही दूर किया जाता है। सामायिक चारित्र है तो ध्यान साधना भी चारित्र ही है। क्योंकि दोनों प्रायोगिक रूप में किये जाते हैं। दोनों का शुद्ध स्वरूप सम्यग्ज्ञान-सम्यग्दर्शन के पश्चात् ही हो सकता है। यह रागादि विकार निवारण करने की साधना है। ध्यान मूलतः चित्तवृत्ति की एकाग्रता अथवा सजगता है। ध्यान चित्तवृत्ति का संयम है। जैसे-जैसे आत्म-सजगता बढ़ती है, वैसे-वैसे मन निर्विकल्प होता जाता है। मन के निर्विकल्प होते ही योग प्रवृत्तियाँ शिथिल होती जाती हैं। ज्ञाता-द्रष्टा भाव व कर्त्ताभोक्ता भाव एक साथ नहीं हो सकते। अतः ध्यान में जैसे-जैसे ज्ञाता द्रष्टा भाव पुष्ट होते रहते हैं वैसे-वैसे ध्यान में परिपक्वता आती रहती है और राग-द्वेष व शरीर की अनित्यता स्पष्ट समझ में आने लगती है, जिससे साधक देह की क्षणभंगुरता से परिचित होने लगता है तथा वीतरागता की ओर अग्रसर होता है। वीतरागता की उपलब्धि जैन साधना का चरम लक्ष्य है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तये निर्विषयं मनः।।

मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का हेतु है। विषयों में आसक्त मन बन्धन का कारण और निर्विषय मन मुक्ति का कारण होता है।

सामायिक में साधक मन, वचन, काया के दोषों से बच सकता है। ध्यान-साधना करते समय भी तीन योगों के दोषों से अलग रहा जाता है, क्योंकि ध्यान-साधना में भी तीनों योगों पर नियंत्रण रखा जाता है।

सामायिक-साधना निर्विकल्प होने की साधना है। ध्यान में भी मन को एकाग्र करके अपने दोषों का निरीक्षण किया जाता है तथा शरीर व आत्मा के भिन्न स्वरूप को जाना जाता है तथा राग-द्वेष पर विजय पायी जाती है। ध्यान में चित्त की समता, शान्ति, समाधि का निरन्तर अभ्यास किया जाता है। चित्त को बहिर्मुखी वृत्ति से हटाकर अन्तर्मुखी होकर अंतर्यात्रा की जाती है। कर्तृत्व भोक्तृत्व को छोड़कर ज्ञाता-द्रष्टा में रहने का अभ्यास करते हुए जड़ (शरीरादि) और चेतन से भिन्नत्व का अनुभव किया जाता है। इससे जड़-चेतन की ग्रन्थि का भेदन होता है। आचार्य हरिभद्र सामायिक के 'अष्टक प्रकरण' ग्रंथ में कहते हैं-

सामायिकं च मोक्षांगं, परं सर्वज्ञभाषितम्।
वासीचन्दन-कल्पानामुक्तमेतत् महात्मनाम्।।

सामायिक पापरहित साधना है। इस साधना में पाप का अंश मात्र भी नहीं रहता। चित्तवृत्ति शान्त रहती है, अतः नवीन कर्मों का बंध नहीं होता। जिस कारण सब जीवों के प्रति कल्याण की भावना भावित होती जाती है। आत्म स्वभाव में रमण करता हुआ साधक

शुद्ध विचारों से एवं ध्यान के माध्यम से कर्मों की निर्जरा करता हुआ, मोक्ष की सीढ़ी पर आरूढ़ होने लगता है। इसीलिये आचार्य हरिभद्र ने सामायिक के फल बताते हुए कहा है-

सामायिकेन सिद्धात्मा, सर्वथा घातिकर्मणां।
क्षयाद् केवलमाप्नोति, लोकालोकप्रकाशम्।।

सामायिक से घातिकर्मों का क्षय कर जीव लोकालोक के प्रकाशक केवलज्ञान को प्राप्त कर लेता है। इसी तरह ध्यान-साधना का मुख्य उद्देश्य है वीतरागता को प्राप्त करना। वीतरागता की अनुभूति के लिए राग का त्याग आवश्यक है। राग की उत्पत्ति का कारण विषय-भोगों के सुखों की आसक्ति का आकर्षण होता है। इनका त्याग तभी हो सकता है जब निज स्वरूप में प्रतिष्ठित होने पर आनन्द की अनुभूति हो।

जिसका चित्त ध्यान में संलग्न है वह क्रोधादि विषयों से उत्पन्न होने वाले ईर्ष्या, विषाद, शोक आदि मानसिक दुःखों से पीड़ित नहीं होता है। मानसिक दुःखों के समान शारीरिक दुःखों से भी बाधा को प्राप्त नहीं होता है। वह उन्हें निराकुलतापूर्वक सहता है। क्षमाश्रमण रचित ध्यान-शतक ग्रंथ में कहा गया है-

संवर विणिज्जराओ मोक्खस्स पहो तवो तासिं।
झाणं च पहाणं तवस्स तो मोक्खहेउयं।।

संवर और निर्जरा मोक्ष के मार्ग हैं। निर्जरा के अन्तर्गत तप भी मोक्ष का हेतु है। तप का प्रधान अंग ध्यान है। अतः ध्यान मोक्ष का हेतु है।

श्री जिनभद्र क्षमाक्षमण ने ध्यान शतक में बताया कि जिस प्रकार जल वस्त्रगत मैल को धोकर उसे स्वच्छ कर देता है, उसी प्रकार ध्यान जीव में संलग्न कर्मरूप मैल को धोकर जीव को शुद्ध कर देता है। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी के कीचड़ को सुखा देता है उसी प्रकार ध्यान भी जीव से संलग्न कर्मरूप कीचड़ को सुखा देने वाला है।

तप एवं निर्जरा तत्त्व के बारह भेदों से ध्यान ग्यारहवाँ और कायोत्सर्ग बारहवां भेद है। ध्यान में चित्त शान्त होता जाता है। ध्यान जितना सधता जाता है उतना ही देहाभिमान गलता जाता है और समत्व भाव उत्कृष्ट होने लगता है। संकल्प-विकल्प, राग-द्वेष घटते जाते हैं, निर्विकल्पता बढ़ती है, जिससे चिन्मयता प्रकट होती है, जड़ता टूटती जाती है जिससे देह का ममत्व भी टूटने लगता है और समता की ओर अग्रसर हो जाता है। सामायिक साधना में ध्यान का अत्यन्त महत्त्व है और इसलिये कहा जाता है कि एक अन्तर्मुहूर्त में केवल ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अतः ध्यान साधना और सामायिक का सम्बन्ध अटूट है। सामायिक साधना में ध्यान साधना की जाय तो मोक्ष के नजदीक पहुँचा जा सकता है। यही मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है। इसीलिये सामायिक में ध्यान-साधना होती रहे तो उत्कृष्ट सामायिक फलीभूत हो सकती है।

-देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

English-Section

Dialogism and Its Psychology in The Jain Canons

Dr Shweta Jain

Vāda is the dialogue between teacher and disciple for the purpose of acquiring knowledge (for *Tattva-Bodha)* or rather we can say that it is a process of interaction between two scholars. Now the question arises what the purpose of *Vāda* is? The answer is that *Vāda* is the presentation of righteousness (*saddharma)* in order to establish its good characteristics and eradicate the bad ones and rebuttal of misconception or it is a process to remove ignorance. The author of *Upāyahṛdya* went to the extent of saying- "यदीह लोके वादो न भवेत्, मुग्धानां बाहुल्यं स्यात्"[1] if there were no dialogism in the world, the number of ignorant persons will increase. It is aptly said, "मोहो विण्णाण–विवच्चासो"[2] *Moha* or *Mūḍhatā* is the antonym of sanity knowledge, so eradication of ignorance is the means of knowledge.

Many examples of debates as a means of knowledge are found in the *Āgamas*:-

1. In the seventh chapter of the *Upāsakadaśāṅga*[3], there is a dialogue or debate between Lord *Mahāvīra* and *Sakḍālputra* on destiny and its cause. In this dialogue Lord *Mahavir* presents such arguments which could not be refuted by *Sakḍālputra*. At last he realized the importance of endeavour. *Sakḍālputra* was a potter. He told *Mahāvīra* that making of clay pots depends upon destiny or *niyati,* and not on human effort. Then he was counter questioned by Lord –"If someone steals your dried pots, breaks them, makes hole in them or throws them then what will you do?" *Sakḍālputra* answered, "I will beat him, tie him, threaten him and criticize him."Then Lord said –"तो जं वदसि – नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा" your denial of the effort of man as cause, is false. The view that emerges from this discussion is that *Sakḍālputra* does not told one the theory of *niyati* which he believes-in. Therefore what we get from this

debate is it is not possible to accept the theory which is not practical.

The same pattern of arguments is found in the 6th chapter of *Upāsakadaśāṅga* between *Kuṇḍakaulika* and *Dev,* in which the rationality of human-effort is established.

1. In the *Rajpraśnīya Sūtra,*[4] there is a discussion between *Keśīśramaṇa* and *King Pradeśī* regarding whether the body is separate from the soul or the two are the same. In the clan of king *Pradeśī*, the belief was held that the body and the soul are the same. He gives many arguments to prove his view and refers to many experiments to support :-

(1) If my Grandfather is born in hell because he was unrighteous, then why does he not come here to tell "me" his beloved grandson – not to do any unrighteous act. This means- the soul and the body are one, and that is why there remains no thing here after one is died. As a result, he doesn't come back to tell me about himself, If the body and soul were different or separate then his soul would visit me even after acquiring a new body to make me aware, out of his affection for me.

(2) My grandmother was religious by nature, but she also doesn't come to make me aware.

(3) I did many experiments to know if the body and soul are separate. I put a living man in a big iron pot and covered it. After some time when he died, I checked the iron pot carefully but found no crack through which the soul might have gone out.

(4) Even after the big iron pot was covered and sealed with paste, insects were born from the dead body kept there. Then how could those living creatures found the way into the closed iron pot without any leak in it?

(5) A young and strong man can shoot five arrows at a time. But a weak man cannot shoot five arrows at a time. This proves the soul and body are one, because the capacity of work varies

according to strength and weakness.

(6) A young man is capable of lifting the heavy iron while an old man is not capable of doing that. This also proves that the soul and body are one.

(7) Since the weight of the dead one and the alive one does not differ, it also proves that the soul and the body are one.

(8) When a living person is cut into pieces, even then we do not find life in it. So life is not a separate entity.

Keśīśramaṇa satisfies King *Pradeśī* by giving the following arguments :-

(1) *Keśīśramaṇa* explains this by giving the example of *Rāni Sūryakāntā* that – As, You will not wait even for a moment to punish the man who enjoys amorous sports with your queen, as you will never give him that much time to speak to his friends and fellows that he is being punished because of his such and such offence. In the same way your grandfather there in the hell will not find even a moment's freedom to come here to tell you anything.

(2) Descending from the abode of heaven is just like coming to the toilet/washroom. Then- who would like to come to this world that seems like the washroom? So your grandmother does not come here to tell you anything.

(3) As from a, well covered *kutākāra śālā* we never hear the heavy sound of the drum played inside it, though the sound of the drum is heard inside. In the same way a soul is also endowed with the unobstructed motion. It does not need any door to go out.

(4) As the fire does not need any hole to enter into iron and make it hot, so a soul does not need any passage to come out of the body.

(5-6) A young man is capable of throwing five arrows at a time with the new bow, arch and new arrows, but he cannot throw five arrows at a time with the old bow, arch and arrows. Here it is so because of insufficient facilities. And from this it is not proved that the soul and the body are one.

(7) Weigh the bellows *(Dhonknī)* filling it with air and weigh it again after the air is taken out of it, there will be no change in its weight. In the same manner it denotes no change in the body when living or after death due to its speciality called non-gravity-levity.

(8) With the short story of *kaṭhiyārā*, *Keśīśramaṇa* says- As, even after chopping out the wood into pieces the fire cannot be found, in the same way a soul cannot be visible even after chopping off a body.

In this way a change in the view of king *Pradeśī* was brought out through a *Vāda.*

In the *Sūtrakṛtāṅga Sūtra,*[5] there is a beautiful debate between Lord *Parśvanāth*'s disciple *Nirgranth Udakapeḍhalaputra* and *Gautam Gaṇdhar* regarding abstinence from violence. In this discussion the question put up by the word of vada- 'सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वदासी'. *Udaka Nirgranth* prescribes abstinence from violence by saying- 'नन्नत्थ अभिजोएणं गाहावतीचरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दण्डं' where as he should have said 'तसभूतेहिं पाणेहिं' in place of 'तसेहिं पाणेहिं'. 'नन्नत्थ अभिजोएणं गाहावतीचरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दण्डं'- *Udaka Nirgranth* says that a *Śramaṇa Nirgranth* named *Kumāraputra* practices abstinence from violence of the mobile living beings to the *Śramṇopāsaka* in the following way:- 'नन्नत्थ अभिजोएणं गाहावतीचरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दण्डं' This is not the right way of renunciation(*duṣpratyākhyāna*). He should practice right renunciation, At this *Gautam Gaṇdhar* says:- The way of *kumārputra* is not incorrect because *Śramṇopāsaka* needs to refrain from killing those living beings which are in mobile mode at present, that living being might have been immobile in the past or

might have turned into immobile from mobile at present, that is none of his business, nor does it cause transgression of his vows, because the change in mode occurs due to karma. Jain Scholar *Śrīcanda surānā 'sarasa'* has given his opinion in refuting the significance of the word 'भूत' by presenting three reasons as follows:-

1. The use of the word 'भूत' is meaningless, and faulty because of being repetitive.
2. The word 'भूत' has same meaning as the word 'त्रस' or the words 'भूत' and 'त्रस' are synonyms.
3. The meaning of the word 'भूत' is the same as that of 'त्रस' so it is useless.

In the 23rd chapter of the *Uttrādhyayana Sūtra,*[6] a debate on the different practices and thoughts took place in the two Jain traditions of *Pārśva* and *Mahāvīra*. There is a discussion between *Keśīkumāra Śramaṇa,* the follower of *Pārśva*, and *Gautam Gaṇadhara,* the follower of *Mahāvīra,*. When the followers of the two different traditions (*Pārśva* and *Mahāvīra*) came into contact with each other, many queries arose in their mind regarding their different attire, vows and practices. In this situation *Keśīkumāra Śramaṇa* and *Gautam Gaṇadhara* understood that the mutual settlement through a religious debate is necessary between the two different traditions of followers in the presence of their pupils. So all gathered in *Tīndukavana*. A question arises that - Lord *Pārśva* thought *cāturyāma dharma (Ahiṁsā, Satya, Acaurya and Aprigraha)* whereas Lord *Mahāvīra* thought *Pañca-Mahāvrata.* ('चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ।। देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी') What is the consistency in these two teachings? This sort of question arose and a serious discussion took place. After the debate it was understood that their goal is the same, there is no difference in that, but in keeping with the fickle motion of human mind/nature and the capability of the practitioner remaining changes have been made. The reasons for establishing fivefold vows and being sky clad or

without clothes were explained to the followers. External practices and necessity of clothes are only meant for worldly affairs. The goal of salvation is one and it means such as- knowledge, faith and conduct are the path.

In the *Vyākhyāprajňapti Sūtra*,[7] *Gautam Gaṇadhara* asked Lord *Mahāvīra* -whether bondage of karma (*Apratyākhyāna-kriyā)* is the same for the wealthy and the poor person, for the pennyless and a king? Lord gives this explanation- 'गोयमा! अविरतिं पडुच्च; से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सेट्ठिस्स य तणुस्स य किविणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ' which means- O *Gautam*! Due to non-restraint (*avirati*) the bondage of karma is equal for the wealthy one, the poor, the penniless and a king.

This debate makes it clear that the rule of bondage of karma never makes any difference between the king and the penniless one. It is the same for all. Therefore, righteous practice is equally possible for a poor man as well as a wealthy one.

In the second *śataka* of *Vyākhyāprajňapti Sūtra*,[8] a debate took place among the old sage and *Śramaṇopāsaka,* The subject was restraint and the result of penance. Being asked by *Śramaṇopāsaka,* old sage says that- the result of restraint is freedom from influx (*anāsravatā*) and the result of penance is *vyavadāna* which means decaying of karma intensely or purifying an unrighteous soul. *Śramaṇopāsaka* asks again- if the result of restraint is freedom from influx and the result of penance is *vyavadāna*, then why does a human being, after death is born in the heaven as a deity? This counter question indicates that – a firm belief is well founded in their mind that with restraint and penance the abode of deity is attained. Old sage's answer to this is- with the penance that is full of attachment, with the restraint that is full of attachment, with *karmitā* (in absence of destruction of karma), *saṅgitā* (attachment to the substance) one reborn in the abode of deity.

After this debate a wrong idea of the *Śramaṇopāsaka* in reference to attainment of the abode of deity through restraint and penance ended up, and he understood the significance of restraint and

penance in right manner.

In this way the dialogism of *Śramaṇa*, *Śramaṇopāsaka* and Lord *Mahāvīra* has been described in Jain canonical literature. The arguments that are given for the attainment of the essence is called *Vītarāga kathā*, because there is no place for victory and defeat in it. Argument is important as a means of propagation of religious doctrines. This is the reason why the disciples of *Mahāvīra* who had the property of *Ridhis*, the disciples with specialization in argument were counted especially among them.

It is said in *Sthānāṅga Sūtra* thus:- 'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजियाणं उक्कोसिता वादिसंपया हुत्था।'[9]

The number of Lord *Mahāvīra*'s sages who were specialists in argument was four hundred. They were undefeated in all the councils whether deity-council, human-council and demi-god-council. This was the cream treasure of his argument-specialist disciples.

It is said in the *Sthānāṅga Sūtra* while describing the varieties of the *Kathā* - चउव्विहा कहा पण्णत्ता, तंजहा– अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी, णिवेदणी।[10] *Kathā* is of four varieties -1. *Ākṣepaṇī* 2.*vikṣepaṇī* 3. *saṁvedanī* 4. *nirvedanī*. *Saṁvedanī* and *Nirvedanī* tales are those, through which a Guru advises his disciples to develop desire for salvation (*saṁvega*) and detachment (*nirveda*). *Ākṣepaṇī kathā* also known as *Vītarāga kathā* takes place between a Guru and his disciple, according to Jain belief. It can also be said *Tattvabubhutsu kathā* according to *Nyāya Sūtra*. Here Acharya removes the doubts of the disciple about subjects like practice of ethics. In *Vikṣepaṇī kathā*, both the different beliefs such as jain-beliefs (*svasamaya*) and other-beliefs (*parsamya*) have been discussed together. When this type of *kathā* takes place between the Guru and Disciple, it is called *Vītarāga kathā*, when this type of *kathā* takes place with ones counterpart for the purpose of winning the debate it comes under the category of debatable *kathā*.

The purpose of the dialogue or *kathā*, is to remove

misconceptions and satisfy curiosity. So, we can say that there is a direct relation between dialogue and psychology. Well-known methods of psychology such as introspection and observation explain the internal-actions of logical argument. So the introspection method of Wilhelm Vunt and the observation method of Watson are related to true dialogue (*sadvāda*). The person of self-enlightened level, instead of interaction with others, performs self-dialogue and gains self-wisdom and hence is illuminated. The dialogue that goes on inside their mind can be considered as the method of introspection. Common people become informed by listening to the argument given by the Guru when he discusses some issues with the scholars then their style can be included under the method of observation. In this method his Guru and other persons discussing with the people to be informed after observing their mental activities with the help of arguments. In fact the mentality of the audience is analyzed and the answers are given in accordance with their psychological mind which satisfies the mind and the heart of audience or listeners.

In the present debatable arguments of Canonical literature psychology is clearly visible. For example- the treatises were not elucidated to *Sakḍālputra* directly by lord *Mahāvīra*, but by proving his earlier belief impractical, the importance of human effort has been proved. *Keśīśramaṇa* delivered only those counter arguments which nullified his argument to make him understand, but not any other argument. This is understandable that as long as one's own arguments are not found faulty, other's reason or belief doesn't become intelligible to him. Out of all these facts mind-reading-expertise of *Keśīśramaṇa* gets exposed well. *Keśī-Gautam's* argument is completely psychological. The necessity of change in the external practices and ethics has been explained there, after observing the fickle-nature of human mind. Wealth or poverty is not the instrument that creates the bondage of karma, but different good and bad activities of mind are the main causes here. The counter replies presented by the old-sage's after understanding the entangled thoughts dwelling in the mind of *Śramaṇopāsaka*'s proves

psychological only.

Conclusively it can be said that in dialogism (*Vāda-vidyā*) not only answers/replies are given with adequate logic, but replies are given after observing the mentality of the audience with the help of psychology, which satisfies both the mind and the brain of the audience.

References:-

1. Upāyahṛdya, first prakarṇa, page no. 1
2. Niśītha-cūrṇi, presented in Jain dharma kī hajāra śikṣāyen, p.203
3. Upāsakadaśāṅga, 7th chapter, Āgam prakāśana Samiti, Beawer
4. Rajpraśnīya Sūtra, sūtra 235-270, Āgam prakāśana Samiti, Beawer
5. Sūtrakṛtāṅga Sūtra, second śrutaskandh, 7th chapter, sūtra 846 Āgam prakāśana Samiti, Beawer
6. Uttrādhyayana Sūtra, 23rd chapter, Āgam prakāśana Samiti, Beawer
7. Vyākhyāprajňapti Sūtra, 1st śatak, 9th uddeśaka, sūtra 25-27
8. Vyākhyāprajňapti Sūtra, 2nd śatak, 5th uddeśaka, sūtra 16-19
9. Sthānāṅga Sūtra, 4th sthāna, sūtra 648
10. Sthānāṅga Sūtra, 4th sthāna, sūtra 246

-Post Doctoral Fellow, U.G.C., New Delhi
Sanskrit Department, Jai Narian Vyas University, Jodhpur (Raj.)

चिन्तन की मनोभूमि

संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

1. परदोष दर्शन का त्याग किये बिना निर्दोषता के साम्राज्य में प्रवेश ही नहीं हो सकता। -*दर्शन और नीति*
2. **परमात्म प्राप्ति**– व्याकुलता के बिना किसी प्रकार भी आप अपने अभीष्ट को नहीं पा सकते। -*संत समागम-2*
3. आपके और परमात्मा के बीच संसार पर्दा नहीं है, संसार से सम्बन्ध पर्दा है।

-संत उद्‌बोधन
-14, वरदान अपार्टमेंट, दिल्ली-110001

अध्यात्म

अहंकार त्यागें, सर्वहित अपनाएँ

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

आज चारों ओर अहंकार की ध्वनि तरंगित है। किसी को वैभव का गर्व है तो कोई ज्ञान पाकर गर्वित है। किसी को सत्ता के मद का गुरुर है तो किसी को रूप का घमण्ड है, तो कोई तप के अभिमान से भरपूर है। 'मैं' की दुनिया बहुत विस्तृत होने से इंसान सदा अहं के वस्त्र ओढ़े 'मैं' और 'मेरेपन' के गीत गाता रहता है। 'मैं' के साथ संसार प्रारम्भ होता है। संसार में दो आकर्षण ऐसे हैं जो 'मैं' को जगाते हैं, एक है 'समृद्धि' और दूसरा है 'प्रसिद्धि'। समृद्धि पाकर अहं जाग्रत होता है और 'प्रसिद्धि' (यश कीर्ति) मिलने पर ''मैं'' भभकता है। जिस क्षण 'मैं' का अहसास होता है वही 'अहं' का संकेत है। इसी 'मैं' के बीच जब कुछ मिल जाता है तब 'अहं' का आकार अहंकार बन जाता है। जो आध्यात्मिक पतन का प्रथम चरण होता है। ''मैं'' का अहंकार ही अपना सबसे बुरा परिचय देता है- ''मैं सही हूँ, मैं विनम्र हूँ, मेरे कारण ही तो यह संभव हो पाया है, इतने सारे लोग मेरे पास मार्गदर्शन और सहायतार्थ आते हैं, मैं कई सामाजिक/राजनैतिक/आर्थिक जगत् का कार्य करता हूँ, मैं अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्तियों वाला जागरूक इंसान हूँ''....आदि। अहंकार में व्यक्ति फूल सकता है, किन्तु फैल नहीं सकता। यह अहंकार ही सत्यदर्शन में बाधक बनता है। अपने स्वरूप को भूल कर जो कुछ भी सम्मुख देखता है, उसे ही सही मान लेता है। उसके फल को नहीं पहचान पाता। उसे किसी भी दृश्य पदार्थ का यथार्थ ज्ञान नहीं होता, प्रत्युत ज्ञान का अहंकार होता है। यह अहंकार न स्वार्थ को जानता है, न परमार्थ ही समझता है। इसीलिए सुख के पीछे दुःख भोगता है, लाभ के पीछे हानि देखता है, सम्मान के पीछे हीन-पराधीन हो जाता है। संयोग के पीछे वियोग से पीड़ित होता है और जीवन के पीछे मृत्यु देखता है। यह अहंकार अपने आगे एक विशाल संसार देखता है, पर अपने पीछे परमाश्रय को नहीं देख पाता। अहंकार ही पराजय का प्रवेश द्वार बन जाता है।

अहंकार शरीफ बदमाश है जो हर पल ठग रहा है। अहंकार ही भयंकर विषैला नाग है जो विष-वमन से जाने कितने लोगों को आहत और पीड़ित करता है। ''मैं'' की यह भावना किसी कर्म को पुण्यवर्द्धक नहीं बनाती है। अहंकारी चित्त कठोर परिणामी तथा 'स्व पर' विवेक रहित होता है। 'पर' की उपस्थिति से उसका ''मैं'' सजग हो जाता है। विनय गुण से रहित अभिमानी अपना वास्तविक स्वरूप न जानकर कर्मजनित सामग्री में अपनापन मानकर मद में चूर रहता है।

'मैं' से रिक्तता ही आत्मानुभव की एकमात्र पात्रता है, क्योंकि खाली गागर में ही सागर समा सकता है।

अहंकार से अपेक्षाओं का निर्माण होता है- ''चाहे कुछ भी हो, यह तो करना ही है, ऐसा तो होना ही चाहिए।'' जब अहं का उद्देश्य पूरा नहीं होता तब इसे सहन नहीं कर बेचैन हो जाता है। अपेक्षाएँ ही चिन्ता उत्पन्न कर अशांत-ईर्ष्यालु बना देती हैं।

अहं भौतिक मन का परिणाम होता है। यह अधिकाधिक इच्छाओं को उत्पन्न करता है तथा धन-दौलत, रुतबा और प्रसिद्धि पाने में जुट जाने एवं हासिल कर लेने के बाद भी असंतुष्ट बनाए रखता है।

अहंकार से स्वयं की निर्णय क्षमता समाप्त हो जाती है- अहंकार किसी दूसरे की बात सुनने नहीं देता, एकमात्र अपने ही दृष्टिकोण को सही मानता है। स्वस्थ सम्बन्ध सह अस्तित्व पर आधारित होते हैं पर स्वयं की श्रेष्ठता को महत्त्व देने के कारण स्वस्थ सम्बन्धों का निर्माण असम्भव हो जाता है। अहंकार से स्वार्थ के कीटाणु जन्म लेते हैं और स्वार्थ शुद्ध मूर्खता का नाम है। विनम्रता का अर्थ निःस्वार्थ होना है। निःस्वार्थता की खूबी ही आध्यात्मिकता का मूल होता है।

अहंकार को गलाना बहुत बड़ी साधना है। अहंकार के मर्दन से मार्दव गुण प्रकट होता है, जो आत्मानुभव को प्रशस्त करता है। स्वयं की प्रसिद्धि से नहीं सद्विचारों की प्रसिद्धि से सबका कल्याण होता है। जो प्रसिद्धि से दूर रहेगा और प्रसिद्धि में नहीं फूलेगा उसका 'मैं' सूखने लगेगा तभी अध्यात्म ज्ञान का शुभारम्भ होगा। 'मैं' विदा होने पर जीवन ही नहीं 'जीव' भी बदल जाता है। अहंकार भरे विचारों को अपने मन से हटाकर विनम्रता भरे विचारों को प्रमुखता देकर अपनी जीवनगाड़ी की धुरी में सर्वहित का ग्रीस लगाएँ ताकि अहंकार शून्य होकर जीवनगाड़ी बिना किसी अटकाव के निरन्तर आगे बढ़ सके एवं जीवनकाल में शान्ति एवं अमरता का अनुभव हो सके।

-''हुकम'', 5-ए/1, सुभाषनगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

क्रोध से कलह

श्री राजेन्द्रसिंह चौधरी

क्रोधी मनुष्य तप्त लौह पिण्ड के समान अंदर ही अंदर दहकता एवं जलता रहता है। उसकी मानसिक शान्ति नष्ट हो जाती है। विवेकपूर्ण कार्य करने की स्थिति समाप्त हो जाती है। क्रोध के कारण कोई व्यक्ति दूसरे का उतना अहित नहीं कर पाता जितना अहित वह स्वयं अपना कर लेता है। आज के इस युग में क्रोध ने घर-घर में झगड़े पैदा किये हैं। गृह-क्लेश की जड़ क्रोध ही है। *-42, प्रेमनगर, खेमे का कुआ, पाल रोड़, जोधपुर (राज.)*

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः99)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(नाणत्ता)

जिज्ञासा– संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि वैक्रिय के 27 घरों में आता है तब जघन्य गमे से किन-किन बोलों में नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है?

समाधान– संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि वैक्रिय के 27 घरों (7 नारकी के 7 घर, भवनपति से लेकर आठवें देवलोक तक के 20 घर, इस प्रकार कुल 27 घर) में आता है तब जघन्य गमों से आने पर निम्नांकित आठ बोलों में नाणत्ता पड़ता है।

1. अवगाहना 2. लेश्या 3. दृष्टि 4. ज्ञान 5. समुद्घात 6. आयु 7. अध्यवसाय और 8. अनुबंध।

जिज्ञासा– अवगाहना का नाणत्ता किस प्रकार से पड़ता है?

समाधान– जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय के उपर्युक्त 27 घरों में आता है तब उसकी स्थिति संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में जघन्य ही रहती है। यह अन्तर्मुहूर्त पर्याप्त अवस्था वाला समझना चाहिए क्योंकि पर्याप्तक जीव ही वैक्रिय घरों में आ सकता है।

अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले इस संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष तक की होती है। जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सामान्य रूप से (औघिक से) अवगाहना एक हजार योजन तक की मिलती है। अन्तर्मुहूर्त वाले उक्त जीव में सामान्य अवगाहना पूरी नहीं मिलती, इस कारण से अवगाहना का नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है।

जिज्ञासा– लेश्या का नाणत्ता किस प्रकार से माना जाता है?

समाधान– जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय घरों में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं, उनमें लेश्या का नाणत्ता पड़ता है। क्योंकि जो संज्ञी तिर्यंच नारकी के घरों में आकर उत्पन्न होता है, उस संज्ञी तिर्यंच में

अन्तर्मुहूर्त की स्थिति में स्वभावत: कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएँ ही मिलती हैं। तीन शुभ लेश्याएँ नहीं मिल पातीं। जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में समान्य रूप से छहों लेश्याएँ मिलती हैं, अत: तीन अशुभ लेश्याओं का नाणत्ता पड़ता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के घरों में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं, उन संज्ञी तिर्यंचों में कृष्ण, नील, कापोत और तेजो लेश्या, ये चार लेश्याएँ अन्तर्मुहूर्त के काल में मिल सकती हैं, किन्तु पद्म और शुक्ल ये दो लेश्याएँ स्वभावत: नहीं मिलतीं, इस कारण इन दो लेश्याओं का नाणत्ता माना जाता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से तीसरे, चौथे और पाँचवें देवलोक इन तीनों घरों में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं, उन संज्ञी तिर्यंचों में अन्तर्मुहूर्त के काल में शुक्ल लेश्या को छोड़कर शेष पाँच लेश्याएँ मिल जाती हैं। शुक्ल लेश्या नहीं मिलने से उसका नाणत्ता माना जाता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से छठे, सातवें, आठवें देवलोक में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं, उन संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अन्तर्मुहूर्त की स्थिति में छहों लेश्याएँ मिल सकती हैं, अत: इन तीनों देवलोकों में आने वाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियों में लेश्या का नाणत्ता नहीं पड़ता है।

उक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि जो जीव आगामी भवों में जहाँ जाकर उत्पन्न होने वाला है, वहाँ जो अंतिम लेश्या मिलती हैं, उससे पूर्ववर्ती सभी लेश्याएँ उस जीव में जघन्य गमे अर्थात् अन्तर्मुहूर्त की स्थिति में भी मिल सकती है, किन्तु उससे आगे की लेश्याएँ नहीं मिलती, इस कारण से लेश्या का नाणत्ता माना जाता है। जैसे जो संज्ञी तिर्यंच, नारकी में जाने वाला है तो उसमें प्रारम्भ की तीन लेश्या मिलती हैं, क्योंकि नारकी में अंतिम लेश्या कापोत है। भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के देवों में अंतिम लेश्या तेजो लेश्या है अत: इन घरों में आने वाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में प्रारम्भ की चार लेश्या

मिलती हैं, किन्तु बाद की दो नहीं। इसी प्रकार जो संज्ञी तिर्यंच जघन्य गमे से तीसरे, चौथे, पाँचवें देवलोक में आने वाले हैं, उनमें प्रारम्भ की पाँच लेश्याएँ मिल सकती हैं, किन्तु शुक्ल लेश्या नहीं।

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि जीवों में एक बार में एक ही लेश्या रहती हैं, किन्तु उत्पत्ति समय से लेकर मरण करने तक के अन्तर्मुहूर्त काल में उस संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अलग-अलग समयों में अलग-अलग लेश्याएँ रह सकती हैं। अन्तर्मुहूर्त के भी छोटे-बड़े की अपेक्षा अनेक (असंख्य) भेद हो जाते हैं। किन्तु इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जीव जिस लेश्या में आयु का बंध करता है, मरण के समय वहीं लेश्या उस जीव को प्राप्त हो जाती है तथा उसी लेश्या में वह जीव अगले भव में जाकर उत्पन्न होता है। अर्थात् आयु बंध के समय, मरण के समय तथा अगले भव में उत्पत्ति के समय, इन तीनों समयों में एक ही तरह की लेश्या रहती है।

जिज्ञासा- दृष्टि का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से नारकी के घरों में तथा भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी के घरों में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं, उनमें संज्ञी तिर्यंच के भव में एक मिथ्यादृष्टि ही पाई जाती है। शेष दो दृष्टियाँ नहीं मिलतीं, जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सामान्य रूप से तीनों दृष्टियाँ मिलती हैं, अत: मिश्रदृष्टि व सम्यग्दृष्टि इन दो दृष्टियों का नाणत्ता पड़ता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से पहले देवलोक से लेकर आठवें देवलोक तक के घरों में उत्पन्न होने वाले होते हैं, उनमें सम्यग्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि ये दो दृष्टियाँ मिलती हैं, किन्तु उनमें मिश्र दृष्टि नहीं मिलती। इस कारण ऐसे जीवों में मिश्र दृष्टि का नाणत्ता पड़ता है।

जिज्ञासा- ज्ञान का नाणत्ता किस कारण से माना जाता है?

समाधान- जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से नारकी के घरों में तथा भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी के घरों में आकर उत्पन्न होने वाले हैं, उनमें मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान ही मिल सकते हैं। जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सामान्यत: तीन ज्ञान, तीन अज्ञान मिलते हैं, अत: ऐसे

जीवों में मति, श्रुत, अवधि ज्ञान तथा विभंगज्ञान नहीं मिलने से तीन ज्ञान तथा एक विभंगज्ञान का नाणत्ता माना जाता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से पहले देवलोक से लेकर आठवें देवलोक तक के आठ घरों में आकर उत्पन्न होने वाले हैं, उनमें अन्तर्मुहूर्त के काल में मति-श्रुत ज्ञान अथवा मति, श्रुत अज्ञान ही मिलते हैं। अवधि ज्ञान तथा विभंग ज्ञान नहीं मिलता, अत: दोनों का नाणत्ता (अन्तर) माना जाता है।

जिज्ञासा- योग का नाणत्ता क्यों नहीं पड़ता है?

समाधान- जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय के घरों में जघन्य गमे से भी आते हैं तो भी वे पर्याप्तक ही आते हैं। पर्याप्तक होने के कारण उनमें मन, वचन और काया ये तीनों योग मिल ही जाते हैं, इस कारण से योगों का नाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- समुद्घात का नाणत्ता किस कारण से माना जाता है?

समाधान- जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय के घरों में आते हैं, उनमें वेदनीय, कषाय तथा मारणान्तिक ये तीन समुद्घात ही हो सकती हैं। वैक्रिय और तैजस ये दो समुद्घात नहीं कर पाते, जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में स्वभावत: पाँचों समुद्घात मिलती हैं। इसी कारण से वैक्रिय और तैजस इन दो समुद्घातों का नाणत्ता माना जाता है।

यद्यपि भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशक 9- देशबंध-सर्वबन्ध अधिकार से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाला संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि पर्याप्तक है तो वह वैक्रिय आदि लब्धि का प्रयोग कर सकता है, किन्तु पर्याप्तक होते ही आगामी भव का आयुष्य बंध कर लेता है, उस आयुष्य बंध के कारण से उसे आगामी भव में जाकर उत्पन्न होना होता है, अत: वे वैक्रिय लब्धि का प्रयोग नहीं कर पाते। बिना वैक्रियादि लब्धि प्रयोग के वैक्रियादि समुद्घात होना सम्भव नहीं है, इस कारण से जघन्य गमे में इन दोनों समुद्घात का नाणत्ता पड़ता है।

जिज्ञासा- आयु और अनुबंध का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- आयु और अनुबन्ध दोनों एक समान होते हैं। इसलिए ये दोनों बोल एक जैसे ही पाये जाते हैं। जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से

वैक्रिय के 27 घरों में उत्पन्न होने वाले होते हैं, उनकी आयु अन्तर्मुहूर्त की ही होती है। जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आयु जघन्य अन्तर्मुहूर्त से लेकर उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की होती है। जघन्य गमे वाले में जघन्य आयु ही मिलती है, मध्यम-उत्कृष्ट नहीं मिलती, अत: आयु का नाणत्ता माना जाता है। आयु के समान ही अनुबन्ध रहने से उसका भी नाणत्ता माना जाता है।

जिज्ञासा- अध्यवसाय का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से नारकी के घरों में उत्पन्न होने वाले होते हैं, उनमें अन्तर्मुहूर्त की उस आयु में मात्र अशुभ अध्यवसाय ही होता है, शुभ अध्यवसाय नहीं होता है।

जो संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से देवताओं के घरों में आकर उत्पन्न होते हैं, उनमें अन्तर्मुहूर्त की आयु में स्वभावत: शुभ अध्यवसाय ही होते हैं, अशुभ नहीं होते हैं। जबकि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में औघिक (सामान्य) रूप से दोनों प्रकार के अध्यवसाय पाये जाते हैं। अत: नारकी में आकर उत्पन्न होने वाले संज्ञी तिर्यंचों में शुभ अध्यवसाय का तथा देवों में आकर उत्पन्न होने वाले संज्ञी तिर्यंचों में अशुभ अध्यवसाय का नाणत्ता जघन्य गमे में पड़ता है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

हीरा गुरु श्रेयकारी है

श्री उम्मेदमल लुणावत

श्री हस्ती गुरु की पावन कृपा से ही हीरा गुरु को पाया है,
चरण-शरण पाकर के इनकी, जीवन उपवन महकाया है।
ज्ञान अनुत्तर दर्श अनुत्तर, चरित्र अनुत्तर भारी है।
गुरु कृपा भी रही अनूठी, हीरा गुरु श्रेयकारी है।
रत्नसंघ के नायक हो तुम, नित-नित वन्दन करते हैं।
जुग-जुग जियो हीरा गुरुवर काम्य कामना करते हैं।
प्राण प्रिय नयनों के तारे जीवन खूब निखारा है।
रहे गुरु कृपा आपकी यही अरदास करते हैं।

-लुणावत परिवार, मुम्बई (महा.)

युवा-स्तम्भ

युवा हुई युवक-परिषद् से अपेक्षा

श्री अरुण मेहता (FCA, FCS)

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के रजतवर्ष पर सभी सदस्यों, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

विगत पच्चीस वर्षों से कठिन परिश्रम व सेवा के तमाम कार्य करते हुए युवक परिषद् आज संघ की एक मजबूत सहयोगी संस्था एवं संगठन बन कर उभरी है, जिसमें सभी कार्यकर्त्ताओं व पिछले सभी पदाधिकारियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। युवक परिषद् व्यसन मुक्ति के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हुए, चतुर्विध संघ सेवा, सूचना-संग्रहण सेवा आदि क्षेत्रों में बहुत अच्छा कार्य कर रही है यह सभी के लिए खुशी एवं गर्व की बात है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् एक धर्म संघ है, श्रमण भगवान श्री महावीर के जिनशासन का अंग है और जिनशासन की सेवा में ही लगी हुई है। किसी भी धर्म संघ का प्रमुख कार्य ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना एवं अभिवृद्धि करना ही होता है, होना ही चाहिए। **इस प्रमुख कार्य में जितनी प्रगति होगी, उतनी युवक परिषद एवं उसके सदस्यों की प्रगति होगी।** इस प्रमुख कार्य को कहीं गौण तो नहीं कर दिया गया है, इस ओर भी ध्यान देना, चिन्तन करना आवश्यक है।

किसी भी पिता का पुत्र जब जवान होता है तो पिता अपेक्षा करता है कि पुत्र अब कुछ कमाई करे, कुछ पूंजी एकत्रित करे। आज रजत वर्ष पर श्रावक संघ को भी युवक परिषद् के सामने यह अपेक्षा रखनी चाहिए कि युवक परिषद् का प्रत्येक सदस्य समाई (सामायिक) की कमाई व प्रतिक्रमण की पूंजी से समृद्ध हो। ऐसा करके ही युवक परिषद् वास्तव में पूज्य श्री गुरु हस्ती के "सामायिक-स्वाध्याय महान्" के नारे को ज्ञान-क्रिया के रूप में परिणत कर सकती है, गुरु हस्ती को सच्ची आस्था अभिव्यक्त कर सकती हैं, गुरु हस्ती व गुरु हीरा के नारे को चिर-स्थायी बना सकती है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र जो धर्म संघ के प्रमुख अंग हैं- उसमें ज्ञान के क्षेत्र में ऐसी योजना बनाई जाए कि युवक परिषद् का हर सदस्य कम से कम सामायिक, प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल का जानकार हो। युवक परिषद् के अनेक सदस्य इसके जानकार हैं, कुछेक इससे भी आगे बढ़कर तत्त्व व आगम का विशेष ज्ञान रखते हैं, लेकिन जितने सदस्य जानकार हैं उनसे कहीं अधिक सदस्य नहीं

जानने वाले हैं। इसी कारण से आज स्थान-स्थान पर प्रतिक्रमण करवाने वालों की कमी अनुभव की जा रही है। मेरा ऐसा अनुमान है कि लगभग दस प्रतिशत सदस्य ही इसके जानकार हैं (हालांकि हमारी खुशी इसमें होगी कि यह अनुमान वास्तविकता में उलटा निकले)। युवक परिषद् अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि शाखाशः सदस्यों की सूची बनाकर शीघ्रातिशीघ्र यह जानकारी एकत्रित करें कि कितने सदस्य इनके जानकार हैं और कितने नहीं। फिर जो नहीं जानने वाले हैं उनको युवक परिषद् एक निश्चित कार्यक्रम बनाकर अपने वर्तमान कार्यकाल में यह प्रयास करे कि कैसे अधिक से अधिक सदस्यों को सामायिक, प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल के ज्ञान से समृद्ध बनाया जाए।

जब सदस्यों का ज्ञान समृद्ध होगा, तत्त्व की मूलभूत जानकारी होगी तो दर्शन विशुद्धि भी होगी। चारित्र के क्षेत्र में नित्य सामायिक करना अच्छा है, लेकिन परिषद् के सदस्यों को सप्ताह में एक सामायिक तो अनिवार्य रूप से करके चारित्र से भी समृद्ध होना ही चाहिए। इस तरह ज्ञान-दर्शन-चारित्र के कार्यक्रम को युवक परिषद् प्रमुख कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ करके अपने कदम आगे बढ़ायेगी तो जिनशासन व संघ की सच्ची सेवा हो सकेगी। वर्तमान पदाधिकारियों को इसे एक अवसर समझकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र के कार्यक्रम को युवक परिषद् का प्रमुख कार्यक्रम बनाकर सार्थक प्रयास करना चाहिए और अधिक से अधिक युवकों को इसे समृद्ध करने में ही अपनी सफलता समझनी चाहिए।

आज यह बीच की पीढ़ी ही कमजोर कड़ी साबित हो रही है, जिस कारण से बच्चों में भी संस्कारों की कमी महसूस हो रही है। संस्कार केन्द्र बच्चों को संस्कारित करने का अथक प्रयास कर रहा है, लेकिन उसमें आशातीत सफलता तभी मिल सकती है जब यह बीच की पीढ़ी भी आधारभूत ज्ञान (सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल) से समृद्ध हो। रजत वर्ष पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के समस्त सदस्यों व पदाधिकारियों को पुनः हार्दिक बधाइयाँ एवं मंगल शुभकामनाएँ।

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर
-467-ए, सातवीं 'ए' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

विचार-कणिकाएँ

श्री पीरचन्द चोरडिया

1. किसी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति देखकर उसका मजाक मत उड़ाओ, क्योंकि समय में इतनी ताकत होती है कि वह कोयले के टुकड़े को भी हीरे में बदल देती है।
2. दुनिया में 'दान' जैसी कोई सम्पति नहीं, लालच जैसा कोई रोग नहीं, अच्छे स्वभाव जैसा कोई आभूषण नहीं और संतोष जैसा कोई सुख नहीं। *-माणक चौक, जोधपुर (राज.)*

नारी-स्तम्भ

संस्कारों की जननी : नारी

ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभा जैन

संसार में जीवन जीने के लिए दो का सहयोग अनिवार्य है। इसके लिए हम विश्व की संरचना पर दृष्टि डालें तो पायेंगे कि परिपूर्ण व सारभूत मूल तत्त्व (द्रव्य) दो ही हैं- जीव और पुद्गल। संसार की अनवरत शृंखला इन दो के परस्पर संयोग-समागम के अभाव में संभव नहीं है। वैसे ही नारी और नर दोनों के योग से व्यावहारिक जगत् चलता है।

नारी और नर दोनों की अपनी-अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो संसार में, पारिवारिक अनेक सम्बन्धों के रूप में देखी जाती है, जैसे- माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, मामा-मामी आदि षोडश रिश्तों की बुनियाद एक स्त्री व एक पुरुष के सम्बन्धों से बनती चली जाती है।

देखना यह है कि नारी का भारतीय धर्म दर्शन समाज में क्या स्थान है? सम्पूर्ण भारतवर्ष के धर्म-दर्शनों में नारी को पूजनीय माना जाता है तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।''

नारी का स्वरूप

नारी माता, भार्या, बहिन, पुत्री आदि अनेक नामान्तरों को व तदनुरूप गुणधर्म को धारण करने वाली है। नारी इस जगत का सौन्दर्य है, आभूषण है। जो चूड़ामणि रत्न की भांति सुशोभित होती है। नारी सृष्टि की सजीवता का आधारभूत है। नारी जगत का सौहार्द है, जिसमें कि पूर्ण संवेदना व सहिष्णुता का दर्शन होता है। नारी संस्कारों की संजीवनी है। नारी राष्ट्र का गौरव है। नारी में नारीत्व उसकी मधुरता व सहिष्णुता से ही उत्पन्न होता है।

नारी के श्रेष्ठ गुण धर्म

चौसठ कलाओं में निपुण नारी ही देश व समाज को गौरव प्रदान करती है। नारी का प्रमुख गुण उसका मातृत्व भाव है। श्रेष्ठ नारी एक श्रेष्ठ साधक सदृश होती है। वह समता, संयम, सहजता, सजगता, सरलता, सहृदयता, सजीवता की जीवन्त मूर्ति है। सहिष्णुता व संवेदनशीलता की एक मिसाल है। नारी शीलवती, विनयवती, प्रज्ञावती, विवेकवती होती है। सदाचार में, आज्ञापालन में, सात्त्विकता में निपुण होती है। हित-मित-प्रियभाषी व मधुर व्यवहारिणी होती है। श्रेष्ठ गुणों से युक्त नारी सबके हृदय में स्थान व सम्मान पाती है, सबके दिलों को भाती है।

नारी : संस्कारों की जननी

नारी में कुम्भकार की भांति नाना संस्कारों से युक्त पात्रों का (भाजनों का) निर्माण करने की सामर्थ्य है, कहा भी है-"उपाध्यायान्दशाचार्य, आचार्याणां शतं पिता सहस्रांस्तु पितृन् माता, गौरवेणातिरिच्यते।[1] अर्थात् दश उपाध्यायों से एक आचार्य, सौ आचार्यों से एक पिता और एक हजार पिताओं से एक माता श्रेष्ठ होती है। A Good Mother is better than Hundred Teachers. एक अच्छी माँ सौ शिक्षकों से अच्छी होती है।

एक नारी जो मातृत्व शक्ति से युक्त है, वह चाहे तो अपनी संतान को धर्म, राष्ट्र व समाज के नेतृत्व योग्य बना सकती है। श्रेष्ठ संस्कारों से संस्कारित करके भगवान महावीर, राम आदि के समान सर्वतोमुखी प्रतिभाशाली, राजा हरिश्चन्द्र व गाँधीजी के समान सत्यवादी, अहिंसक दीवान अमरचन्द जी के समान शेर को जलेबी खिलाने में समर्थ, लिंकन के सदृश परोपकारी, भामाशाह के समान निःस्वार्थ दानवीर, अर्जुन जैसे वीर, एकलव्य जैसे गुरुभक्त, श्रवण कुमार जैसे मातृ-पितृ भक्त, राम जैसे आज्ञाकारी, लक्ष्मण जैसे भातृप्रेमी, अकलंक एवं हरिभद्र सम धर्मरक्षक बनाकर इतिहास में अजर-अमर बनने की शक्ति जगा देती है, सामर्थ्यवान बना देती है।

भारतवर्ष में पुत्र को 'कुलदीपक' की उपमा दी है और पुत्री को 'उभय कुल विकासिनी' कहा है। इसलिए पुत्री का सुसंस्कारित होना अति अनिवार्य होता है, क्योंकि स्वयं संस्कारित बीज ही संस्कारित वृक्ष व फल को उत्पन्न कर सकता है तथा शोभा बढ़ाने वाला होता है। श्रेष्ठ संस्कारों के कारण ही आदर्श नारियों का सम्मानपूर्वक नाम स्मरण किया जाता है। नारी के द्वारा प्रदत्त समीचीन और असमीचीन संस्कारात्मक बीजारोपण का प्रतिफल समाज व देश के जन-समुदाय में दृष्टिगोचर होता है। इन सबके पीछे महत्त्वपूर्ण भूमिका नारी की ही है। तत्पश्चात् पारिवारिक व सामाजिक सदस्य व मित्र मण्डली की संगति प्रभावशाली होती है।

नारी द्वारा प्रदत्त सुसंस्कार ही मनुष्य को सशक्त, सजग, साहसी, समन्वयी, सहज, सज्जन, सन्मार्गी, सक्रिय, सहिष्णु, संवेदनशील, समभावी, सद्भावी, सम्यक् सोच वाला, संशोधन व संवर्धन की सामर्थ्यवाला, समग्र व सर्वमान्य की भावना से परिपूर्ण बना देता है। भारतीय परम्परा में पुत्री जब ससुराल जाती है उस समय माता-पिता द्वारा शिक्षा 'सीख' के रूप में दी जाती है, जिसे पुत्री को सदैव ध्यान में रखकर सुखी जीवन बिताना होता है। ऐसी ही शिक्षा प्राचीनकाल से दी जा रही है- जैसी कि सीता के प्रस्थान के समय जनक ने शिक्षा दी-

अभ्युत्थानमुपागते गृहपतौ तद्भाषणे नम्रता।
तत्पादार्पितदृष्टिरासनविधि तस्योपचर्यां स्वयं।।
सुप्ते तत्र शयीत तत्प्रथमतो जह्याच्च शय्यामिति।
प्राज्ञैः पुत्रि निवेदिताः कुलवधूसिद्धान्तधर्मा इमे।।[2]

हे पुत्री! पति के घर आने पर उनका सत्कार करने के लिए उठकर खड़ा होना, जो कुछ कहे उसको विनयपूर्वक सुनना, उनके आसन पर बैठ जाने पर उनके चरणों में दृष्टि रखना, स्वयं उनकी सेवा करना, उनके सोने (शयन करने पर)पर सोना और उनके उठने के पहले उठना। ये सब प्रज्ञावान पुरुषों ने कुलपुत्रियों का धर्म कहा है।

प्रेम, करुणा, सौहार्द व मानवीय गुणों से परिपूर्ण नारी ही संस्कार, समाज व सुसंतति की जननी हो सकती है।

धर्मनिष्ठ व शील सौन्दर्य से सुशोभित भारतीय नारी

प्राचीन इतिहास उठाकर देखने से ज्ञात होता है कि भारतीय नारी पूर्णतः धर्मनिष्ठ मानवीय सद्भावों (मूल्यों) से परिपूर्ण व शील-सौन्दर्य से सुशोभित रही है। अपने शील व धर्म के रक्षार्थ अनेक कष्टों, संघर्षों को अद्भुत साम्यभाव से वहन करते रहने से उसकी सहनशीलता की पराकाष्ठा का दर्शन होता है साथ ही उसके धैर्य व कर्म सिद्धान्त की मर्मज्ञता का परिज्ञान होता है। नारी ने हँसते-मुस्कराते हुए, इष्ट का स्मरण करते हुए क्षमाशीलता का परिचय दिया। जो वर्तमान समय में प्रेरणा का स्रोत है। ऐसी महान् विभूतियाँ इस भारत भू पर हुई जिनका नाम स्मरण करने में गौरव की अनुभूति होती है- महासती अंजना, सती मैनासुन्दरी, सती सीता, सती द्रौपदी।

सहिष्णुता व संवेदनशीलता की देवी नारी कर्मठता व वीरयोद्धा के गुणों से समलंकृत थी। घर, परिवार, समाज, देश, राष्ट्र में सर्वत्र ही नारी को सहिष्णु व संवेदनशील देखा जा सकता है। कर्मठता व वीर योद्धा के गुणों से युक्त नारी को अबला नहीं समझना चाहिए। नारी में नारीत्व के गुण ही नहीं, पुरुषत्व के गुण भी समय आने पर अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं, जैसे- लक्ष्मीबाई झांसी की रानी देशरक्षिका के नाम से जानी जाती है। पन्नाधाय, मीराबाई जैसी भक्तशिरोमणी, कुशल नेतृत्व से युक्त प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी आदि अनेक नारियों ने यश प्राप्त किया है।

नारी : समाज का सौन्दर्य

नारी= न+आरी= जो आरी (लकड़ी काटने का शस्त्र) के सदृश काटने का नहीं, अपितु घर, परिवार, समाज, देश व राष्ट्र में जोड़ने का कार्य करे, वही नारी है।

नारी= न+अरि= जो शत्रु न हो स्व की और पर की, वह है नारी। प्राणिमात्र में मैत्री का भाव पैदा करे, सेवा, सहयोग व समर्पण की भावना से युक्त हो, वह कहलाती है नारी।

ऐसी नारी ही समाज के लिए, परिवार के लिए व राष्ट्र के लिए वरदान सिद्ध होती है। ऐसी नारी ही समाज का सौन्दर्य बनती है। वही शील शिरोमणी बन पाती है। एक नारी जन्म से लेकर मरण काल तक अनेक धर्मों को धारण करती है। सबसे पहले वह मंगलस्वरूप कन्या बाला का रूप धारण करती है, फिर युवती के रूप में मातृत्व शक्ति को धरती है, फिर प्रौढ़ा बनकर अन्त में वृद्धा स्वरूप को धारण करती है। एक नारी अपने पति के साथ जीवन-यापन करती हुई भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न रूप को धारण कर लेती है। अपने पति को भोजन कराते समय एक पत्नी माँ का स्वरूप धारण करती है। सलाह-मन्त्रणा में मंत्री का रूप धारण करती है और सुख-दुःख में मित्र की भाँति साथ रहती है।

नारी जगत में धैर्य, क्षमा, गृहलक्ष्मी के गुणों से सुशोभित है, यदि नारी अपने नारीत्व धर्म से च्युत हो जाये तो नर का जीवन निराधार हो जायेगा। नारी और नर सांसारिक व पारमार्थिक सदाचरण के मार्ग पर चलने वाले एक गाड़ी के दो पहिये हैं। एक रथ है तो एक सारथी है। एक-दूसरे के पूरक हैं। इसलिए इनको सहधर्मिणी व सहधर्मी शब्द से भी सम्बोधन किया जाता है।

विद्या ग्रहण में नारी का स्थान

युग के आदि में आदिब्रह्मा श्री आदिनाथ भगवान (ऋषभदेव) ने अपने राज्यकाल में अपने पुत्र-पुत्रियों को विद्याध्ययन कराते समय सबसे पहले अपनी पुत्रियों को ब्राह्मीलिपि व अंकलिपि का ज्ञान प्रदान किया। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे भारत देश में प्राचीन काल से ही नारी को शिक्षा-जगत् में प्रमुख स्थान दिया गया। सभ्य-शिष्ट-शिक्षित-नारी समाज, देश की धरोहर है, शान है, सम्मान है।

जगत प्रसिद्ध नारी समाज

विश्व प्रसिद्ध देवी दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी की प्रतिमूर्ति कहलाने वाली अनेक नारियाँ हुई हैं, जो अपने श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठ कार्यों से जगत् में यश और अपयश को प्राप्त हुई हैं। पतिपरायणा व शीलधर्म में प्रसिद्ध मैनासुन्दरी[3] जिसने कुष्ठ रोगी पति से विवाह कर प्रसन्नतापूर्वक हृदय से सेवा की और अपनी सेवा के माध्यम से तथा जिनेन्द्र की भक्ति से राजा श्रीपाल को कुष्ठ रोग से मुक्ति प्रदान करवाई। सती सीता ने अपने शील के प्रताप से अग्नि को नीर बना दिया।[4] अंजना सती[5] ने बाईस वर्ष तक पति-प्रेम का वियोग सहा, परन्तु अन्यत्र नहीं गई, बल्कि पुत्र पवन कुमार को ही हृदय का हार बनाये रखा। सासु केतुमति के

द्वारा कंलकित कर दिये जाने पर भी, घर से निकाल देने पर भी किसी पर दोषारोपण न करके, कर्म की विचित्रता पर विचार करते हुए वन की गुफा में हनुमान पुत्र-रत्न को जन्म दिया। यह अंजना सती की सहनशीलता की पराकाष्ठा थी। उसके स्थान पर आज (वर्तमान) के परिवेश में पल्लवित हो रही युवतियों पर ऐसा कष्ट आ जाए तो तलाक, कोर्ट-केश आदि क्या-क्या कृत्य करने पर उतारू हो जाती हैं। उन जैसी धीरता व सहनशीलता पति-भक्ति जैसे गुण दीपक लेकर ढूँढने निकलें तो बड़ी कठिनाई से एक-आध कोई मिल जाए तो बड़ा आश्चर्य होगा। धार्मिक पुराणों, आख्यानों में अनेक देवियों, सतियों के नाम दर्ज हैं, जिनमें धैर्य, योग्यता, सहनशीलता कूट-कूट कर भरी थी; सोमासती, रानी दमयंती, सती द्रौपदी, सती सावित्री आदि।

आधुनिक युग की नारी

प्राचीनकाल में नारी स्वतन्त्र, स्वाधीन व स्वाभिमान से सम्पन्न थी। मध्यवर्ती काल में नारी का शोषण हुआ। दहेज आदि की प्रताड़नाओं से गुजरना पड़ा और वर्तमानकाल में नारी ने शिक्षा में श्रेष्ठता हासिल की है। भौतिकता की अंधाधुंध दौड़ में नारी पद, पैसा व सम्मान के क्षेत्र में अग्रणी हो रही है। परन्तु उनके अन्दर मातृत्वभाव का अभाव सा प्रतीत होने लगा है। यही कारण है कि वे इस मंहगाई के गुजरते दौर में दो संतान से अधिक जन्म देना ही नहीं चाहती। कुछ तो एक में ही संतुष्ट हो जाती हैं। भविष्य की उनको चिन्ता ही नहीं। कई बार वे भ्रूण हत्या जैसे घृणित कार्य से भी नहीं हिचकिचाती। ऐसी नारी ही अधम कार्य को करती हुई अपने मानवीय मूल्यों का ह्रास करती है। सभ्य-शिष्ट कुलीन नारी ऐसे घृणित कार्यों से सदैव दूर रहती है।

जागरूकता की आवश्यकता

नारी को अपने सम्यक् तन-मन-चेतन को स्वस्थ रखने के लिए समीचीन आचार-विचार, आहार-विहार, परिवेश व परिधान की ओर दृष्टिपात करना होगा। तभी नारी-समाज की समुचित सुरक्षा संभव है। नारी स्वतन्त्रता व स्वाभिमान से युक्त जीवन जी सकती है। वह हित-भुक्, मित-भुक्, प्रिय-भुक् (भोजन) हो तथा हितकारी, अल्प एवं रुचिकर आहार का सेवन करे। साथ ही गमनागमन मर्यादित हो। अपने स्वाभिमान व शील की रक्षा के लिए सदैव सतर्क रहे। सदैव सबल व सशक्त बनने का पुरुषार्थ करें। उसे अपने इर्द-गिर्द, सर्वत्र सौहार्दमय वातावरण बनाये रखने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

नारी को परिधान इस प्रकार के पहनने चाहिए जो फूहड़ एवं विकारोत्तेजक न हों। तन भी ढका रहे एवं शालीनता भी सुरक्षित रहे। उसे स्वास्थ्य के लिए हितकर आहार का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि वह स्वयं भी स्वस्थ रहे एवं परिवारजनों को भी स्वस्थ रख सके।

जो नारी मर्यादित जीवन से दूर भागती है वह संसार में शूर्पणखा सदृश निंदनीय होती है। दुश्चरित्र नारी क्रूर से क्रूर कर्म करने से भी नहीं कतराती है। इसी कारण छट्ठी नरक में जाने का पात्र बनती है। कुलटा नारी समाज, देश, घर-परिवार पर अभिशाप व अशान्ति का कारण होती है। असभ्य और अशिष्ट नारियाँ ही मानवीय मूल्यों का ह्रास करती है एवं नारी समाज को कलंकित कर देती है, अतः नारी नारी के हृदय को समझ कर, उसकी अमानवीय विडम्बना पर विचार कर विवेकपूर्वक उसका प्रतिकार करे, मंथरा जैसा कार्य न करे।

हमारे देश के रीति-रिवाज, रहन-सहन, क्रिया-कलाप, सभ्यता व संस्कृति, आचार-विचार सब उच्च कोटि के रहे हैं। इसलिए प्रत्येक भारतीय नारी का कर्त्तव्य है कि हमें पाश्चात्त्य सभ्यता व संस्कृति की बुराइयों से बचते हुए अपने जीवन को उच्च व आदर्श बनाते हुए, सुसंस्कारों के मानसरोवर में डुबकी लगाते व लगवाते हुए आदर्श घर, परिवार, समाज, देश व राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान करना चाहिए। अमृता बनकर सबको चिरंजीवी बनने में अहम् भूमिका अदा करनी चाहिए। तब ही भारत में नर से अधिक नारी का महत्त्व आंका जा सकता है।

संदर्भ सूची-

1. संस्कार मञ्जूषा, आर्यिका विज्ञानमतिजी
2. सागार धर्मामृत, पं. आशाधरजी
3. श्रीपाल चारित्र, सकलकीर्ति आचार्य विरचित
4. पद्मपुराण, आचार्य रविषेण
5. प्राकृत स्वयं शिक्षक, अंजनासुन्दरी कहा

-37, एफ, विवेक विहार, जगतपुरा, जयपुर-302017(राज.)077427-60749

जीवन बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

गुरु

हे गुरुदेव! मुझे चाहिए
आपकी करुणामय कृपा का बल,
आपकी आत्मीयता का जल,
आपके सान्निध्य के सुनहरे पल,
समझो मेरा जीवन हुआ सफल।

क्रोध

क्यों नहीं आती आपको शरम,
छोटी-छोटी बातों में
हो जाते हो गरम।

विकार

क्यों बनते हो आप विकारी,
यह है अपने आप पर अपराध भारी।

शोधालेख

प्राकृत भाषा में 'ण' और 'न' का प्रयोग

श्री जम्बूकुमार जैन

प्राकृत भाषा में 'ण' का अथवा 'न' का या 'ण' व 'न' दोनों का प्रयोग किया जाना चाहिए, इस संबंध में स्थिति स्पष्ट नहीं है। कुछ लोग केवल 'ण' का, कुछ लोग केवल 'न' का तथा कुछ लोग दोनों का प्रयोग कर रहे हैं। इस संबंध में सही क्या है इस स्थिति पर पहुँचा जाना अति आवश्यक है, ताकि अनेक प्रश्न जो उठ रहे हैं उनका समाधान किया जा सके। इस लेख में इसका प्रश्नोत्तर के माध्यम से समाधान किए जाने का प्रयास किया जा रहा है :-

प्रश्न 1. क्या प्राकृत भाषा में केवल 'ण' का प्रयोग होता है अथवा केवल 'न' का अथवा दोनों का?

उत्तर- प्राकृत भाषा में जो वर्णमाला पायी जाती है उसमें 'ण' और 'न' दोनों वर्ण सम्मिलित है। अत: प्राकृत भाषा में 'ण' और 'न' दोनों का प्रयोग पाया जाता है। अत: प्राकृत भाषा में केवल 'ण' का अथवा 'न' का प्रयोग करना उचित नहीं है। प्राकृत में बनने वाले शब्दों में 'ण' और 'न' दोनों के प्रयोग देखे जाते हैं।

प्रश्न 2. 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग कहाँ किया जाना चाहिए?

उत्तर- 'न' के स्थान पर 'ण' की प्राप्ति के सम्बन्ध में प्रचलित नियम हेमचन्द्राचार्य कृत प्राकृत व्याकरण में इस प्रकार है:-

(अ) नो ण: ।। 1.228।।

यदि किसी शब्द में 'न' वर्ण किसी स्वर से परे हो तथा असंयुक्त और अनादि में हो तो उस 'न' वर्ण का 'ण' हो जाता है। असंयुक्त से तात्पर्य है जो संयोग में स्थित नहीं हो, जैसे भिन्न, प्रश्न में न संयुक्त है तथा नव, कनक में असंयुक्त है। अनादि से तात्पर्य है कि शब्द में 'न' आदि में नहीं हो (सर्वप्रथम नहीं हो) जैसे- नट, नव में 'न' आदि में है तथा कनक, मानक में 'न' अनादि में है। इस सूत्र के उदाहरण के रूप में- **कनकम् = कणयं, मदनः = मयणो, वचनम् = वयणं, मानयति = माणइ।** आर्ष प्राकृत (अर्द्धमागधी प्राकृत) में अनेक शब्द ऐसे भी पाए जाते हैं, जिनमें 'न' वर्ण स्वर के पश्चात्, असंयुक्त और अनादि रूप होता है फिर भी उस 'न' वर्ण का 'ण' नहीं होता है। जैसे- *आरनाळं=*

आरनालं। अनिल : = अनिलो। अनलः = अनलो।

(ब) वादौ ।। 1-229।।

किन्हीं किन्हीं शब्दों में यदि 'न' वर्ण आदि में स्थित हो और वह असंयुक्त हो तो उस 'न' का वैकल्पिक रूप से 'ण' हो जाया करता है। जैसे- नरः = णरो अथवा नरो। नदी= णई अथवा नई। नेति = णेइ अथवा नेइ। आदि में स्थित 'न' वर्ण संयुक्त होने पर 'ण' नहीं होगा जैसे- न्यायः = नाओ।

(स) निम्बनापिते लण्हं वा।। 1-230।।

निम्ब शब्द में स्थित 'न' का वैकल्पिक रूप से 'ल' होता है तथा नापित शब्द में स्थित 'न' का वैकल्पिक रूप से ण्ह होता है। जैसे निम्ब = लिम्बो अथवा निम्बो। नापितः = ण्हाविओ अथवा नाविओ।

(द) वृन्ते ण्टः।। 2-31।।

वृन्त शब्द में स्थित संयुक्त व्यंजन 'न्त' के स्थान पर ण्ट की प्राप्ति होती है। जैसे- वृन्तम् = वेण्टं। यहाँ विशेष शब्द के लिए नियम है।

प्रश्न 3. 'ण' के स्थान पर क्या परिवर्तन होते हैं?

उत्तर- 'ण' के स्थान पर वैकल्पिक रूप से न की प्राप्ति का विधान-

वेणौ णो वा।। 1-203।।

वेणु शब्द में स्थित 'ण' का विकल्प से ल होता है। जैसे- वेणुः = वेलू अथवा वेणू।

प्रश्न 4. प्राकृत शब्दों में आदिवर्ण में 'न' का प्रयोग करना चाहिए अथवा 'ण' का ?

उत्तर- आदि में स्थित न असंयुक्त हो। तो उस 'न' का वैकल्पिक रूप से 'ण' होता है। प्राकृत में आदि 'न' का नित्य 'ण' होने का विधान नहीं है। अतः आदि में 'न' होने पर 'न' एवं 'ण' दोनों के प्रयोग देखे जाते हैं। यहाँ ऐसे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं जिनमें आदि में स्थित 'न' का 'ण' हुआ है- णइअ, णगल, णच्चा, णच्चाणं णमोयार, णवइ, णवयार, णवर, णवरि, णव्वइ, णहअर, णाउण, णिक्खमइ, णिडाल, णिसढ, णीइ णीम, णेह णहाविअ,

आदि में स्थित 'न' के उदाहरण- नए, नक्कं, नगिण, नच्चाण, नवकार, नमोक्कार, नियाग, निसढ, नीम, निस्साए

(आर-पिशल रचित 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' पुस्तक से प्रदत्त उदाहरण) णरअ, णणंदा, णत्थि, णयर, णर, णरिन्द, णव, णाण, णासिआ, णिच्च, णियम, णिरवराह, णिव, णेत्त,

नयण, नहं, निक्किट्ठ, निवास, निहि

प्रश्न 5. प्राकृत शब्दों में आदि अक्षर को छोड़कर अन्य स्थानों पर आए हुए न के स्थान पर 'न' का प्रयोग करना चाहिए अथवा 'ण' का ?

उत्तर– जैसा कि प्रश्न नं. 2 के उत्तर में स्पष्ट किया गया है कि जब निम्न शर्ते पूरी होती हो तो आदि अक्षर को छोडकर अन्य स्थानों पर आए हुए 'न' का 'ण' हो जाता है– 1. आदि में स्थित न हो, 2. संयुक्त न हो। यहाँ पर विकल्प की बात नहीं कही गयी है अत: यहां 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग किया जा सकता है। यद्यपि इसके भी अर्द्धमागधी प्राकृत में अपवाद हैं जो प्रश्न संख्या 2 के उत्तर में स्पष्ट किए गए हैं।

प्रश्न 6. आगमों में वर्णित कुछ शब्द बताइए जिनमें 'न' 'ण' का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– सुत्तागमे में आए हुए कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं–(शब्द के आगे कोष्ठक में पृष्ठ संख्या दी गई है) अणगारा, णेव, नेव (4) नेवन्नेहिं (4)पूयणाए (4) अणेगरूवे (4) विणयं (6) णियगा (7) नूणं (489) नमंसिता (634) अहा निव्वत्ति काले (635) नाइमहुरेहिं (640) निरवसेसे (769) निग्गंथे (961) ठाणा (175) नयरस्स (174)

प्रश्न 7. सारांश रूप में क्या परिणाम निकाला जा सकता है–

उत्तर– सारांश रूप मे उक्त विवेचन से निम्न परिणाम निकलता है–

1. प्राकृत में शब्द के आदि में 'न' एवं 'ण' दोनों का प्रयोग किया जा सकता है। इसलिए कुछ शब्दों में 'ण' तथा कुछ शब्दों में 'न' का प्रयोग किया जाना चाहिए। लेकिन एक सूत्र में एक ही वर्ण का प्रयोग उचित रहता है। जैसे नवकार मंत्र में आदि में आए हुए शब्दों में या तो 'न' का प्रयोग किया जाना चाहिए या 'ण' का। हाथी गुम्फा शिलालेख में 'नमो अरिहंताणं' आदि पदों में 'न' का प्रयोग हुआ है। एक शब्द में 'न' का एवं दूसरे में 'ण' का प्रयोग उचित नहीं है। **कुछ ऐसे शब्द जो आगम के पाठों में पुरातन रूप से चले आ रहे हैं उनमें छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए।** यदि उनमें 'न' का प्रयोग हुआ है तो उसे 'ण' में परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए। यदि 'ण' का प्रयोग हुआ है तो उसे 'न' में परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए। इसके लिए पुराने मुद्रित आगम देखे जा सकते हैं।

2. शब्द के अनादि में स्थित 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग प्रश्न संख्या 5 के उत्तर में वर्णित शर्ते पूरी होने पर किया जा सकता है। यहाँ अधिकतर परिवर्तन होता है। कुछ शब्दों में 'न' भी रहता है जो अपवाद स्वरूप माना जाना चाहिए।

–जयपुर (राज.), मोबाइल नं. 094600-36788

अध्यात्म

ध्यान तथा ऊर्जा

श्री प्रमोद महनोत

जैन धर्म के अनुसार ध्यान चार प्रकार के कहे गये हैं- 1. आर्त्तध्यान, 2. रौद्रध्यान, 3. धर्मध्यान और 4. शुक्लध्यान। जब एक बेबस इन्सान किसी की शिकायत करता है या आलोचना करता है तो वह आर्त्तध्यान करता है। इष्ट के वियोग एवं अनिष्ट के संयोग में आर्त्तध्यान होता है। ऐसा करते वक्त वह बाकी सब भूल जाता है। स्वयं की सुध नहीं रहती एवं पूरी तरह से आलोचना करने में तल्लीन हो जाता है। रौद्रध्यान क्रोध से सम्बन्धित है जिसकी परिणति रौद्र रूप में भी हो सकती है। इन्सान के साथ कुछ गलत घटित हो जाता है, जिसका कारण वह खुद को नहीं मानकर किसी और को दोषी ठहराना चाहता है और अपना आपा तक खो देता है। अपने सकारात्मक लक्ष्य से भटक जाता है और अन्ततः खुद का नुकसान कर लेता है। आर्त्तध्यान तथा रौद्र ध्यान में लिप्त रहने के लिए कोई पूर्व तैयारी नहीं करनी होती, न ही कोई खास प्रयास करना होता है, पर मन चूँकि उन्हीं खयालों में समाया रहता है अतः ऊर्जा व्यर्थ ही खर्च होती है तथा हमें आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट डालती है। इस तरह से हमें कोई सुखद प्राप्ति न होकर सिर्फ दुःख ही दुःख हाथ में आता है। धर्मध्यान हमारी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में ले जाता है, जिससे ऊर्जा का संग्रह होता है। जबकि आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान में ऊर्जा का सिर्फ अपव्यय होता है। आवश्यकता है हमारी आर्त्तध्यान एवं ध्यान की ऊर्जा क्षमता को सही और सकारात्मक दिशा में लगाने की, जिससे हम 'धर्मध्यान' में प्रवेश कर सकें। शुक्लध्यान में अच्छी बुरी किसी भी इच्छा, आपूर्ति की भावना नहीं रहती, मन शून्य हो जाता है, अतः इससे हमारी ऊर्जा नष्ट नहीं होती।

वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा गया है और आत्मा के शुद्ध स्वभाव को शुक्ल ध्यान कहा है, स्वभाव में स्थित होने के लिए किए गए सत् पुरुषार्थ को धर्म ध्यान और शुद्ध स्वभाव में स्थिरता होने को शुक्ल ध्यान कहा है। ये दोनों शुद्ध ध्यान वीतरागता प्राप्त कराने वाले हैं।

ध्यान की एक प्रमुख पद्धति में प्राण (श्वासोच्छ्वास) पर मन एकाग्र किया जाता है। श्वास के आने-जाने के प्रति जागरूकता से ही ध्यान में प्रविष्ट हुआ जा सकता है। इसके लिये नासिका के अग्र भाग से आने-जाने वाली श्वास को महसूस करें। नासिकाओं के प्रवेश द्वार संवेदनशील क्षेत्र रूप हैं। जब श्वास का इससे स्पर्श होता है तो वहाँ संवेदना होती

है। अतः नासिकाओं के प्रवेश द्वार पर सजगतापूर्वक ध्यान दें। जैसे ही श्वास अंदर जायेगी, बाहर आयेगी, वहाँ स्पर्श करेगी। जब श्वास के स्पर्श के प्रति सजग रहेंगे तब राग, द्वेष और मोह उत्पन्न नहीं हो पायेंगे। क्रोध, मान, माया, लोभ की धधकती भट्टी शांत होने लगेगी और हम समस्त विकारों से विमुक्त होने लगेंगे।

स्पर्श के पहले और स्पर्श के बाद संवेदना के प्रति सजगता नहीं आ सकती। संवेदना के प्रति सजगता केवल स्पर्श के क्षण में ही आ सकती है। केवल तभी कोई वर्तमान क्षण में होता है। संवेदना के प्रति सजग रहने से अन्य सभी विचार छिन्न-भिन्न हो जायेंगे। शुरु में सजगता का एक मिनट भी मुश्किल लगता है लेकिन आप डटे रहेंगे तो सैकड़ों विचारों से शुरु होकर कम होते-होते आपका ध्यान एकाग्र होने लगेगा। जब कोई लम्बे समय इस प्रकार रह सके तो इसके अच्छे परिणाम प्रकट होंगे। श्वास स्पर्श के प्रति निरन्तर सजगता से स्व (मैं) की धारणा टूटने लगती है, उस क्षण प्रज्ञा प्रकट होती है। भाग्यशालियों को यह विधि प्राप्त होती है और इसके लाभ असीम हैं, भव-भवों तक है।

श्वासोच्छ्वास द्वारा प्राणों पर नियंत्रण प्राप्त करने का पद्धति पूर्ण अभ्यास प्राणायाम कहलाता है। इससे मन को नियंत्रित करना सम्भव है। जैन परम्परा की दृष्टि से प्राणायाम भले ही शरीर स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो, पर मानव अध्यात्म के लिए उपकारी नहीं है। क्योंकि श्वास के हठपूर्वक नियंत्रण से शरीर में पीड़ा उत्पन्न होती है, मन में चपलता उत्पन्न होती है और दूसरी तरफ पूरक क्रियाओं को करने में परिश्रम करना पड़ता है। इससे मन में संक्लेश जागृत होता है जो मोक्ष में बाधक है। इसीलिए जैनाचार्यों ने प्राणायाम को हठपूर्वक नियंत्रण में न लेकर सहज ध्यान से श्वास दर्शन के रूप में स्वीकृत किया है।

ध्यान के सम्बन्ध में एक और मुख्य जानने योग्य बात है ज्ञाता और द्रष्टा की अनुभूति। ज्ञाता तो हमें स्वयं को ही बनाना है तभी हमारी चेतना के अस्तित्व का अनुभव होगा, अतः ज्ञाता होने पर ही शरीर और आत्मा के सम्बन्ध की सत्यता जाहिर होती है।

आत्मा ओर शरीर को अभेद (एक ही) मानकर जो ध्यान लगता है, वह आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान की श्रेणी में आता है तथा आत्मा और शरीर के भेद विज्ञान का ज्ञाता बनकर जो ध्यान लगता है उसे ही धर्मध्यान और शुक्लध्यान कह सकते हैं। इसी भेद विज्ञान के लिए कायोत्सर्ग की विधि है। तप के विभिन्न प्रकारों में स्वाध्याय के अनन्तर ध्यान का क्रम है, ध्यान के पश्चात् कायोत्सर्ग का विधान है।

ध्यान-साधना अन्ततः कायोत्सर्ग का रूप ले लेती है, काया का उत्सर्ग हो जाने पर जो रह जाती है वह अनुभूति है, वह ध्यान की निष्पत्ति है, परिणाम है और पूर्णाहुति है। अगर हम और गहराई में उतरें तो सार निकलता है कि ध्यान-साधना के द्वारा जो तेजस

शरीर है उसमें से तेज एवं ऊर्जा उठती है और हमारी चेतना और तेजस शरीर में एकरूपता स्थापित होती है, दूसरी ओर कार्मण शरीर की मलिनता को यह ऊर्जा जड़ मूल से समाप्त कर सकती है। ध्यान जितना ओजस्वी होगा उतना ही कर्म की निर्जरा का द्वार खुलेगा।

यदि हम दूसरों के प्रति बुरे विचारों से भरे हुए हैं और उनको हमारे दुःखों के लिए जिम्मेदार मानते हैं तो ध्यान में स्थापित होना अत्यन्त कठिन है, पर यदि हम स्वयं को ही अपने दुःखों के लिए जिम्मेदार मानें और जब हमें इस बात का ज्ञान हो जाता है तो मन शुक्ल-ध्यान की ओर मुड़ जाता है।

ध्यान की उन्नत अवस्था में न तो मन से, न शरीर से, न काया से किसी प्रकार का प्रयास करना चाहिए उसे तो पर्वत की तरह अचल, उदासीन और दृढ़संकल्पी रहना है, इससे मन स्थिर हो जाता है और आत्मा स्वयं में तल्लीन हो जाती है, हम स्वयं में लीन हो जाते हैं। इस स्थिति को हम परम ध्यान कहेंगे। ध्यान की प्रक्रिया को ध्यान या उसका हिस्सा नहीं समझें, बल्कि ध्यान प्रक्रिया के बाद जो स्वयं में घटित हो रहा है, आत्मदर्शन हो रहा है, वह अवस्था ध्यान है।

ध्यान की एक उच्च स्थिति में साधक और ध्यान एक दूसरे के लिए समर्पित हो जाते हैं और इतना दोनों में प्रेम हो जाता है कि न तो साधक ध्यान को छोड़ पाता है और न ही ध्यान साधक को छोड़ पाता है।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

करें, सोच समझकर

श्रीमती पी. आशा दुग्गड़

1. कभी भी अपने आपको कम नहीं आंकना चाहिए। अपनी शक्ति और कमजोरी को जानें, शक्ति को बढ़ायें और कमजोरी को खत्म करें।
2. अर्थहीन जीवन न जीयें। अपना लक्ष्य निर्धारण करें, उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। संकल्प, सफलता का प्रथम द्वार है।
3. अच्छे एवं सही काम को नहीं टालें। जो हमें सही लगे, उसे करें। नीति एवं न्याय से काम करें।
4. अपने आपसे अनजान न बनें, ध्यान एवं मौन का अभ्यास करें। अपने लिए समय निकालें।
5. नकारात्मक सोच को टालें। ऐसे लोगों की संगति न करें जो नकारात्मक सोच वाले हों। सदैव प्रसन्न रहने की आदत डालें। एक क्षण का भी प्रमाद न करें।

-19, जीवानगर, मेन रोड़, न्यू वाशरमैनपेठ, चेन्नई-600081 (तमिलनाडु)

कविता

धर्म मंगल है, मंगलकारी है

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

संसार में चार मंगल कहे हैं-
अरिहन्त मंगल हैं,
सिद्ध मंगल हैं,
साधु मंगल हैं,
केवलीप्रणीत धर्म मंगल है
यदि जीवन में यह मंगल हैं
तो जंगल में भी मंगल है
धर्म पीड़ा दूर करता है
तन की, मन की
चाह दूर करता है धन की
धर्म करो तो धन मिलता ही है
यह बात अलग है कि
धर्मात्मा न उसकी चाह करता है
न उसमें रमता है
क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि
जो धन में रमता है
वह मरकर या तो सर्प होता है, डसता है
या संसार में भ्रमता है।
धर्मात्मा को संसार में न रमना है,
न भ्रमना है
इसीलिए वह
स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु,
श्रोत्र इन्द्रियों को
अपने वश में रखता है
बोलता है सदा सत्य
वर्जना करता है असत्य की
विषय-वासनाओं को त्यागता है
सोता है भोगों के प्रति
आत्मा के प्रति सदा जागता है
दुष्कर्मों से भागता है
और समझता है अपने आपको
कि उठो, प्रमाद मत करो
धर्म को जानो,
धर्म को मानो/धर्म की मानो
धर्म का आचरण करो
धर्म से ही शान्ति है
यही अपने लिए धर्म-क्रान्ति है।
जिसने धर्म में ध्यान लगाया,
समय व्यतीत किया
वह निश्चित ही सफल होता है
महान् होता है।
धर्म की सीख गुरु देते हैं
क्योंकि वे ही धर्म जीते हैं
धर्म गुरु की साक्षी में ही होता है

तभी तो धर्मी गुरु-सन्निधि लेता है
त्रस जीवों की रक्षा,
स्थावरों की सुरक्षा के रूप में
छह प्रकार के जीवों की रक्षा करो
तो धर्म होता है
इसी को जीव दया कहते हैं
इसी की दुआ करते हैं
धर्म आवरण हटाता है
धर्म पर्यावरण बचाता है

जो स्वयमेव धर्म पालते हैं
वे उत्तम मनुष्य कहलाते हैं
जो दूसरों के कहने से धर्म पालते हैं
वे मध्यम मनुष्य कहलाते हैं
जो न स्वयं, न दूसरों के कहने पर भी
धर्म नहीं पालते हैं
वे अधम मनुष्य कहलाते हैं।

हमें अधम और मध्यम नहीं
उत्तम मनुष्य बनना है
अन्य को नहीं सुधारना
स्वयं को सुधरना है।

जिसका मन सदा धर्म में प्रवृत्त होता है
उसके सब कार्य सध जाते हैं
देवता भी करते हैं नमस्कार
और क्षण में विपदा हर जाते हैं।
धर्म का मूल दंसण कहलाता है
इसमें सम्यग्दर्शन भी है,
इसमें सम्यक्ज्ञान भी है
इसमें सम्यक् चारित्र भी है
किन्तु वास्तव में 'दंसण' का अर्थ
मोक्षमार्गी मुनि ही है
क्योंकि सही मायने में वही रत्नत्रयी
धर्म पालक होता है
दुःसह परीषहों को सहता है
धर्म की बात कहता है
धर्म की राह चलता है
सदा धर्म करता है
पाप से दूर रह
पुण्य का फल छोड़
आत्म में रमता है
धर्म के मूल में वही रहता है।

धर्म ध्रुव है
धर्म नित्य है
धर्म शाश्वत है
धर्म भास्वान् है
धर्म रक्षक है
धर्म शिक्षक है
धर्म शरण है
धर्म करण है
धर्म में गति है
धर्म में प्रगति है
धर्म ही महान् है

धर्म ही जहान है
धर्म ही माता है
धर्म ही पिता है
धर्म ही भगिनी है
धर्म ही बन्धु है
धर्म ही मित्र है
धर्म ही चित्र है
धर्म ही गुरु है
धर्म से ही जीवन शुरु है
धर्म शुद्ध हृदय में ठहरता है
धर्म वस्तु का स्वभाव है
धर्म दशलक्षण भाव है
धर्म रत्नत्रय है
धर्म जीवरक्षामय है
धर्म क्षमाप्रधान है
धर्म परमात्मा की पहचान है
धर्म सच्चा पथ प्रदर्शक है
धर्म बहुत ही आकर्षक है
धर्म भोग-विलास से दूर करता है
धर्म आत्मा को वश में करता है
धर्म के बिना सुख नहीं मिलता
धर्म करो तो दुःख नहीं रहता।
धर्म अहिंसा है
धर्म सत्य है
धर्म अस्तेय है
धर्म क्षमा है
धर्म मार्दव है
धर्म आर्जव है
धर्म सत्य है
धर्म शौच है
धर्म संयम है
धर्म तप है
धर्म त्याग है
धर्म आकिंचन्य है
धर्म ब्रह्मचर्य है
धर्म विनय है
धर्म सुनय है
धर्म में संसार असार दिखता है
धर्म में सद्विचार पलता है
धर्म से स्वर्ग-सुख मिलता है
धर्म से अपवर्ग सुख मिलता है
धर्म से क्या नहीं होता है,
धर्म से तीर्थंकर होता है
आओ, धर्म करो
आओ, धर्म वरो
और फिर वरण करेगा
धर्म तुम्हें भी
बना देगा धार्मिक
कर देगा मंगल
सिद्ध दशा पाओगे
संसार में फिर नहीं आओगे
हे धर्म, तुम्हारी जय हो,
हे धर्म तुम्हारी विजय हो।

-'पार्श्व-ज्योति', एल-65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर-450331 (मध्यप्रदेश)

धारावाहिक

लग्न की वेला (23)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

दोनों भाई भोजन करके आपण चले गये। माता-पुत्री ने भी भोजन करके चौका समेटा और वे मध्य के प्रकोष्ठ में आकर बैठ गयी। गुणसुन्दर भी काष्ठ के शय्यासन पर वामकुक्षि कर रहे थे। शिवसुन्दर आपण नहीं गया। वह माता-पिता से वार्ता करने का अवसर ढूँढ रहा था। अतः वह भी वहाँ चला आया। शिवसुन्दर पिता के आसन के समीप रखे कटासन को बिछाकर उस पर बैठ गया। वह बोला- 'तात! अम्ब! आपमें कितनी प्रगाढ़ भक्ति है, गुरुदेव के प्रति।'' लेटे हुए ही सार्थवाह ने कहा- ''इसमें क्या बड़ी बात है? वे हमारे गुरुदेव हैं- तारक हैं। उनके प्रति हमारी भक्ति हो, इसमें आश्चर्य ही क्या?''

''गुरुदेव के प्रति आपकी इतनी भक्ति है, तो उन्हें कुछ भी भेंट नहीं करेंगे?''- उसका स्वर स्पष्ट रूप से काँप रहा था, मानो वह एक भेदभरी बात कह रहा हो- ''गुरुदेव तो अब कुछ ही दिन के अतिथि हैं?''

यह अनोखी बात सुनकर सार्थवाह उठकर बैठ गये। मेरुसुन्दरी शिवसुन्दर की बात का मर्म न समझकर बोल उठी-''गुरुदेव भी क्या कोई भेंट लेते हैं? वे तो कोई भी भौतिक पदार्थ भेंट में नहीं लेते। हाँ, त्याग-तपश्चर्या की भेंट स्वीकार करते हैं।'' सार्थवाह ने पूछा- ''वत्स! मैं यह बात समझ नहीं सका। आचार्यदेव तो अकिंचन हैं। उन्हें क्या भेंट दी जा सकती है? मेरी तो कभी इस ओर दृष्टि ही नहीं गयी और उन महाप्रभु ने भी हमसे कभी ऐसी अपेक्षा की नहीं।''

''आप अपनी कोई प्रिय से प्रिय वस्तु उन्हें भेंट कीजिये। वे महाप्रभु तो निरपेक्ष हैं, परन्तु भक्त भेंट करता है- अपनी कृतार्थता के लिये।''

''परन्तु ये त्यागी गुरुदेव किसी वस्तु की भेंट कहाँ लेते हैं और इस समय तो वे त्याग की उत्कृष्ट साधना कर रहे हैं। क्या वे भेंट ले सकते हैं?'' बड़े असमंजस में पड़े हुए सार्थवाह ने कहा- ''मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।''

''जो वे ले सकते हों, जिसे वे स्वीकार कर सकते हों, वह वस्तु दीजिये।''- शिवसुन्दर ने बात इस ढंग से कही कि उसे उस पदार्थ का ज्ञान है।

''ऐसी प्रिय वस्तु कौन-सी है, यही तो समझ में नहीं आ रहा है।''

''अच्छा, तू जानता हो तो तू ही कह''- मेरुसुन्दरी ने उसकी बात के ढंग से चिढ़कर

कहा-''जैसे आप बड़े ज्ञानी बन गये हैं।''

''अच्छा, मैं बताऊँ?'' हँसता हुआ शिवसुन्दर बोला- ''अम्ब! तात! मैं आपको कितना प्रिय हूँ? बोलो प्रिय हूँ कि नहीं?''

''बहुत प्रिय हो''-सार्थवाह की यह बात सुनकर सिर चकरा गया।

वे मूढ़ से कह रहे थे- ''पर इसका क्या आशय? क्या गुरुदेव को तुम्हें भेंट कर दूँ? कैसी चक्कर भरी बात है, तुम्हारी?''

मेरुसुन्दरी अपना सिर खुजलाते हुए बोली- ''तुम क्या भेंट की वस्तु हो?''

''अम्ब! भेंट की वस्तु तो बहुमूल्य ही होती है और प्रियतम ही होनी चाहिये। क्या आप मुझे गुरुदेव के चरणाम्बुज में शिष्य के रूप में भेंट नहीं कर सकते हैं?'' वे एकटक उसके मुँह को ताक रहे थे। वे शय्यासन से दोनों पाँवों को धरती पर टिकाते हुए बोले- ''क्या कहा? क्या तुम्हें शिष्य रूप में भेंट कर दें? क्यों उलझा रहे हो हमें?''

आश्चर्य से मेरुसुन्दरी हाथ से हाथ को मलती हुई बोली- ''क्या कहा? क्या कहा? फिर बोलो तो?'' ''कह तो रहा हूँ- क्या मैं सुन्दर भेंट नहीं हूँ? वह शान्त और निश्चल स्वर से बोला- ''आप मुझे अपने गुरुदेव के चरणों में भेंट क्यों नहीं कर देते हो?'' माता-पिता दोनों एक साथ उच्च स्वर में बोले-''क्या तुम साधु बनना चाहते हो?''

गुणसुन्दर की बड़ी पुत्री जो अभी तक चुपचाप उनकी बातें सुन रही थी, उससे नहीं रहा गया, वह बोल उठी- ''शिव भैया! ऐसा भी क्या उपहास होता है? जननी-जनक को क्यों तंग कर रहे हो?''

''भगिनी!''- उससे दृढ़ स्वर में कहा- ''यह उपहास नहीं है। मैं अपने मन की सही बात कह रहा हूँ। मेरा निर्णय पक्का है।''

सार्थवाह उसकी बात सुनकर आश्चर्यचकित थे। यह काव्य रसिक युवक इस रास्ते कैसे चला गया? वे अपने दाहिने हाथ को ऊँचा करके, उस पर अपना मुँह टिकाकर बोले- ''शिव! तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो। घर का भार वहन करने वाले तुम्हीं हो। वत्स! तुम ऐसी बात क्यों करते हो? क्या तुमने इस ओर भी कुछ सोचा है?''

''हम सोच रहे हैं- सुन्दर सुमुखी वधू लाने की''- मेरुसुन्दरी ने अपने हृदय को व्यक्त करते हुए कहा-''और यह सोच रहा है- साधु बनने की।''- वह भगिनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसे घूरकर देखते हुए बोली-''कैसे आया है तुझे वैराग्य? क्या समझता है- तू धर्म में?''

''होऽऽ! आ गया वैराग्य।'' मुँह बनाकर हाथ झटकारती हुई बहिन बोली- ''दो-चार

बार गया होगा- गुरुदेव के पास और हो गया वैरागी? कभी व्याख्यान भी सुने हैं? कुछ ज्ञान भी सीखा है?''

''नहीं, गुरुदेव ने मुझे कोई उपदेश नहीं दिया और न मैंने अभी प्रवचन ही सुने हैं''- बिना किसी उत्तेजना के शिवसुन्दर कह रहा था- ''परन्तु गुरुदेव के समीप कुछ ही क्षण बैठने पर मेरी काया-पलट हो गयी। मुझे ज्ञान के निधान की कुंजियाँ मिल गयीं, क्योंकि मैं परम जिज्ञासा से गुरुदेव के चरण-कमलों में बैठा था। मैं नहीं जानता कि वैराग्य क्या होता है? पर चिन्तन करते-करते सही लक्ष्य का निर्णय हुआ और लक्ष्य सिद्धि की निर्विकारता की प्राप्ति की तीव्र तृष्णा जागी। मुझे यह भली-भाँति समझ में आ गया कि त्याग के सिवाय इसका कोई अन्य मार्ग नहीं है। गुरुदेव की किंचित् चरण सेवा से यह निर्णय पाया है तो उन्हीं के परम पावन पाद-पद्मों में मेरे नवजीवन का प्रारम्भ हो जाय- यह एक अमिट चाह जगी है।'' यह कहकर उसने अपना सिर नीचा कर लिया। परन्तु उसका एक-एक शब्द सार्थवाह के हृदय पर हथौड़े की चोट कर रहा था। सार्थवाह को उसके अटल निश्चय पर विश्वास हो गया।

सार्थवाह अपने दोनों हाथों से मस्तक पकड़कर बैठ गये। वे चिन्ता के स्वर में बोले- ''कैसी बात है यह! कुछ ही दिनों में तुम्हें यह रंग लग गया। यहाँ तो बाल पकने आये तो भी मन ठिकाने नहीं आया। यह तो हमारे पर वज्र-प्रहार जैसा हुआ।''

''तात! मैंने गहरा तत्त्व-ज्ञान नहीं पाया। परन्तु मेरी यह समझ दृढ़ हो गयी है कि निर्विकारता की सिद्धि के लिये ही मनुष्य-भव है। अभी हमें जो साधन मिले हैं, यदि उन्हें यों ही गँवा दें तो फिर ये मिलेंगे या नहीं मिलेंगे- यदि मिलेंगे भी तो कब मिलेंगे- क्या पता?'' परम शान्ति से शिवसुन्दर कह रहा था। माता और बहिन एक टक उसकी ओर देख रही थी। चिन्तातुर गुणसुन्दर पुत्र की बात समझने का प्रयत्न कर रहे थे। वे ज्ञानी व्यक्ति थे। मोह के आवरण से उनकी ज्ञान दशा धूमिल हो रही थी। परन्तु पुत्र की बात उनके मोह-आवरण को छिन्न कर रही थी। वे सोच रहे थे- ''पुत्र की बात सही है। लक्ष्य का निर्णय और उसे पाने की तत्परता मोह के क्षयोपशम से आती है। किसी आसन्न भव्य आत्मा को तुच्छ निमित्त से ही बोधि प्राप्त हो जाती है, तो इसे गुरुदेव का सबल निमित्त मिला है। लगता है कि इसका आत्मा शुद्ध है। अब इसे अन्तराय देना ठीक नहीं रहेगा और इससे हमारे, कर्म और गाढ़े होंगे। यह ठीक ही कह रहा है कि आगे ऐसा उत्तम योग कब मिलेगा...' शिवसुन्दर पिता को आश्वासन देता हुआ कह रहा था-''और तात! आप चिन्ता क्यों कर रहे हैं। मैं तो अभी- घर-दुकान पर बराबर जुड़ ही नहीं पाया हूँ। मध्यम भ्राता सभी प्रकार से योग्य है। वह आपके पास अधिक समय तक रहा है। वह सभी कार्य सम्हाले हुए है और कनिष्ठ भी दक्ष है। मेरे

अभाव में आपको कोई कष्ट हो- ऐसी बात नहीं है।''

मेरुसुन्दरी गुरुदेव की परम भक्ता थी। उसके मन में कभी यह भाव आया था कि मेरे तीन पुत्रों में से कोई भी गुरुदेव के चरणों में दीक्षित हो तो उत्तम। परन्तु क्षणिक भावना की तरंग का प्रभाव ही कितना रहता है? अतः वह भी मोहाभिभूत थी। पुत्र की बात सुनकर अश्रु-भीने नयनों से वह ज्ञान-गर्भित वचन बोली- ''पुत्र! सुख-दुःख तो अपने कर्मों का फल है। कोई हमारे लिये सुख रूप होगा तो हमारे सौभाग्य से ही। कई पुत्रों के होते हुए भी कई दुःखी हैं। वत्स! मोह की दशा विचित्र है। अतः समझते हुए भी हम हमारे मन को नहीं मना पा रहे हैं। परन्तु आयुष्मन्! तुमने बात ही इस ढंग से रखी है कि हमारी पूरी कसौटी हो रही है।''

अब वह सार्थवाह गुणसुन्दर पूर्णतः स्वस्थ हो चुके थे। उन्होंने मोहभाव को झटकार कर फेंक दिया। वे सहजभाव के साथ शिवसुन्दर से बोले-''पुत्र! भली-भाँति सोच लो। हम तो त्यागी नहीं बन सके, क्योंकि मोह का इतना क्षयोपशम नहीं हुआ है। परन्तु तुम्हारा मन मुक्ति मार्ग पर जाने के लिये दृढ़ है तो मैं तुम्हें इस मोह-विलसित संसार में बाँधकर नहीं रखूँगा। गुरुदेव के श्रीचरणों में तुम्हें शिष्य रूप से भेंट करने के लिये मैं तैयार हूँ। बोलो, क्या निर्णय है, तुम्हारा?''

शिवसुन्दर के हर्ष का पार न रहा। उनके हृदय में पिता के प्रति श्रद्धाभाव और पूज्यबुद्धि की वृद्धि हुई। वह पिता के चरणों में प्रणाम करके बोला- ''धन्य है, तात! आपको, मेरा मन तो दृढ़ ही है, तात! तभी तो आपके सन्मुख मेरी भावना इस ढंग से रखी है।''

''स्वामिनी!''-गुणसुन्दर अपनी पत्नी को विशेष प्रसंगों पर इसी प्रकार सम्बोधित करते थे- ''तुम्हारा क्या मन है?'' मेरुसुन्दरी भी प्रमुख उपासिका थी। वह भी अपने मोह पर जय-पा चुकी थी। अतः बोली- ''स्वामिन्! यहाँ मन की बात ही कहाँ है? यहाँ तो गुरु-चरणों में समर्पण की बात है और ऐसे समय में- जब गुरुदेव अन्तिम आराधना में लीन होने वाले हैं- मन को आड़े आने दें, तो फिर अपनी भक्ति ही क्या।''

''अच्छा, तो चलो, वत्स! गुरुदेव से चर्चा कर लें- इस विषय में। अब विलम्ब करने में सार नहीं है।''

पुत्री माता-पिता की बात सुनकर आश्चर्य-चकित रह गयी। वह बोली- ''जननि! तात! आप यह क्या कर रहे हैं? विवाह के मुख पर आये हुए युवा पुत्र को इस प्रकार विदा कर रहे हैं। तात! आप गुरु-भक्ति के नाम से फिसल रहे हैं। क्या पितृ-भक्ति का कुछ भी महत्त्व नहीं है? शिवसुन्दर का आपकी ओर ध्यान नहीं गया?

''वत्से! पितृभक्ति का महत्त्व है''- हँसकर सार्थवाह बोले- ''और इसके प्रति मेरे

वात्सल्य का भी महत्त्व है। मैं इससे अपनी भक्ति माँगकर इसके उदात्तभाव का निरोध कर दूँ तो मेरे वात्सल्यभाव का महत्त्व गिर जाता है। मैं अपने पुत्र के उदात्त लक्ष्य की पूर्ति के लिये कितना त्याग कर सकता हूँ। इसमें मेरे वात्सल्य का महत्त्व है। भद्रे! आज मेरी गुरु भक्ति और मेरे वात्सल्य की कसौटी है।'' पुत्री भी अपने पिता की महानता से गद्‌गद् हो गयी। वे चारों उपाश्रय में पहुँचे। उस समय आचार्यदेव आराधना से निवृत्त होकर प्रशिष्यों को कुछ समझा रहे थे। वे उन्हें वन्दना करके बैठ गये। आचार्यदेव समझ गये कि ये किसी प्रयोजन से आये हैं। उन्होंने साधुओं को संकेत किया। अतः सभी साधु वहाँ से तत्काल उठकर अन्यत्र चले गये।

आचार्यदेव ने सार्थवाह से पूछा- ''देवानुप्रिय! क्या कहना चाहते हो!'' हाथ जोड़कर सार्थवाह ने कहा- ''गुरुदेव के लिये मैं शिष्य की भेंट लाया हूँ।'' ''देवानुप्रिय! अब मुझे शिष्य से क्या प्रयोजन?'' भन्ते! गुरु को कब शिष्य से प्रयोजन रहा है, परन्तु शिष्य ही अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिये सद्‌गुरु के शरण में आता रहा है। प्रभो! यह मेरा ज्येष्ठ पुत्र शिवसुन्दर है, यह आपके चरणों में आना चाहता है।''

आचार्यदेव ने शिवसुन्दर की ओर देखा। उसने संक्षेप में गुरुदेव के सन्मुख अपनी बात रख दी और कहा- ''मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मुझे आपके श्रीहस्त से ही दीक्षित होना है और जितने भी दिन आपकी सेवा का लाभ मिल जाय, लेना है। इसीलिये मैं जल्दी कर रहा हूँ। मेरे माता-पिता अपने वात्सल्य भाव से मेरे इस पुनीत कार्य में सहयोगी बन रहे हैं, यह आपकी कृपा का फल है, गुरुदेव!''

आचार्यदेव ने कुछ चिन्तन करके कहा- ''मैं आयुष्मन् शिवसुन्दर से अल्प परिचित हूँ। परन्तु इसमें भी यह समझ सका हूँ कि यह सच्चा जिज्ञासु है और परिपक्व बुद्धि का स्वामी है। यद्यपि मैं अब इसे शिष्य रूप में ग्रहण न कर सकूँगा, तदपि आपकी अनुपम उदारता को मान देकर और इस आयुष्यमान की तीव्र भावना को देखकर, जहाँ तक मैं अनशन नहीं करूँगा, वहाँ तक यदि अनुकूलता रही तो इसे प्रतिदिन ज्ञान-प्रदान के लिये एक मुहूर्त जितना समय देने की भावना रखता हूँ। इन पन्द्रह दिनों में यथाशक्य ज्ञान देकर मुनिराज धर्मप्रिय के आचार्य पदारोहण के दिन उनके शिष्य के रूप में दीक्षा प्रदान कर दूँगा। इस प्रकार जितने दिन भी मैं शरीर में रहूँगा, उतने दिन इसकी भावना के अनुसार इसे मेरी सेवा का लाभ मिल जायेगा और मैं भी इसे साधना-मार्ग पर चरण बढ़ाते हुए देख लूँगा। इस प्रकार इसकी इच्छापूर्ण हो सकेगी।''

आचार्यश्री की इस स्वीकृति से चारों ही परम हर्षित हुए। आचार्यश्री ने उन मोहजयी

दम्पती की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

सार्थवाह ने अश्रु-पूरित नयनों से वंदन करके, गुरुदेव के चरण पकड़ लिये और गद्‌गद् होकर बोला- "गुरुदेव के कृपाप्रसाद से मैं धन्य हो गया।" मेरुसुन्दरी भी वन्दना करती हुई बोली- "प्रभो! पूजा के इस निर्दोष और उत्तम पुष्प को आपने स्वीकार करके हमें कृतार्थ किया।"

गुरुदेव ने कई मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षा दी थी। परन्तु ऐसे मुमुक्षु और सरल स्वभावी माता-पिता को आज ही देख रहे थे। मानो उनके अन्तःकरण से आशीर्वाद निकला- "आप जैसे महाभागों से ही जिनशासन धन्य है- जयवन्त है। देवानुप्रियों! चरम सिद्धि पाओ!" (क्रमशः)

ओ मेरे गुरुवर हीरा

श्रीमती अरुणा कर्णावट

ओ मेरे गुरुवर हीरा!
रत्नसंघ की शान हो तुम,
सागरवर गंभीरा हो,
वर्तमान के निर्माता, भविष्य के ज्ञाता द्रष्टा हो
व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक हो,
प्राचीन ऋषि परम्परा के गौरव हो,
तपोनिष्ठ, कर्मठ, कर्मवीर, तप महर्षि, कठोर विरले साधक हो।
पंच-परमेष्ठी के तृतीय पद की विराट् चेतना को समाहित किए हो।
तुम्हारे स्पर्श मात्र से जैसे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप-साधना सजीव हो चली है।
चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं की जागृत प्रतिमा हो,
अध्यात्म की पुनीत राह दिखाने वाले
कर्म-ग्रन्थियों से मन को मुक्त बनाने वाले
चिन्तन के सागर-सी गहराई वाले
साधना में मेरु-सी ऊँचाई वाले
देह से परे देहाती हो
ओ अहिंसा के महामानव तुझे शत-शत वन्दन।

-एफ/30-बी, लाल बहादुर नगर (वे), जवाहरलाल नेहरु मार्ग, जयपुर (राज.)

कविता

करुणा रस बरसाता चल

डॉ. दिलीप धींग

क्रूर बना मानव देखो तो, उजड़ा धरती माँ का आँचल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।

कभी यहाँ बहा करती थीं, घी-दूध की नदियाँ कलकल।
अब जल की नदियाँ भी सूखी, जल के लिए मची है हलचल।
धरती पर, धरती के अन्दर, सदा प्रवाहित हो शीतल जल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।1।।

कटते जंगल, घटते जंगल, वन्यजीव आवास हुए कम।
दूषित परिवर्तित जलवायु, मनमौजी विद्रोही मौसम।
पिघला अपना हृदय अन्यथा, हिमगिरि कहीं न जाए पिघल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।2।।

चहचहाट नहीं चिड़िया की, घर में गौरैया नहीं आती।
कहाँ तितलियाँ रंग-बिरंगी, प्यारी बुलबुल .गुनगुनाती ?
धरती की रौनक लौटाए, पशु-पक्षियों की चहल-पहल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।3।।

भीतर करुणा, बाहर करुणा, करुणा जीवन का विस्तार।
सेवा, प्रेम, अहिंसा, संयम, सारा करुणा का परिवार।
यह परिवार बचाता सबको, दुःख हरता है करता मंगल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।4।।

जिसका हृदय भरा करुणा से, देख नहीं पाता संहार।
देख तड़पते-मरते प्राणी, उमड़ पड़े करुणा रसधार।
देवतुल्य करुणामय मानव, से भूषित होता है भूतल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।5।।

बच्चे बेबस बिलख रहे हैं, माँ-बहिनों पर अत्याचार।
छीना-झपटी लूटपाट में, हित-अहित का नहीं विचार।

भय अन्याय मिटाने हेतु, घट करुणा का लेकर चल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।6।।

फैला है आतंक प्रदूषण, हिंसा की लपटें झुलसातीं।
होड़ मची है हथियारों की, नफरत की खेती की जाती।
शस्त्र क्षमा समता का लेकर, धरती को सरसाता चल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।7।।

कभी अचानक धरा काँपती, कभी गगन फट जाता है।
आँख मींचकर खोलें तब तक, सारा वैभव मिट जाता है।
नमन उन्हें जो घोर कष्ट में, परहित हेतु पड़े निकल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।8।।

मूक प्राणियों की गर्दन पर, खटखट निशदिन छुरियाँ चलतीं।
इसीलिए विपदाएँ आतीं, टालें नहीं बलाएँ टलतीं।
समाधान की राह अहिंसा, स्थायी श्रेष्ठ निरापद हल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।9।।

करुणा मानवता की थाती, यह नैतिकता का आधार।
सच्चे करुणामय जो होते, सब जीवों से करते प्यार।
शाकाहार और सदाचार का, पावन परचम फहराता चल।
फिर से धरा चमन करने को, करुणा रस बरसाता चल।।10।।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079(तमिलनाडु)

सूक्ति-समुच्चय

श्री पारस सांखला (जैन)

1. कलह की औषधि- 'मौन' है।
2. अपेक्षा की 'उपेक्षा' होना, क्रोध का बड़ा कारण है।
3. शरीर की भभूति होने से पहले जीवन को विभूति बनाना है।
4. नियम-प्रत्याख्यान बन्धन नहीं अपितु सुरक्षा कवच है।
5. 'क्षण' की पहचान करने वाला 'पण्डित' होता है।

-भीलवाड़ा (राज.)

बाल-स्तम्भ

ऐसे भी होते हैं बच्चे

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 दिसम्बर 2016 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफनां, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

दीपावली के दिन समीप थे। पड़ोस के बच्चे पटाखे छोड़ने लगे। सानुज को पटाखे छोड़ने का शौक आया। उसने पिताजी से कहा- 'मुझे पटाखे दिलाओ।'

पिताजी ने कहा- 'पटाखे छोड़ने से जीवों की हिंसा होती है, प्रदूषण बढ़ जाता है उससे पर्यावरण बिगड़ जाता है।'

सानुज को यह बातें समझ में नहीं आई। उसे तो पटाखे की चमक-दमक, उसके रंग-रंगीले तारे आकर्षित कर रहे थे। वह अपने मन को वश में न कर सका। उसने माँ के पर्स से पैसे निकाल, उनसे पटाखे खरीद कर स्कूल बैग में भर लिए। उसकी माँ मीना दीपावली के कार्य में व्यस्त थी। उसे पर्स की आवश्यकता नहीं पड़ी। दीपावली- अवकाश चल रहे थे, इसलिए सानुज का स्कूल बैग भी नहीं सम्भाला।

सानुज के मन में लड्डू फूट रहे थे कि कब दीपावली की सांझ आए और वह पटाखे छोड़े। लम्बी प्रतीक्षा के बाद दीपावली की सांझ आ गई। उसके माता-पिता संध्या की पूजा-अर्चना कर रहे थे तब सानुज अपने कमरे का टी.वी. चालू छोड़, माता-पिता की आँखों में धूल झोंक कर नौ-दो ग्यारह हो गया। दो-तीन दोस्तों को साथ लेकर अपने फ्लेट के पिछवाड़े में पहुँच गए, जहाँ पर श्रमिक लोगों के निवास थे। वहाँ उन्हें कोई मना करने वाला नहीं था। बैग में से पटाखे निकालकर छोड़ने शुरू किए। श्रमिकों के बच्चे भी वहाँ आ

गए। सभी पटाखे छोड़ने का आनन्द ले रहे थे। एक जलता बम जाकर उनके छप्पर से बने निवास-स्थान पर गिर गया। किसी को पता न चला, धीरे-धीरे जलते-जलते आग ने उग्र रूप धारण कर लिया। धू-धू करके आग जलने लगी। उसमें रहने वाले लोग बाहर निकल आए। अग्नि शमन से दमकल गाड़ी आई। आग तो जल्दी बुझ गई लेकिन विपन्नों का सारा सामान जल गया। कॉलोनी में त्राहि-त्राहि मच गई। कुछ लोग बच्चों को कोसने लगे और भला-बुरा कहने लगे। सानुज हक्का-बक्का रह गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। दूसरे मित्र वहाँ से भाग निकले। सानुज अकेला रह गया। वह सोचने लगा 'मैं क्या करूँ, चोरी करके, चोरी-चोरी घर से आया था।' वह डर रहा था। स्वयं के प्रति ग्लानि होने लगी। घबरा रहा था, संकुचित हो रहा था। मैंने अपनी खुशी के लिए कैसा अनर्थ कर डाला। घुटनों में मुँह डाल कर जोर-जोर से रोने लगा। इतना रोने लगा कि उसे सम्भालना भारी पड़ गया। लोगों को पता लग गया। यह तो प्रतिष्ठित संजयजी का लड़का है। दो व्यक्ति घटना सुनाने उनके घर पहुँच गए। घटना सुनाई गई तो उन्होंने कहा मेरा बेटा अपने कमरे में टी.वी. देख रहा है। उसके कमरे में जाकर देखा तो सानुज नदारद था। उसके मम्मी-पापा घटना स्थल पर पहुँचे तो देखा कि सानुज घुटनों में मुँह डालकर फूट-फूट कर रो रहा है। मम्मी-पापा ने कहा- बेटा हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। हम तुम्हें नहीं डाटेंगे। तुम मुँह ऊँचा करो और घर चलो। उसने मुँह ऊपर करके पैरों में पड़कर, हाथ जोड़कर क्षमा मांगी तथा अपने अपराध पर क्षोभ प्रकट किया। उसे एक तो रुपये चुराने का दुःख था, दूसरा बिना कहे पटाखे लाने एवं छोड़ने का दुःख था। तीसरा दुःख आग लगने से मकान जलने का था। वह ग्लानि से भर गया। उसके मन में गरीबों के प्रति संवेदना जगी एवं पिताजी से कहा-'पिताजी! मैं घर तब तक नहीं चलूँगा जब तक पीड़ित श्रमिकों का खाने-पीने, रहने, सोने का प्रबन्ध न हो जाय।

पिता ने सहानुभूतिपूर्वक कहा- मैं इनके लिए तंबू लगवाकर, खाने-पीने, रहने की सभी व्यवस्था कर दूँगा। तुम चिन्ता मत करो।

सानुज यह सुनकर सन्तुष्ट हुआ एवं माता-पिता के साथ घर चला गया। तम्बू लगने के बाद उन बच्चों को सम्हालने जाने लगा। तम्बू में रहने वाले उन श्रमिकों के बच्चों के साथ सानुज का कुछ अनोखा सा रिश्ता जुड़ गया। वह अब प्रतिदिन वहाँ जाता तथा उन बच्चों को पढ़ने में मदद करता। दिन प्रतिदिन यह क्रम चलता रहा। वह पढ़ाने के साथ उन्हें कुछ नीतिगत कहानियाँ, किस्से भी सुनाता, जो उसकी दादी उसे सुनाती थी। इससे बच्चों में संस्कार के पुष्प खिलने लगे। इसकी सुवास उनके परिवारों तक पहुँचने लगी। वे गरीब बच्चे विचारों से अमीर होने लगे। अपने सुविचारों से उन्होंने पिता को प्रभावित कर शराब पीना,

जुआ खेलना आदि छुड़वा दिया। सानुज ने यह बात अपने पिता को कही तो वे बहुत अभिभूत हुए। उसके पिताजी भी उन गरीब परिवारों की उन्नति में रुचि लेने लगे। चूंकि वे एक बड़े बिल्डर थे, तो उन्होंने उन श्रमिकों को ठेकेदार के रूप में नियुक्त कर दिया। अब उन श्रमिकों की आय बढ़ने लगी, तो उन्होंने निर्माणाधीन बिल्डिंग में ही अपना फ्लेट बुक कर लिया और किश्तों में भुगतान की विधि अपना ली।

बच्चों! पटाखे की चमक देख,
उसमें रंजित न होना,
शौक-शौक में हिंसक न बनना,
दूसरों के जीवन में अंधियारा न करना।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

प्रश्नः-

1. सानुज पटाखे खरीदने के लिए पैसे कहाँ से लाया?
2. श्रमिकों के निवास जलने के पश्चात् सानुज की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।
3. सानुज ने पिता के सामने क्या मांग रखी?
4. कहानी में से मुहावरे छाँटकर अर्थ सहित वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
5. निर्धनों की भावना का वर्णन कीजिए।
6. अर्थ बताइए- विपन्न, निर्माणाधीन, प्रतिष्ठित, सांझ, दमकल, ग्लानि।

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2016] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बदल गई श्रेया' के प्रश्नों के उत्तर 15 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	नमिता जैन-मसूदा, अजमेर (राज.)	28.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	लक्की कांकरिया-बैंगलुरु (कर्नाटक)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.)	26
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	पूर्वांशी छाजेड़-जोधपुर (राज.)	25.5
	दिव्यांशी बैद-बीकानेर(राज.)	25
	भावेश जैन-मंदसौर (मध्यप्रदेश)	24.5
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	24.5
	निकिता जैन-मसूदा, अजमेर (राज.)	24

कविता

मुक्ति की मंजिल

डॉ. रमेश 'मयंक'

मन!
जीवन एक सफर
जिसकी मुक्ति-मंजिल

मुक्ति की कामना में
बन्धनों से मुक्ति,
कामनाओं का परिष्कार
परतंत्रता की जंजीरों से छुटकारा
विकारों का प्रलोभन भी
सम्यक् संवेगों से हारा
तू संवेग के सफर का मुसाफिर बनकर
जागरण का शंख फूंकता क्यों नहीं?

मन!
माया-कपट जाल के काले बादलों से
सत्य के सूर्य को छिपाती,
मन के मृग को तृष्णाओं की मरीचिका
निरन्तर भटकाती
लोभ-लालच से वशीभूत मनुष्यता
पतन के गहरे खंदक में पहुँच जाती
तू स्वयं की आन्तरिक शक्तियों को
जगाता क्यों नहीं?
चिड़िया की आँख की पुतली की तरह
मंजिल को लक्ष्य बनाता क्यों नहीं?

मन!
उतार कर्म बन्धनों का बोझ
जब भार उतर जाएगा
तो चैन पाएगा,
फिर आगे बढ़ने के बारे में
सोच पाएगा,
तुझे छुटकारा पाना है
धर्माराधना को अपनाना है
तू आत्म परिचय कर,
आत्मावलोकन से मत डर
आत्मा को निर्भर बनाने के लिए
चरम लक्ष्य की दिशा में
प्रयासरत हो जाता क्यों नहीं?
बन्धनों की गाँठे खोलकर
परमात्मा से मिलने की तैयारी में
जुट जाता क्यों नहीं?

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

दीक्षा क्या है?

1. अन्तर्जगत् की यात्रा का नाम है- दीक्षा।
2. असत्य से सत्य की यात्रा का नाम है- दीक्षा।
3. अंधकार से प्रकाश की यात्रा का नाम है- दीक्षा।
4. अणु से विराट् की यात्रा का नाम है-दीक्षा।
5. भोग से योग की यात्रा का नाम है- दीक्षा।

गीत

संलेखना-संथारा

श्री जिनेन्द्रकुमार जैन

(तर्ज:- पंच परमेष्ठी को वंदना-वंदना)

मृत्यु आये ना आये, नहीं चाहना।
है ये अन्तिम समय की परम साधना।

भोग बुद्धि से भोगों में लिपटा रहा,
इनके रस का सुखाभास करता रहा।
अब मिली है परम सुख की ये मार्गणा।।1।।

कभी सारा समय था स्वजन के लिये,
मिलता ना एक पल भी आतम के लिये।
अब तो अपनी ही नैया को है तारना।।2।।

कभी खाता था पीता था जिसके लिए,
रोज सजना-संवरना उसी के लिए।
है दगाबाज काया सगा आतमा।।3।।

राग रखता था मित्रों-सगों के लिए,
द्वेष आगे बढ़े हैं उन्हीं के लिए।
अब तो होगी खतम मेरी मोह भावना।।4।।

नेह ना देह का ना है आहार का,
त्याग करता हूँ उपधि सभी चाह का।
सर्व पापों की करता हूँ अब तर्जना।।5।।

मुक्ति अब तो मिलेगी मिलेगी मुझे,
राज 'जिन' की जो वैसी मिलेगी मुझे।
देखो-देखो रे कैसी मिली साधना।।6।।

-आध्यात्मिक शिक्षा समिति,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

वीरप्रभु की अन्तिम वाणी (उत्तराध्ययनसूत्र गीति काव्य में)- मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., ***सम्पादक***- श्री सम्पतराज चौधरी, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 दुकान के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003, फोनः 0141-2575997, ***पृष्ठ***-229+10, ***मूल्य***- 50 रुपये, सन् 2016

प्रभु महावीर की अन्तिम वाणी के रूप में विश्रुत उत्तराध्ययन सूत्र एक आचार ग्रन्थ है। विनय, श्रमणचर्या के परीषह, चार दुर्लभ अंग, ग्रन्थि-त्याग, लोभ-विजय, ज्ञान की महत्ता, संयम में स्थिरीकरण, धर्म की कसौटी-प्रज्ञा, समिति-गुप्ति, आत्म-यज्ञ, मोक्ष-मार्ग आदि विषयों की विशालराशि को समेटे हुए 36 अध्यायों का यह बृहत्काय सूत्र है। उत्तराध्ययन सूत्र की प्रत्येक गाथा का पद्यमय अनुवाद आचार्य हस्तीमलजी म.सा. द्वारा पूर्व में किया गया था। इस पुस्तक में प्रत्येक अध्ययन के हार्द को गीतिका रूप में ढाला गया है। मुनिश्री ने 1709 गाथाओं के विषय-वर्णन को अपनी प्रतिभा से 932 पद्यों में अनुस्यूत करते हुए सरल-सहज भाषा में अनूदित कर उत्तराध्ययन सूत्र को हृदयग्राही तथा बुद्धिग्राही बना दिया है। आपने 'सम्यक्त्व पराक्रम' नामक अध्ययन के विषय को विशेष रूप से सुस्पष्ट करने के लिए 74 गाथाओं के भावों को 133 पद्यों में विस्तार से समझाया है। प्रत्येक अध्ययन में सर्वप्रथम सार रूप चार पंक्तियों में एक गीतिका दी गई है। इस प्रकार उत्तराध्ययन सूत्र की विषय-छत्तीसी के रूप में कोई इन्हें याद कर ले तो इस सूत्र की विषयवस्तु हृदयंगम हो जाती है। उदाहरण के रूप में दो गीतिकाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं-

प्रथम अध्ययन-

मुक्ति-पथ में प्रथम पद ही, विनय श्रुत का बोध है,
इस विनय के आचार से ही मान का परिशोध है।
गुरु समर्पित को मिले, तत्त्वार्थ की है पात्रता,
फिर तप-समाधि युक्त होकर, शिष्य पाता पूज्यता।।

उन्नीसवां अध्ययन-

जन्म दुःखम्, मरण दुःखम्, दुःखमय संसार है,
मृगापुत्र से भाव जगे तो, दुःख से होंगे पार है।
दुष्कर नहीं है साधुचर्या, शान्त यदि इच्छा हुई,
नरक में जो दुःख भोगे, उनके सम्मुख कुछ नहीं।।

पद्यों के उच्चारण मात्र से भाव निसृत होना, सुनते ही बुद्धि में अर्थ का प्रकट होना, लयबद्ध होने से कर्णप्रिय होना, जैसे वैशिष्ट्य से युक्त यह उत्तराध्ययन-गीतिका अपने आप में अनूठी है। शास्त्र में उल्लिखित प्रश्नोत्तरों को पद्यबद्ध तरीके से भी स्मरण किये जा सकते हैं, यथा-

प्रश्न- गुरु से भूल निवेदन करके, भंते! प्राणी क्या पाता?

उत्तर- आलोचन करने से प्राणी, भाव-शल्य तज देता।

प्रश्न- गुण-दोषों का समीक्षण करके, कैसे वह सरसाता?

उत्तर- कपट रहित हो जाने से वह, ऋजुता को वर लेता।

प्रश्न- वन्दन करने से हे भन्ते! प्राणी क्या फल पाता?

उत्तर- नीच गोत्र का क्षय करके वह, उच्च बंध है करता।

प्रश्न- क्षमादान से हे भन्ते! कहो जीव क्या पाता?

उत्तर- क्षमादान देने-लेने से, चित्त प्रसन्नता पाता,
आत्मतुल्य है जीव जगत के, मैत्री भाव जगाता।

'गुण सौरभ से रहे महकता.....।' तर्ज पर आधारित इस गीति काव्य की लय लोकप्रिय होने से हर व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण उत्तराध्ययन गेय हो जाता है। इस सूत्र में आई कथाओं को गेय स्वरूप में बालकों को सिखाया जा सकता है। प्रत्येक अध्ययन के पश्चात् उससे सम्बन्धित प्राकृत सूक्तियाँ दी गई हैं, जो स्वाध्यायियों, विद्वानों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी हैं। इसमें थोकड़े भी संगीतमय हो गए हैं, जैसे- लेश्या अध्ययन के अन्तर्गतः-

नाम द्वार- तीन अशुभ लेश्याएँ होती, कृष्ण-नील-कापोती
तेजो-पद्म-शुक्ल तीन ये, लेश्याएँ शुभ होतीं,
वर्ण प्रभावित लेश्याओं को, सुनकर समझ बढ़ा लो।

गति द्वार- कृष्ण नील-कापोत अधर्म है, दुर्गति में भटकाती,
तेजो-पद्म-शुक्ल धर्म है, सद्गति में पहुँचाती,
शुक्ल निमित्त है केवली की फिर, सिद्धगति को पालो।।

अन्त में दो परिशिष्ट दिए गए हैं। प्रथम प्ररिशिष्ट के अन्तर्गत ग्रंथ की छन्द रचना के कुछ ज्ञातव्य तथ्य तथा द्वितीय परिशिष्ट सन्दर्भ में ग्रन्थ दिए गए हैं।

समयसार (खण्ड 4) - ***सम्पादक***- डॉ. कमलचन्द सोगाणी, ***अनुवादक***- श्रीमती शकुन्तला जैन, ***प्रकाशन*** - अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, श्री महावीरजी-322220 (राज.), दूरभाष- 07469-224323, ***पृष्ठ***-123+6, ***मूल्य***- 550 रुपये मात्र, सन् 2016

प्रस्तुत ग्रंथ समयसार के बन्ध-मोक्ष अधिकार पर आधृत है। इन अधिकारों में आचार्य कुन्दकुन्द ने कर्म-बंधन की प्रक्रिया को समझाते हुए बताया है कि वस्तु आदि से कर्म बन्धन नहीं होता है, उसका मूलभूत कारण तो वस्तु आदि के प्रति राग है। जो व्यक्ति कर्म-बन्धन के स्वभाव को और आत्मा के स्वभाव को जानकर बन्धनों से विरक्त होता है, वह कर्मों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक गाथा का अर्थ अन्वयपूर्वक पद क्रम से किया गया है तथा सभी शब्दों का व्याकरणिक विश्लेषण किया गया है। अव्यय, अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया, कर्मवाच्य, लिंग, प्रेरणार्थक, काल, कृदन्त, विशेषण आदि का कथन करने के साथ यथास्थान विभक्ति, पुरुष और वचन का भी उल्लेख है। समस्त पद का विच्छेद भी किया गया है। फुटनोट में कहीं-कहीं पर पद के सम्बन्ध में विशेष टिप्पण भी प्राप्त है। प्रथम परिशिष्ट में ग्रंथ में प्रयुक्त शब्दों को कोश के रूप में नियोजित किया गया है, यथा-संज्ञा-कोश, क्रिया-कोश, कृदन्त-कोश, विशेषण-कोश, सर्वनाम-कोश और अव्यय-कोश। व्याकरण पर कार्य करने वाले शोधार्थी या अध्यापक के लिए यह परिशिष्ट बहुत उपयोगी है। द्वितीय परिशिष्ट में गाथा छन्द के सम्बन्ध में निरूपण है तथा तृतीय परिशिष्ट में सहायक पुस्तकें एवं कोश का वर्णन है।

पानी और जिनवाणी

श्री चन्द्रसिंह लोढ़ा

पानी की तीन विशेषताएँ हैं, पानी पीने से तृषा शान्त होती है, स्नान करने से शरीर का दाह शांत होता है और शरीर पर रहा मैल दूर होता है। इसी प्रकार जिनवाणी के श्रवण करने से कषायों का दाह शांत होता है, विषयों की तृष्णा दूर होती है, मन निर्मल होता है, अतः जिनवाणी का श्रवण अवश्य करें।

-पोस्ट ऑफिस के पास, फूलियाँ कलाँ, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

पर्युषण-रिपोर्ट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 450 स्वाध्यायियों द्वारा 157 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

(गतांक से आगे की रिपोर्ट)

मारवाड़ क्षेत्र

97	आगोलाई	-	श्री निखिल जी बाघमार-चेन्नई
			श्री कीर्ति जी चौधरी-मैसूर
98	भोपालगढ़	-	श्री मानसिंह जी खारीवाल-सहाड़ा
			श्री महावीर जी रांका-पहुना
99	आसोप	-	श्री शांतिलाल जी सिंघवी-आसोप
			श्री कानराज जी सुराणा-आसोप
100	गोटन	-	श्रीमती सुनीता जी मेहता-जोधपुर
			सुश्री रक्षिता जी मेहता-जोधपुर
			श्री अरूण जी मेहता-जोधपुर
			श्री गोपालराज जी अबानी-जोधपुर
			श्री उज्ज्वलजी मेहता-पीपाड़ शहर
			श्री पंकज जी डोसी-जोधपुर
101	जालोर	-	श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर
			सुश्री पूर्णिमा जी गांधी-जोधपुर

पोरवाल क्षेत्र

102	देवली	-	सुश्री रिंकी जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री सोनाली जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्रीमती चंद्रकला जी जैन-आ.मण्डल,सवाईमाधोपुर
103	कुश्तला	-	श्री योगेश जी जैन-हिण्डौनसिटी
			श्री धीरज जी जैन-हिण्डौनसिटी
104	श्योरपुर कलां	-	श्रीमती सुनीता जी नवलखा-कोटा
			श्री राजकुमार जी नवलखा-कोटा
105	सुमेरगंज मण्डी	-	श्री पंकज जी ओस्तवाल-जोधपुर
			श्री रतनलाल जी जैन-बजरिया
106	देई	-	श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर

107	चौथ का बरवाड़ा	-	श्रीमती राजकुमारी जी मेहता-जयपुर
			श्री अनिकेत जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री केतन जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
108	आदर्शनगर (स.मा.)	-	श्रीमती लीला जी सालेचा-जलगांव
			श्री महावीरचन्द जी कोठारी-निमाज
			श्रीमती उजासबाई जी डाकलिया-जोधपुर
109	दूणी	-	श्री पदमचंद जी जैन-बजरिया
			श्री कनिष्क जी जैन-बजरिया
110	बजरिया	-	श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई
			विरक्त बंधु श्री कल्पेश जी कवाड़-निमाज
			सुश्री प्रियंका जी बालड़-जोधपुर
111	जरखोदा	-	श्री उम्मेदचन्द जी जैन-जरखोदा
			श्री शिवकुमार जी जैन-जरखोदा
112	चोरू	-	श्री मगनचंद जी जैन-फाजिलाबाद
			श्री हुकमचंद जी जैन-हिण्डौनसिटी
113	कुण्डेरा	-	श्री अखिलेश जी नाहर-इंदौर
			श्री वीतराग जी नाहर-इंदौर
			श्रीमती सपना जी नाहर-इंदौर
114	सवाईमाधोपुर शहर	-	श्री शांतिलाल जी गांधी-सिंगोली
			श्री संतोष जी गांधी-सिंगोली
			श्रीमती सौरभ जी गांधी-सिंगोली
115	आवासन मण्डल	-	श्रीमती शकुंतला जी तातेड़-बैतुल
			श्रीमती उज्जवलाजी जैन-जामनेर
116	महावीर नगर, स.मा.	-	श्री अभिषेक जी नाहर-इंदौर
			श्री राहुल जी तातेड़-इंदौर
			श्री हार्दिक जी नाहर-इंदौर
117	पचाला	-	श्री अशोक जी पितलिया-सिगोली
			सुश्री अंकिता जी पितलिया-सिंगोली
			सुश्री रूचिका जी पितलिया-सिंगोली
118	इन्द्रगढ़	-	श्रीमती विमलादेवी जी जैन-बजरिया
			श्रीमती राजेशदेवी जी जैन-सवाईमाधोपुर
119	आलनपुर	-	श्री जम्बुकुमार जी जैन-आलनपुर
		-	सुश्री यशु जी जैन-आलनपुर
120	बाबई	-	स्थानीय
121	उनियारा	-	स्थानीय

122	फलोदी क्वारी	-	स्थानीय

पल्लीवाल क्षेत्र

123	करोली	-	श्रीमती इंद्रा जी पारख-जयपुर
			श्रीमती लाडदेवी जी खारेड़-जयपुर
			श्रीमती लक्ष्मी जी जैन-जयपुर
124	बरगमा	-	श्री मुन्नालाल जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर
125	रसीदपुर	-	श्री विमलचंद जी पोरवाल-इंदौर
			श्री अमृत जी भटेवरा-इंदौर
126	कठुमर	-	श्री प्रसुन जी जैन-खोह
			श्री कस्तुरचंद जी जैन-खेरली
127	खोह	-	श्री अशोककुमार जी जैन-महुआ
			श्रीमती शशिकांता जी जैन-भरतपुर
128	मण्डावर	-	श्री वीरेन्द्र जी झामड़-जयपुर
			श्री त्रिलोक जी डागा-जयपुर
			श्री पुखराज जी कुचेरिया-जयपुर
129	पहरसर	-	श्रीमती पारसकंवर जी कुम्भट-जोधपुर
			श्री अभिषेक जी जैन-जयपुर
			सुश्री राजल जी शर्मा-जोधपुर
130	परवेणी	-	श्री पदमचंद जी जैन-नदबई
			श्रीमती गोमती जी जैन-नदबई
131	खेरली	-	श्री नवनीत जी चोरडिया-शिरपुर
			श्री मुकेश जी बुरड़-शिरपुर
			श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर
132	गंगापुर सिटी	-	श्री लल्लुलाल जी जैन-आ. मण्डल, सवाईमाधोपुर
			श्री पदमचन्दजी जैन-बजरिया
133	नसियां गंगापुर	-	श्री सुरेशचन्द जी जैन-खेरली
			सुश्री ज्योति जी जैन-नसिया गंगापुर
134	वर्धमान नगर, हिण्डौन-		श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत-जयपुर
			श्रीमती सुशीला जी हीरावत-जयपुर
			श्री मनीष जी चोरडिया- सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री सुदर्शन जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
135	सहाडी	-	श्री महेन्द्र कुमार जी जैन-सहाडी
136	भरतपुर	-	श्री जगदीशप्रसाद जी जैन-कोटा

			सुश्री प्रेरणा जी जैन-कोटा
			सुश्री अंतिमबाला जी जैन-कोटा
137	गोपालगढ़ भरतपुर	-	श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			सुश्री रानू जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
138	हिण्डौन सिटी	-	श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा
			श्री तरूणकुमार जी बाफना-पूना
			श्रीमती साधना जी बाफना-पूना
139	सेवाला	-	श्री पारसचंद जी जैन-गोपालगढ़, भरतपुर
			श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
140	क्यारदाखुर्द	-	डॉ. विमलचंद जी जैन-हिण्डौन सिटी
			सुश्री खुशबू जी जैन-हिण्डौन सिटी
141	बौंण	-	श्री दिलरूपचंद जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री राजेश जी जैन-हिण्डौन सिटी
142	मलपुरा	-	श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौनसिटी
			श्री अजय जी जैन-हिण्डौन सिटी
143	सेंथली	-	स्थानीय

अन्य क्षेत्र

144	जमशेदपुर	-	श्री पी.शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई
			श्री राकेशकुमार जी जैन-जयपुर
145	कोलकाता	-	श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर
			श्री कांतिलाल जी पारख-जोधपुर
			विरक्त बंधु श्री विवेक जी लूंकड़-जोधपुर
146	बनारस	-	श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़ शहर
			श्रीमती विमला जी मुल्तानी-जोधपुर
147	दूदू	-	श्री जिनेन्द्र जी जैन-जयपुर
			श्री निर्मल जी मुथा-पीपाड़ शहर
148	कानपुर	-	श्री महेन्द्रकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री जितेश जी जैन-जयपुर
			श्री अरिहन्त जी जैन-जयपुर
149	बलरामपुर	-	श्री दीपेश जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री अनुज जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री अभिषेक जी जैन-सिद्धांतशाला,जयपुर
150	धमतरी	-	श्री अनिल जी कोठारी-जलगांव
			श्री अलंकार जी मुणोत-जलगांव

151	बुहारी	-	श्री अखिल जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री आशीष जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री पवन जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
152	हनुमानगढ़	-	श्री गोपालराज जी अबानी-जोधपुर
			श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर
153	जोबनेर	-	श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा-ब्यावर
			विरक्त बंधु श्री महावीर जी जैन-निमाज
154	चाकसू	-	श्रीमती शांता जी मोदी-जयपुर
			सुश्री नेहा जी चोरडिया-जलगांव
155	नारनोल	-	श्री राजेन्द्र जी चोरडिया-इंदौर
			श्री लक्ष्मीचंद जी छाजेड़-समदड़ी
156	गोडासर(अहमदाबाद)-		श्रीमती अकलकंवर जी मोदी-जोधपुर
			श्रीमती सायरबाई जी मेहता-जोधपुर
157	गंगाखेड़-		श्रीमती मंजूजी जैन-उमरी
			सुश्री पूजा जी जैन-उमरी

-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक

जिनवाणी पर अभिमत

श्री अशोक पटेल

आपके यहाँ से सम्पादित मासिक 'जिनवाणी' पत्रिका आज बौद्धिक विकास के लिए बेहद ही श्रेष्ठ है एवं इसमें प्रकाशित आलेख पाठक को चिन्तन के नव सूत्र प्रदान कर उसे जिज्ञासु बनाते हैं तथा साथ ही उसकी बौद्धिक क्षमता बढ़ाते हैं।

जोधपुर की अनेक संस्थाओं जिनमें सरकारी, गैर-सरकारी उपक्रम शामिल हैं, आपके द्वारा नियमित रूप से 'जिनवाणी' भिजवाई जा रही है। यह पाठकों, सुधीजनों के लिए सौभाग्य की बात है। छोटे से पृष्ठ पर 'जिनवाणी' की खूबियाँ लिख पाना संभव नहीं है।

हमारे यहाँ ग्राम सेवा सहकारी समिति में कुल नौ गांव आते हैं, यथा- छीपासनी, कड़वड़, देसुरीया, खारोलान, देसुरिया विश्नोइयां, धड़ाव, रलावास, थबुकड़ा, जाजीवाल भाटीयां तथा लौरड़ी पण्डितजी। किसानों का सक्रिय रूप से यहाँ आना जाना रहता है तथा साहित्य के प्रति अनुराग, निष्ठा है। यदि संभव हो सके तो आप हमारे यहाँ भी 'जिनवाणी' की एक प्रति प्रतिमाह भेंट करने की कृपा करें। इससे यहाँ भगवान महावीर, अहिंसा एवं मानवता के विचारों का लाभ मिलेगा। समिति का पता- लौरडी पण्डितजी ग्राम सेवा सहकारी समिति लि., गावं पोस्ट- लौरड़ी पण्डितजी, वाया- लवेरा बावडी, तहसील-जिला-जोधपुर-342037 (राज.)

दिनांक-24 सितम्बर, 2016 *लौरड़ी पण्डितजी, जिला-जोधपुर (राज.)*

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित

आगम साहित्य

1. **दशवैकालिक सूत्र-** (मूल्य-60.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 12 + 316 = 328, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., सम्पादन-पं. शशिकान्त झा) दशवैकालिक सूत्र का मूल, अर्थ, अन्वयार्थ, भावार्थ/विवेचन, टिप्पण आदि के साथ हिन्दी पद्यानुवाद से भी सम्पृक्त है। दशवैकालिक सूत्र श्रमणाचार का सर्वाङ्ग एवं संक्षिप्त रूप प्रतिपादन करता है। इसके स्वाध्याय से श्रमण तो अपने आचार के प्रति सजग एवं दृढ़ हो ही सकते हैं; किन्तु श्रावक भी अपना ज्ञानवर्धन कर श्रमणाचार के पालन में सहयोगी बन सकते हैं।

2. **उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1** (मूल्य-60.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 24 + 400 = 424 तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., सम्पादक-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) उत्तराध्ययन सूत्र जैन आगम-साहित्य का प्रतिनिधि आगम है। उत्तराध्ययन सूत्र का मर्म, सरलतम विधि से जन-जन तक पहुँचाने के लिए इसका हिन्दी में पद्यानुवाद, संस्कृत-छाया, अन्वयार्थ, भावार्थ एवं विवेचन दिया हुआ है। अन्त में 5 परिशिष्टों के माध्यम से विशेष सामग्री भी प्रस्तुत की है। प्रथम भाग में 1 से 12 अध्ययन जिसमें विनय, परीषह-विजय, दुर्लभ अंग चतुष्टय आदि साधनापरक अध्ययनों का वर्णन किया गया है।

3. **उत्तराध्ययन सूत्र भाग-2-** (मूल्य-100.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 24 + 444 = 468, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., सम्पादक-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) मोक्षमार्ग के सभी पक्षों एवं जिज्ञासाओं का आवश्यक समाधान उत्तराध्ययन सूत्र में उपलब्ध होता है। आचार्यप्रवर ने इस भाग में सूत्र, हिन्दी पद्यानुवाद, संस्कृत छाया, अन्वयार्थ, भावार्थ एवं विवेचन के माध्यम से 13 से 24 अध्ययनों का वर्णन किया है। जिसमें पाप श्रमण, सभिक्षुक, समिति गुप्ति, चित्त-संभूत आदि प्रेरणादायी अध्ययनों का समावेश है। साथ ही 5 परिशिष्टों के माध्यम से विशेष सामग्री उपलब्ध करवायी गयी है।

4. **उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3-** (मूल्य-100.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 16 + 542 = 558, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., सम्पादक-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) उत्तराध्ययन सूत्र को आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. जैनधर्म की गीता के रूप में देखते थे। इस भाग में 25 से 36 अध्ययनों की मूल प्राकृत, संस्कृत-छाया, हिन्दी पद्यानुवाद, अन्वयार्थ, भावार्थ को लिया गया है। इसमें सामाचारी, मोक्षमार्ग, सम्यक्त्व पराक्रम, लेश्या आदि तात्त्विक अध्ययनों के साथ तप मार्ग, चरण विधि आदि आचार सम्बन्धी अध्ययनों का समावेश है। उपयोगी 4 परिशिष्ट भी संलग्न हैं।

(क्रमशः)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)
फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

प्रकाशित साहित्य-सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक/प्रेरक	मूल्य
1.	अमरता का पुजारी*	पं. शशिकान्त झा	15
2.	अमृत-वाक्*	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
3.	अजीव-पर्याय	श्री धर्मचन्द जैन	5
4.	आवश्यक सूत्र (हिन्दी-अंग्रेजी)*	संकलित	10
5.	आवश्यक सूत्र (बड़ी साइज)	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	100
6.	आवश्यक मलियागिरी वृत्ति	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	125
7.	आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग	आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	4
8.	आचारांगसूत्र (मूल)	संकलित	10
9.	आध्यात्मिक आलोक	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	50
10.	आत्म परिष्कार*	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	5
11.	आत्म चिन्तन	श्री भंवरलाल बोथरा	15
12.	आनुपूर्वी	संकलित	10
13.	अहिंसा निउणा दिट्ठा	प्रो. कल्याणमल लोढ़ा	40
14.	अध्यात्म की ओर	श्री जसराज चौपड़ा	40
15.	अन्तगडदसासूत्र	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	40
16	अन्तगडदसासूत्र (बड़ा साइज)	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	100
17.	अचित्त जल का विज्ञान एवं जल	डॉ. जीवराज जैन	50
18.	भक्तामर स्तोत्र	श्री जम्बूकुमार जैन	10
19.	भगवान महावीर	संकलित	40
20.	चौदह नियम	संकलित	5
21.	24 ठाणा का थोकड़ा	श्री धर्मचन्द जैन	5
22.	Concept of Prayer	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	25
23.	दशवैकालिक सूत्र	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	60
24.	दशवैकालिकसूत्र (हिन्दी भावार्थ)	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	20
25.	दीक्षा कुमारी का प्रवास*	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	25
26.	दो बात	श्री शशिकान्त झा	5
27.	दुर्गादास पदावली*	मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म.	5
28.	दुःखरहित सुख	श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	40
29.	द्रव्यलोकप्रकाश	संकलित	100

30.	एकादश चरित्र संग्रह	श्री सम्पतराज डोसी	15
31.	ऐतिहासिक काल के तीन तीर्थंकर	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	100
32.	गजेन्द्र सुक्ति सुधा*	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	20
33.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	15
34.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	15
35.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-3	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	25
36.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-4	आ.श्री हस्तीमलजी म.सा.	15

*चिह्नित पुस्तकें वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

(क्रमशः)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाश्य साहित्य हेतु सहयोग अपेक्षित

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से निम्नलिखित सत्साहित्य का अतिशीघ्र पुनः मुद्रण किया जाना है। आप सभी सत्साहित्य प्रेमी बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि सत्साहित्य प्रकाशन में उदारमना होकर अर्थसहयोग प्रदान करने की कृपा करावें। अर्थसहयोग की स्वीकृति की सूचना सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को दिरावें। दूरभाष नं. 0141-2575997, 0141-4068798, Email:sgpmandal@yahoo.in

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	मुद्रण संख्या	पुस्तक में पृष्ठ	अनुमानित व्यय राशि रुपयों में
1.	वीर गुण गौरव गाथा	1100	28 + 285 = 313	98,000/-
2.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-7	550	64	11,000/-
3.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-8	550	65	11,000/-
4.	भक्तामर स्तोत्र	2100	8 + 88 = 96	32,000/-
5.	अंतगडदसा सूत्र	2100	20 + 268 = 288	70,000/-
6.	आवश्यक सूत्र (अंग्रेजी)	1100		21,000/-
7.	गुणस्थान स्वरूप	550	4 + 44 = 48	12,000/-
8.	रत्नस्तोक मंजूषा	1100	4 + 76 = 80	18,000/-
9.	प्रेरक कथाएँ	550	4 + 128 = 132	20,000/-
10.	अध्यात्म की ओर	550	4 + 208 = 212	27,000/-
11.	दुःख रहित सुख	550	22 + 194 = 216	37,000/-
12.	ज्ञात सूत्र की कथाएँ	550	8 + 104 = 112	17,000/-
13.	47 बोल की बंधी	550	4 + 36 = 40	10,000/-
14.	समिति गुप्ति	550	4 + 28 = 32	10000/-
15.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7	550	4 + 324 = 328	35500/-
16.	जैन लीजेण्ड पार्ट-1 (अंग्रेजी)	500	368	72000/-

समाचार विविधा

आचार्यप्रवर के निमाज चातुर्मास में रत्नत्रय की साधना में निरन्तरता

महासती गरिमाश्रीजी के अतिरिक्त 8 मासक्षपण

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द ठाणा 6 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** आदि ठाणा 4 के मंगलमय, कल्याणकारी वर्षावास से **निमाज** कस्बा धर्मस्थली बना हुआ है।

प्रातःकाल से लेकर रात्रिपर्यन्त धर्माराधना एवं ज्ञानार्जन का क्रम चलता रहता है। पूज्य आचार्य भगवंत हर आगत दर्शनार्थी को संभालते हुए धर्मस्थान में सामायिक करने व रात्रि भोजन के त्याग के नियम पालन की प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण व रात्रि संवर साधना भाइयों की पूज्य गुरुदेव के विराजने के स्थल सुशीला भवन में एवं बहिनों की महासतियाँ जी म.सा. की सेवा में स्थानक भवन में गतिमान है। चातुर्मास प्रारम्भ से एकाशन, आयंबिल, बियासन, उपवास, तेला व दया की आराधना की लड़ी बराबर चल रही है।

28 सितम्बर को जोधपुर का दिग्विजय नगर संघ पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास की विनति लेकर पावन चरणों में उपस्थित हुआ। नन्दीसूत्र की वाचना आज पूर्ण हुई एवं 29 सितम्बर से उपासकदशा सूत्र की वाचनी प्रारम्भ हुई। 30 सितम्बर को विद्वत् संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धर्मचन्द जी जैन आदि अपने साथियों के साथ पधार आये थे।

1 एवं 2 अक्टूबर को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं निमाज जैन श्री संघ के तत्त्वावधान में विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी का विषय- **''जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन''** था। संगोष्ठी के दो दिनों में 20 से अधिक शोधालेख एवं सारगर्भित प्रवचन हुए। क्रोध, मान, माया एवं लोभ के स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण के उपायों पर विस्तृत चर्चा हुई। कषाय के विविध आयामों की जैन, बौद्ध एवं वैदिक परम्पराओं में हुए चिन्तन के साथ पाश्चात्त्य दार्शनिकों के विचारों को भी विद्वानों के द्वारा अभिव्यक्ति दी गई। दोनों दिन पूज्य आचार्यप्रवर प्रवचन के समय संगोष्ठी

में विराजे एवं उद्‌बोधन दिया। जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराजजी दूगड़ ने मुख्यातिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कषाय को आत्मविकास में बाधक बताया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. ने भी कषाय पर ही प्रवचन फरमाए। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गुलेच्छा सहित अनेक पदाधिकारियों ने संगोष्ठी का लाभ लिया।

2 अक्टूबर को मसूदा व फूलियाकलां संघ दर्शनार्थ एवं भोपालगढ़ व सूरत संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। 3 अक्टूबर को जयपुर का वृहद् संघ पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में रहा। निमाज निवासी प्रवासी जैन बन्धुओं के स्नेह मिलन का प्रसंग बना। 4 अक्टूबर को लालभवन संघ, जयपुर चातुर्मास प्रदान करने की भावना से तथा आध्यात्मिक शिक्षा समिति के पदाधिकारी एवं शिक्षक गण पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में पधारे। पूज्यश्री ने फरमाया कि प्रत्येक क्षेत्र में योग्य शिक्षकों की सेवाएँ उपलब्ध हो सके, इसके लिए जिन शिक्षकों की जिस विषय में विशेष अभिरुचि है, लगन है, पकड़ है, भावना है, उन्हें उस विषय में आगे बढ़ाने के अवसर मिलें। इससे विषय विशेषज्ञों के अभाव की पूर्ति हो सकेगी। साध्य, साधन आपके पास हैं, अपेक्षित प्रगति के लिये चिन्तन आवश्यक है। 6 अक्टूबर को करमावास संघ की ओर से क्षेत्र फरसने की विनति पावन श्री चरणों में रखी गई। 8 अक्टूबर से आयंबिल ओली प्रारम्भ हुई, कई भाई/बहिनों ने नौ दिवसीय आयंबिल साधना का लक्ष्य रखा।

9 अक्टूबर से शिविरों में अध्यापन की सेवा देने वाले शिक्षकों का चार दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। इसमें श्री प्रकाशचन्दजी जैन-प्राचार्य, श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार ने शिविर में प्रशिक्षण दिया। समय-समय पर **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** व **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** ने शिविरार्थी शिक्षकों को गुणवत्ता वर्धन के सूत्रों से लाभान्वित किया। सोजत रोड संघ व बर संघ विनति की भावना से पूज्यप्रवर की सेवा में पधारे। 11 अक्टूबर को आचार्यप्रवर **पूज्य श्री भूधरजी म.सा.**के त्यागमय संयमी जीवन पर उनकी पुण्य तिथि के प्रसंग पर महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने गुणानुवाद किया। निफाड़ संघ, नासिक संघ, मुम्बई संघ, पीसांगन संघ विनति लेकर गुरु भगवन्त की सेवा में पधारे। 12 अक्टूबर को युग प्रधान **आचार्य श्री धर्मदासजी म.सा.** की दीक्षा तिथि पर **महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी**

म.सा. ने विशेष प्रवचनामृत फरमाया। शिक्षक शिविर के समापन दिवस पर पूज्य आचार्य भगवन्त ने सामूहिक रूप से आगम वाचना हेतु प्रेरणा की।

13 अक्टूबर को पीपाड़ निवासी श्रीमती वनिता जी मुथा ने 50 दिवसीय उग्र तपस्या के तथा श्रीमती चंचलदेवीजी मुथा ने बारह बेले तप की आराधना के अनन्तर तेले की तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। 15 को साबरमती संघ अहमदाबाद चातुर्मास प्राप्ति की भावना से पूज्य गुरुदेव के चरणों में उपस्थित हुआ। 16 अक्टूबर को आयंबिल एवं नवपद की आराधना की पूर्णता के साथ आचार्यप्रवर श्री हम्मीरमलजी म.सा. की 153 वीं पुण्यतिथि का योग बना। लगभग 25 बहिनों ने 15-15 सामायिक के प्रत्याख्यान लेकर रात्रि साधना की। ब्यावर से 13 बहिनों ने पधारकर रात्रि साधना का अर्घ्य अर्पित किया। 50 भाइयों द्वारा भी साधना की गई। 18 अक्टूबर को बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं ने प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया तथा माता-पिता के चरण स्पर्श करने के नियम लिए। बैंगलोर संघ पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में उपस्थित हुआ। नागौर संघ सदस्यों ने चातुर्मास की विनति प्रस्तुत की।

23 अक्टूबर को रत्नसंघ के प्रथम आचार्यप्रवर पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. की 215 वीं पुण्यतिथि के प्रसंग पर महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने क्रियानिष्ठ आचार्यप्रवर के संयमी जीवन में विद्यमान विशेषताओं पर प्रवचनामृत फरमाते हुए कहा कि संघनायक गुमानचन्द्रजी म.सा. ने संथारे के साथ मरण का वरण किया था। साधक आत्माओं में शिथिलताओं को बल नहीं मिले, इस हेतु उन्होंने 21 बोलों की मर्यादा की पृष्ठभूमि तैयार कर ली थी। वे गुणग्राही साधक थे। इस दिन बीजापुर संघ दर्शनार्थ एवं जोधपुर संघ दीक्षा प्रसंग के साथ चातुर्मास की विनति करने पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। श्री तेजराज जी भण्डारी जो निमाज संघ के संघ प्रमुख हैं- उनका समस्त परिवार पूज्य आचार्य श्री की सेवा में दर्शन लाभ की भावना से उपस्थित हुआ। पूज्यश्री ने सभी को नियमित सामायिक करने के नियम करवाये। बैंगलोर से भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ विधायक धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लहरसिंह जी सिरोया, जो वर्तमान में कर्नाटक सरकार में एम.एल.सी. जैसे उच्चस्तरीय पद को सुशोभित कर रहे हैं ने पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में सेवा व दर्शनों का लाभ लिया। धर्मधरा निमाज में 26 व 27 अक्टूबर को दो दिवसीय "आचार्य हस्ती-हीरा विकलांग शिविर" का आयोजन हुआ, जिसमें दिव्यांग व्यक्तियों को निःशुल्क उपकरण चिह्नीकरण का कार्य भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर द्वारा किया गया। चयनित व्यक्तियों को आगामी दिनों में होने वाले शिविर में ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, जयपुर फुट (कृत्रिम पैर), कैलिपर्स, बेल्टशूज, बैसाखी,

कम सुनने वालों को कान की मशीन, बुजुर्ग छड़ी आदि उपकरण निःशुल्क वितरित किये जायेंगे।

चातुर्मास काल में तेले, पचोले, अठाई, नौ, ग्यारह के अतिरिक्त निम्न तपस्वी भाई/बहिनों ने दीर्घ तपस्या का अर्ध्य श्रद्धा भक्ति के साथ पूज्य आचार्य भगवंत की चरण सन्निधि में अर्पित किया- 1. श्रीमती प्रियंकाजी धर्मपत्नी श्री महावीरजी कोठारी, पुत्रवधू वीरपिताश्री कुशलराजी कोठारी, निमाज ने 30 दिवसीय, 2. श्रीमती मदनकंवरजी धर्मसहायिका श्री हुक्मीचंदजी डोसी चावण्डिया वाले-बैंगलोर ने 30 दिवसीय, 3. श्रीमती निर्मलादेवी जी धर्मसहायिका श्री पदमचन्दजी धोका, निमाज वाले-रामनगर ने 30 दिवसीय, 4. श्रीमती राजकुमारीजी धर्मपत्नी श्री वसन्तकुमारजी मुथा-पाली ने 30 दिवसीय, 5. श्रीमती ललिताबाईजी धर्मसहायिका श्री सुभाषचंदजी धोका निमाज वाले-मैसूर ने 32 दिवसीय, 6. श्रीमती बीनाजी धर्मसहायिका श्री भागचन्दजी मेहता-जोधपुर ने 36 दिवसीय, 7. श्री मोहनलालजी जैन सुपुत्र श्री मोतीलालजी जैन-शहर सवाईमाधोपुर ने 31 दिवसीय, 8. श्री अरूणकुमारजी भण्डारी सुपुत्र श्री दशरथमलजी भण्डारी-अहमदाबाद ने 72 दिवसीय।

निमाज जैन श्री संघ का हर पदाधिकारी, हर कार्यकर्ता अहोभाव से हर आगत दर्शनार्थी के पधारने पर पलक पावड़े बिछाये समुद्यत रहता है। निमाज संघ की अतिथि-सत्कार अंतरंग भावना श्लाघनीय एवं प्रमोदकारी है। सभा संचालन का दायित्व श्री निर्मलकुमारजी बम्ब-संघ मंत्री व वीर भ्राता श्री महावीरजी कोठारी निर्वहन कर रहे हैं।

-जगदीश जैन

जोधपुर में ज्ञानाराधन-तपाराधन की निरन्तरता

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में दिग्विजयनगर-गुलाबनगर में चातुर्मास ज्ञान-ध्यान एवं तपाराधना के साथ गतिमान है। गुरु भगवन्तों की प्रेरणा से नवपद ओली की धर्मसाधना हुई। दीपावली पर पटाखे नहीं छोड़ने की प्रेरणा की गई, जिससे युवकों ने घर-घर जाकर लगभग 160 परिवारों को पटाखे नहीं छोड़ने हेतु प्रेरित किया। नवरात्रि से ओली पर्यन्त श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. ने लगभग 15 दिन ध्यान-साधना की। उसके पश्चात् मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने तीन दिन ध्यान-मौन की साधना की। 14 अक्टूबर को जोधपुर संघ की कार्यकारिणी की बैठक हुई, जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आचार्यप्रवर की सेवा में विनति हेतु श्रावक-श्राविकाओं का प्रतिनिधि मण्डल जाए। अतः 18 अक्टूबर को लगभग 100 श्रावक-

श्राविकाओं एवं युवक परिषद् के सदस्य आचार्यप्रवर की सेवा में पहुँचे तथा शेखेकाल स्पर्शन, मुमुक्षुओं की दीक्षा एवं आगामी चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। संघ अध्यक्ष ने आचार्य भगवन्त से निवेदन किया कि जोधपुर क्षेत्र के सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधि आज आपकी सेवा में उपस्थित हैं एवं आपसे यही निवेदन कर रहे हैं कि जोधपुर में उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखाजी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आप निमाज चातुर्मास पूर्ण होने पर जोधपुर की ओर विहार करने की कृपा करावें। निमाज से दोपहर में प्रस्थान कर पीपाड़ में सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया एवं उनसे भी शेखेकाल जोधपुर पधारने की विनति की। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

बालोतरा में पर्युषण पश्चात् भी उत्साह

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ज्ञान-दर्शन-तप आराधना का विशेष उपक्रम गतिमान है। देश भर से श्रद्धालुजनों एवं संघों का आवागमन चल रहा है। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् भी लगभग 10 बजे तक युवा एवं ज्ञान रसिक श्रावक मुनिश्री के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, शंका समाधान एवं नये ज्ञान का अभिवर्द्धन कर रहे हैं। पर्युषण पर्व तक लगभग 100 अठाई तप के पश्चात् भी तप का क्रम जारी है। नवपद ओली तप आराधना के दिनों में बड़ी संख्या में आयंबिल तप हुए। बालोतरा के इस आध्यात्मिक चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, तप-आराधन, संघ-सेवा, साधर्मि भक्ति एवं श्रद्धालुजनों का आवागमन विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

-ओमप्रकाश बांठिया

महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्माराधन

पावटा-जोधपुर- शासनप्रभाविका, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। नित्य प्रवचन एवं धर्माराधना का कार्यक्रम चल रहा है। श्राविकाओं ने आयंबिल ओली तप साध्वीप्रमुखाजी के सान्निध्य में किया। साध्वीप्रमुखाजी के स्वास्थ्य में समाधि है। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 15-15 सामायिक के साथ धर्मजागरणा हुई। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

नदबई- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में नवपद ओली आराधना दिवसों में प्रतिदिन 12 घण्टे का नवकार मंत्र का जाप हुआ। 80 भाई-बहनों ने नवकार मंत्र का डायरियों में लेखन किया। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 100 महिलाओं ने 15-15 सामायिक की साधना की। दीपावली के अवसर पर वीरत्थुई का

नियमित स्वाध्याय चल रहा है। दीपावली तक कई भाई/बहिन 108 वीरत्थुई का स्वाध्याय करेंगे। 23 अक्टूबर को पल्लीवाल एवं पोरवाल क्षेत्र के **स्वाध्यायियों की कार्यशाला** आयोजित की गई। 25 से 27 अक्टूबर तक पल्लीवाल क्षेत्र की बालिकाओं का **धार्मिक शिविर** आयोजित हुआ। *-नरेशचन्द जैन-मंत्री, 094609-12255*

शक्तिनगर (जोधपुर)- व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में चातुर्मास धर्माराधना के उत्साह के साथ गतिशील है। पर्वाधिराज पर्युषण में श्री सम्पतराजजी बोथरा ने 31 दिवसीय मासक्षपण तप, श्रीमती कमलाजी गुलेच्छा ने 28 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान किए। उसके पश्चात् सुश्री सोनूजी खिंवसरा ने 31 दिवसीय, श्रीमती खुशबूजी दुग्गड़ ने 29 दिवसीय तप स्वीकार किए। श्री चंचलजी बोथरा ने पौषध सहित 21 दिवसीय तपस्या की। 15, 11,9 दिवसीय तप के साथ 18 अठाई, 2 चोले, 100 तेले एवं 10 बेले आदि अनेक तप हुए। एकाशन के पाँच मासक्षपण एवं आयंबिल के तीन मासक्षपण सम्पन्न हुए। 15 एकान्तर तप चल रहे हैं। निम्नांकित श्रावकों ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया- श्री चंचलजी बोथरा, श्री अजीतराजजी कांकरिया, श्री शांतिलालजी ओस्तवाल। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिता का आयोजन होता है। पर्युषण में लगभग 50 जनों ने सिद्धपद की आराधना की। नवपद आराधना में आयंबिल एवं नींवी की तपस्या हुई। पर्युषण पश्चात् 18 बहिनों ने उपवास, बीयासन, नींवी, एकाशन की तपस्या क्रम से चार बार करते हुए अकषाय तप किया। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में लगभग 90 श्राविकाओं एवं 20 श्रावकों ने धर्मजागरणा कर सामायिक की साधना की।

-गजेन्द्र चौपड़ा, सचिव-युवक परिषद्

फुलियाँकला- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा., महासती श्री कौशल्याजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में गाँव के जैन-अजैन सभी भाई-बहिन जिनवाणी का लाभ ले रहे हैं। तपस्या का क्रम बना हुआ है। वीरमाता श्रीमती सूरजदेवीजी ने 11 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान लिए हैं तथा आगे बढ़ने के भाव हैं। चातुर्मास में एक अठाई पहले कर चुकी हैं। 9 से 16 अक्टूबर तक सजोड़े नवकार मंत्र का जाप रखा गया, जिसमें 45 जोड़ों ने लाभ लिया। शरद् पूर्णिमा पर 15-15 सामायिक की आराधना हुई। क्षेत्र के श्रावक-श्राविका प्रतिक्रमण, 25 बोल याद कर रहे हैं। कुछ का प्रतिक्रमण पूर्ण हो गया है।

-धर्मीचन्द चौधरी, संरक्षक-09928778690

जलगाँव- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं, युवकों एवं बच्चों में उत्साह का वातावरण बना हुआ है। महासती श्री मुदितप्रभाजी के द्वारा युवकों को प्रातः 7-8 बजे तक

विभिन्न उपयोगी विषयों पर सम्बोधित किया जाता है, जिसमें 125-150 युवक स्वतः प्रेरित होकर उपस्थित हो रहे हैं तथा प्रत्येक शनिवार को विवेचित विषयों की परीक्षा ली जाती है। प्रत्येक रविवार को महिलाओं के लिए प्रश्न-मंच आयोजित होता है तथा बालक-बालिकाओं का दोपहर में शिविर लगाया जाता है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही उक्त कार्यक्रम सतत चल रहे हैं। रोचक शैली में आधुनिक पीढ़ी के लिए नवीन उदाहरणों के साथ महासतीवृन्द के द्वारा प्रवचन फरमाए जा रहे हैं, अतः पर्युषण के पश्चात् भी जलगांव की जनता में हर्ष व्याप्त है।

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में 10 से 13 अगस्त तक **स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया गया, जिसमें महासतीवृन्द ने जटिल विषयों को भी बेहद रोचक एवं सुगम तरीके से प्रस्तुत किया।

13 से 15 अगस्त तक **लाइफ डिजाइनिंग शिविर** का आयोजन महासती मुदितप्रभाजी के विशेष प्रयास एवं श्रम से अत्यन्त सफल रहा, जिसमें नागपुर, शिरपुर, कजगांव, भड़गांव, सिल्लौड, घोटी, जामनेर, पाचोरा तथा सीमावर्ती मध्यप्रदेश व दूरस्थ प्रांत चेन्नई आदि से करीब 310 युवतियों ने भाग लेकर अपने जीवन को ऊँचा उठाने एवं परिवार के साथ जीने हेतु महत्वपूर्ण गुर सीखे। 10 एवं 11 सितम्बर को **व्यक्तित्व विकास शिविर** आयोजित हुआ, जिसमें 50 युवकों ने नियम अंगीकार कर जीवन को उन्नत बनाया।

चातुर्मास में एकाशन, आयंबिल, उपवास, तेले, 100 से अधिक अठाई, नौ मासक्षपण बिना किसी प्रलोभन एवं बिना किसी प्रभावना के सम्पन्न हुए हैं। मासक्षपण तप करने वाले हैं- वीरपिता श्री राजेशजी जैन, श्रीमती लांछाबाईजी बाफना, श्री सुरेन्द्रजी पोरवाल, श्री वर्धमानजी कोठारी, रेखाबाई जी जैन, श्री हरीशजी दायमा, श्री विनोदजी कोचर, श्री जसराजजी गेलड़ा, श्री वैभवजी पांडे। नवरंगी, पंचपरमेष्ठी आदि तप भी सानन्द सम्पन्न हुए हैं। -*अलंकार जैन*

रोहिणी (दिल्ली)- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकाशन, आयंबिल, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही है। महासतीजी प्रवचन में 25 बोल की जानकारी करा रहे हैं, जिससे श्रावक-श्राविका बड़े प्रभावित हैं। चेलना और अंजना का चरित्र भी चल रहा है। संवत्सरी महापर्व पर एक बहिन ने 34 की तपस्या पूर्ण की। उन्नीस, बारह एवं नौ की तपस्याओं के साथ कई अठाइयाँ, चोले, तेले एवं बेले सम्पन्न हुए। नीवी का एक मासक्षपण, एकाशन के 10 मासक्षपण एवं अर्द्धमासक्षपण, बीयासन के मासक्षपण, आयंबिल, एकाशन आदि अनेक प्रकार के तप

सम्पन्न हुए। पर्युषण में धार्मिक प्रतियोगिताएँ एवं तीन पचरंगी तप सम्पन्न हुए। तीन श्रावकों ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है- श्रीमती सुनील जितेन्द्र जी जैन, श्रीमती मधु राजेन्द्र जी जैन, श्रीमती नीलम पारसजी जैन।

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 की सन्निधि में अब तक कुल 9 मासक्षपण सम्पन्न हो चुके हैं। पर्युषण पश्चात् भी बड़ी तपस्याएँ चल रही हैं। नवपद ओली में आयंबिल तप हुए। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 37 श्रावक-श्राविकाओं ने 15-15 सामायिक की साधना की। 23 अक्टूबर को 30 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन तप किया। आध्यात्मिक मैच में 50 बालकों ने भाग लेकर 100 प्रश्नों का उत्तर दिया। 6 श्रावक-श्राविकाओं ने सुखविपाक सूत्र कण्ठस्थ किया है तथा पाँच कर रहे हैं। अंतगडसूत्र आदि आगम भी कण्ठस्थ किए जा रहे हैं। थोकड़े सीखने में भी श्राविकाएँ रुचि दिखा रही हैं। 10 जनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है। *-सुनील नाहर, महामंत्री, 098251-25718*

हरसाना- व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में आयंबिल, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही है। रेणुजी जैन द्वारा उपवास का मासक्षपण एवं शोभाजी द्वारा एकाशन का मासक्षपण पूर्ण किया गया है। जमना बहिन ने 11 की तपस्या की है। नौ, आठ एवं पाँच की क्रमशः 3, 5, 4 तपस्याएँ पूर्ण हुई हैं। पर्युषण में 8 दिनों तक नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ तथा श्री प्रकाशचन्दजी जैन एवं श्री रिखबचन्दजी जैन ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। प्रातः 8 से 9 बजे तक ज्ञाताधर्मकथा सूत्र का वाचन होता है। दोपहर में 2 से 3 बजे तक प्रवचन के पश्चात् बालकों की धार्मिक पाठशाला चलती है। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 108 से लेकर 1008 वन्दना का क्रम चल रहा है। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् बहिनों के बीच धार्मिक चर्चा की जाती है। प्रवचन श्रवण हेतु निकटवर्ती ग्रामों से श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन रहता है।

-नितिन जैन-084400-70387

'जैनागम-साहित्य में कषायविषयक चिन्तन' विषय पर निमाज में विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं निमाजश्री संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में **''जैनागम-साहित्य में कषाय-विषयक चिन्तन''** विषय पर 1 व 2 अक्टूबर 2016 को जिनशासन गौरव आगमज्ञ परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि सन्तप्रवरों तथा व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के सान्निध्य में राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी आयोजित हुई। सम्यग्ज्ञान

प्रचारक मण्डल के द्वारा यह छठी राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन था।

1 अक्टूबर : प्रवचन सभा में उद्घाटन सत्र

1 अक्टूबर को प्रातःकाल प्रवचन सभा में **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने **'क्रोध कषाय के स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण'** विषय पर विस्तृत एवं सारगर्भित प्रवचन फरमाते हुए कहा कि क्रोध से पुण्यवानी, खून, बुद्धि, समय, पारिवारिक सम्बन्ध जल जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। क्रोध-निवारण के उपायों की चर्चा करते हुए उन्होंने फरमाया कि मनुष्य को उतावलेपन (Hurry), चिन्ता (Worry) तथा मिर्च-मसालों के अधिक प्रयोग (Carry) से बचना चाहिए। राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष **डॉ. सुषमाजी सिंघवी** ने **'लोभ-कषाय के स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण'** विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लोभी व्यक्ति के सदैव अभाव बना रहता है, अभाव का अनुभव होना दुःख है। इसलिए इच्छाओं पर नियन्त्रण आवश्यक है। इस उद्घाटन सत्र में जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ के कुलपति एवं संगोष्ठी के **मुख्यातिथि प्रो. बच्छराजजी दुग्गड़** ने कहा कि कषाय व्यक्ति की चेतना के विकास को बाधित करता है। उन्होंने इस संगोष्ठी पर प्रसन्नता प्रकट की तथा संगोष्ठी के विषय की महत्ता को रेखांकित किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री पी. शिखरमलजी सुराणा** ने अपने उद्बोधन में कहा कि आत्महित चाहने वाले व्यक्ति को कषाय का त्याग कर देना चाहिए। समतापूर्वक कषायों को जीता जा सकता है एवं समता से आत्मगुणों का विकास होता है। उन्होंने सन् 2010 से प्रति वर्ष होने वाली विद्वत्संगोष्ठियों की निरन्तरता के प्रति प्रमोद भाव व्यक्त किया।

पूज्य **आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** ने फरमाया कि कषाय का रोग तीनों लोकों में व्याप्त है। मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबन्धी कषाय में भेद का प्रतिपादन करते हुए कहा कि मिथ्यात्व कार्य है एवं अनन्तानुबन्धी कारण है क्योंकि दूसरे गुणस्थान में मिथ्यात्व नहीं रहता, किन्तु अनन्तानुबन्धी चतुष्क रहता है। तर्कवाद, तत्त्ववाद, क्रियावाद आदि में मुक्ति नहीं है, अपितु कषाय से मुक्ति ही 'मुक्ति' है। उद्घाटन सत्र का संयोजन विद्वत् संगोष्ठी के संयोजक प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने किया।

संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र के पश्चात् पाँच सत्रों में पन्द्रह विद्वानों ने अपने शोधालेख प्रस्तुत किए, जिन पर यथावश्यक चर्चा भी हुई। विभिन्न सत्रों का विवरण इस प्रकार है-

प्रथम सत्र (1 से 3 बजे तक) : संयोजन- डॉ. हेमलताजी जैन, जोधपुर

शोधालेख प्रस्तोता–

1. **डॉ. योगेशकुमारजी जैन**–षट्खण्डागम में मानकषाय का निरूपण।
2. **डॉ. पवनकुमारजी जैन–जोधपुर**– मान कषाय एवं अष्टविध मद : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण।
3. **प्रो. चन्द्रशेखरजी–जोधपुर**– पाश्चात्त्य दार्शनिकों का कषाय–विषयक चिन्तन।

द्वितीय सत्र (3 से 5 बजे तक) : संयोजन– डॉ. अशोकजी कवाड़, चेन्नई

शोधालेख प्रस्तोता–

4. **डॉ. सरोजजी कौशल, जोधपुर**– भारतीय वैदिक दर्शनों में कषायविषयक चिन्तन।
5. **डॉ. हेमलताजी जैन–जोधपुर**– स्थानांगसूत्र में कषायविषयक चिन्तन।
6. **डॉ. दिलीपजी धींग–चेन्नई**– कषाय के पर्यायवाची शब्दों का विवेचन।

तृतीय सत्र (रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक) : श्री प्रकाशजी सालेचा, जोधपुर के संयोजन में शोधालेख प्रस्तोता–

7. **श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, जोधपुर**– सेवा से कषायविजय।
8. **डॉ. राजकुमारजी छाबड़ा, जोधपुर**– क्या आधुनिक युग में कषाय की आत्यन्तिक मुक्ति संभव है?
9. **श्री सौभाग्यमलजी जैन, अलीगढ़**– आगमसाहित्य में कषाय विवेचन।

2 अक्टूबर : प्रवचन सभा में चतुर्थ सत्र

दिनांक **2 अक्टूबर 2016** को संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं संतवृन्द के पावन सान्निध्य में प्रवचन के साथ ही **श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनिजी म.सा.** ने **'कषायविजय में परीषहजय की भूमिका'** एवं व्याख्यात्री **महासती श्री चारित्र लताजी म.सा.** ने **'कषायविजय में सामायिक की भूमिका'** विषय पर प्रेरक उद्बोधन दिया।

इस सत्र का संयोजन श्री धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर ने किया, जिसमें वक्ता थे–

10. **डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर**– कषायविजय में तप की भूमिका।
11. **प्रो. वीरसागरजी जैन, दिल्ली**– आचार्य गुणधरकृत कषायपाहुड का परिचय।

पंचम सत्र (1 से 3.30 बजे तक): डॉ. दिलीपजी धींग के संयोजन में शोधालेख प्रस्तोता–

12. **डॉ. श्वेताजी जैन, जोधपुर**– बौद्ध सुत्तपिटक में कषाय–विषयक चिन्तन।

13. श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली– कषाय का स्वरूप (काव्य प्रस्तुति)।

14. श्री धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर– कषाय एवं गुणस्थान।

15. श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, जयपुर– महामोहनीय कर्म : एक पर्यवेक्षण।

अपराह्न 3.30 बजे विद्वत् संगोष्ठी का सम्पूर्ति सत्र आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत, मुम्बई** के द्वारा की गई। इस सत्र में विद्वानों की ओर से डॉ. सुषमाजी सिंघवी एवं श्री प्रकाशजी सालेचा ने संगोष्ठी के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे सफल बताया। निमाज श्री संघ की ओर से आगन्तुक विद्वानों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के परामर्शदाता **श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी का यह वैशिष्ट्य रहा कि संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मण्डल के अध्यक्ष दोनों दिन संगोष्ठी में उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि इस संगोष्ठी में संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड़ दोनों दिन उपस्थित रहे तथा युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गुलेच्छा ने भी दूसरे दिन पूर्ण मनोयोग से विद्वत्संगोष्ठी के वक्ताओं के विचार सुने तथा सम्पूर्ति सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विद्वत्संगोष्ठी में ऐसे विषय रखे जाएं जिनसे युवा वर्ग अधिकाधिक जुड़े।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा** ने निमाज श्री संघ को आवास एवं भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित किया। सम्पूर्ति सत्र का संयोजन संगोष्ठी संयोजक ने किया। निमाज संघ की ओर से विद्वानों को प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया।

स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर निमाज में सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 09 से 12 अक्टूबर तक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में निमाज में स्वाध्यायी शिक्षक निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में महाराष्ट्र, जोधपुर, जयपुर, मेवाड़, इन्दौर, निमाज के लगभग 25 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में दशवैकालिक सूत्र, नवतत्त्व का थोकड़ा, उत्तराध्ययन सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, कर्म प्रकृति, कर्म ग्रन्थ भाग-2 विषय पर विद्वान प्रशिक्षक श्री प्रकाशचंद जी जैन, जयपुर श्री धर्मचंदजी जैन, जोधपुर, श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर ने प्रशिक्षण दिया। शिविर अवधि में आचार्यप्रवर ने व्यक्तिशः प्रभावी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन भी प्रदान किया। इसके साथ ही श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. ने भी स्वाध्यायी शिक्षकों को नवतत्त्व के थोकड़े से सम्बन्धित विशेष बातें बताई

एवं महासती श्री भावना जी म.सा. ने कर्मग्रन्थ भाग-2 की सुन्दर व्याख्या की। शिविर में पधारने वाले स्वाध्यायी शिक्षकों की आवास-भोजन एवं प्रोत्साहन पुरस्कार की सुन्दर व्यवस्था निमाज संघ द्वारा की गई।

पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्र के स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी सम्मेलन नदबई में सम्पन्न

पोरवाल एवं पल्लीवाल शाखा के स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी सम्मेलन 23 अक्टूबर 2016 को नदबई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सहमंत्री श्री प्रकाश जी सालेचा ने स्वाध्याय संघ की गति-प्रगति रिपोर्ट रखी। स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल ने सभी स्वाध्यायियों को स्वाध्याय संघ के विकास हेतु सुझाव देने हेतु आमंत्रित किया तथा प्राप्त सुझावों का उचित समाधान करने का आश्वासन भी दिया। सम्मेलन में पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्र के लगभग 70 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। सम्मेलन के अन्तर्गत **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** का भी मार्गदर्शन सभी स्वाध्यायियों को प्राप्त हुआ तथा नदबई संघ द्वारा दोनों शाखाओं के सभी पूर्व संयोजकों एवं वर्तमान संयोजकों का सम्मान किया गया। सम्मेलन में पधारने वाले सभी स्वाध्यायियों को नदबई संघ की तरफ से स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। सम्मेलन के अंत में स्वाध्याय संघ परिवार की ओर से सुन्दर आवास-निवास व्यवस्था के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

बनें आगम अध्येता (6)

आवश्यकसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

'बनें आगम अध्येता योजना' के अन्तर्गत आवश्यकसूत्र आगम पर परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा का मूल्यांकन प्रश्न पत्र भरकर जयपुर भिजवाने की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर, 2016 रखी गई है तथा मुख्य समापक परीक्षा सभी केन्द्रों पर 26 फरवरी, 2017 को आयोजित की जायेगी। कृपया परीक्षा में अधिकाधिक बहिनें भाग ले सकें इसकी सूचना अपने क्षेत्र में अवश्य करावें। प्रतियोगिता हेतु पुस्तक का मूल्य 60/- रुपये रखा गया है। **सम्पर्क सूत्र-** श्रीमती बीनाजी मेहता-97727-93625, श्री राकेशजी जैन-94616-63545 एवं आवश्यक सूत्र की पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन:(0141) 2575997/4068798 से मंगवा सकते हैं।

-बीना मेहता-महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता योजना' के

अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में 70 तथा इससे ऊपर के प्राप्तांक वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में हस्तान्तरित की जायेगी। अत: प्रतियोगिता विजेता प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No.

-बीना मेहता-महासचिव

दक्षिण भारत का रत्नसंघीय क्षेत्रीय सम्मेलन 19 नवम्बर को चेन्नई में

दक्षिण भारत का रत्नसंघीय स्नेह मिलन एवं दक्षिण भारत रत्नसंघीय क्षेत्रीय सम्मेलन कार्यक्रम 19 नवम्बर, 2016 को राजा अन्नामलै हॉल, चेन्नई में होगा। इसके साथ 'गुण सौरभ गणिहीरा प्रतियोगिता' का पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, संयोजक

'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण रजत वर्ष के शुभ अवसर पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा **"गुण सौरभ गणि हीरा"** खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर किया गया। जिसका पुरस्कार वितरण समारोह 19 नवम्बर, 2016 को चेन्नई में किया जाएगा। घोषित परिणाम इस प्रकार हैं-

प्रथम (गणिहीरा जन्म पदक)- अरुणा जैन-होशियारपुर (पंजाब)

द्वितीय (गणिहीरा संयम पदक)- रिंकी जैन-अलीगढ़-रामपुरा, टोंक (राज.)

तृतीय (गणिहीरा रजत पदक)- अदिति जैन-अलीगढ़-रामपुरा, टोंक (राज.)

गुण सौरभ पुरस्कार के अन्य विजेता प्रतियोगी- 1. महेन्द्रकुमार सुमन-पाली, 2. प्रेम जैन-अलवर, 3. मधुबाला ओस्तवाल-नासिक, 4. शकुन्तला हींगड़-पाली, 5. शारदा मोदी-जयपुर, 6. सुशीलादेवीजी चोरड़िया-उज्जैन जंक्शन, 7. शीतलजी छाजेड़-करही, 8. प्रीति बोहरा- औरंगाबाद, 9. ज्योति सुराना-चालीसगांव, 10. आशा दुग्गड़-चेन्नई, 11. सुषमा सिंघवी-जोधपुर, 12. रुचिका लुणावत-जोधपुर, 13. संगीता जैन-जोधपुर, 14. मनीषा जैन-चेन्नई, 15. अभिषेक सुकलेचा-जयपुर, 16. सुभाषचन्द कोठारी-चेन्नई, 17. अनिता सुराना-चौपड़ा, 18. जगदीश जैन-सवाईमाधोपुर, 19. भावना मुथा-पीपाड़सिटी, 20. कुसुम बाफना-चेन्नई, 21. लोकेश जैन-जयपुर, 22. अंकित लोढ़ा-

कोटा, 23. हीना मेहता-पाली, 24. भागवन्ती तातेड़-जोधपुर, 25. जयाकुमारी जैन-भरतपुर, 26. रूपेश श्रीश्रीमाल-मलकापुर, 27. कविता-जोधपुर, 28. भंवरलाल लोढ़ा-चेन्नई, 29. महेन्द्रकुमार जैन-सवाईमाधोपुर, 30. पुष्पाजी कटारिया-इलकल, 31. मोनिका जैन-इन्दौर, 32. सपना-अजमेर, 33. सुरेश बडेरा-बाड़मेर, 34. छाया कांकरिया-नासिक, 35. संभव लुणिया-जयपुर, 36. भगवानराज सिंघवी-पाली, 37. अंजलि पाटनी-जयपुर, 38. मंजुला बम्ब-जयपुर, 39. गीता जैन-जालन्धर, 40. पूर्णिमा-नाथद्वारा, 41. प्रमिला मेहता-नाथद्वारा, 42. प्रमिला छाजेड़-पूना, 43. युगल रांका-अहमदाबाद, 44. इंदुबाला बनवट-छनेरा, 45. बबीता पितलिया-पांडरकवाडा, 46. अनिलकुमार जैन-कोटा, 47. संतोषदेवी लोढ़ा-कोटा, 48. प्रकाशचन्द पारख-धनारीकला, 49. जितेन्द्र बांठिया-बाड़मेर, 50. संदीप छाजेड़-समदड़ी, 51. रानी टाटिया-चौपड़ा, 52. चन्द्रा बोथरा-चेन्नई, 53. अंजु चोरडिया-इन्दौर, 54. बबिता जैन-भरतपुर, 55. निर्मला भलगट-चंद्रपुर, 56. सुनीता कांकरिया-अहमदाबाद, 57. रमेश गुन्देचा-बैंगलोर, 58. कीर्ति श्रीश्रीमाल-मलकापुर, 59. मोना मेहता-पाली, 60. अन्तिमा-अलीगढ़, 61. चंचलदेवी चौपड़ा-जोधपुर, 62. शैली मेहता-जोधपुर, 63. किरण कुम्भट-जोधपुर, 64. राकेश सिंघवी-जोधपुर, 65. पंकज भण्डारी-जोधपुर, 66. अर्चना जैन-परबेणी, 67. महावीरचन्द जैन-चेन्नई, 68. मंगलाबाई पींचा-घोटी, 69. भागचन्द पगारिया-सरवाड, 70. उर्मिला जैन-विजयनगर(अजमेर), 71. इंदुबाला पीपाड़ा-अजमेर, 72. पारसमल बाघमार-पचपदरा, 73. पुष्पलता लोढ़ा-पाली, 74. संतोष छाजेड़-आकोला, 75. सुशीला जैन-पाली, 76. हेमलता सिंघवी-अहमदनगर, 77. सुनीता मेहता-जोधपुर।

19 वां भगवान महावीर पुरस्कार समारोह सम्पन्न

चेन्नई- श्री एन. सुगालचन्द जैन द्वारा स्थापित भगवान महावीर फाउण्डेशन प्रतिवर्ष अहिंसा, शाकाहार, शिक्षा, चिकित्सा एवं समाजसेवा के क्षेत्र में समर्पित संस्थाओं अथवा व्यक्तियों को सम्मानित करता है। इस वर्ष 29 सितम्बर 2016 को 19 वें महावीर पुरस्कार समारोह में निम्नांकित संस्थाओं में प्रत्येक को दस लाख रुपये की राशि, अभिनन्दन-पत्र एवं स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया।

1. **अहिंसा एवं शाकाहार–** Compassion Unlimited plus Action, Bangalore, Karnataka
2. **शिक्षा–** Dr. Sapan Naba Kishore Singh, Silchar/Cachar, Assam
3. **चिकित्सा–**Dr. R.V. Ramani, Sankara Eye Care Institutions,

Coimbatore District, Tamilnadu

4. **सामुदायिक एवं समाज सेवा–** Smt. Shamshad Begum, Durg, Chhattisgarh

चेन्नई में यह कार्यक्रम चुनाव आयोग के पूर्व आयुक्त श्री टी.एस. कृष्णामूर्ति की अध्यक्षता में आयोजित हुआ।

-के.नन्दकिशोर, परामर्शदाता, भगवान महावीर फाउण्डेशन

उपासकदशांग पर सिकंदराबाद में विद्वत्संगोष्ठी

आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. के सान्निध्य में सिकंदराबाद (तेलंगाना) में 14-15 अक्टूबर को 'उपासकदशांग सूत्र में श्रावकाचार के विविध आयाम' विषयक राष्ट्रीय जैनविद्या संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का आयोजन आचार्य श्री विजय गुरु चातुर्मास समिति, त्रयनगर के सहयोग से रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी, मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग तथा शांतक्रांति जैन संघ, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि विद्वत्संगोष्ठी जैन एकता का एक प्रकल्प है। विद्वानों को अपने ज्ञानबल से एकता को सुदृढ़ बनाना चाहिये। फाउंडेशन के महासचिव डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया ने बताया कि संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में साध्वी वीणाश्री, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कला संकाय के अधिष्ठाता, जिनवाणी के प्रधान संपादक प्रो. धर्मचन्द जैन, जिनवाणी की सह-संपादक डॉ. श्वेता जैन, साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग, मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग की डॉ. प्रियदर्शना जैन, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या विभाग के डॉ. जिनेन्द्र जैन, डॉ. देव कोठारी, डॉ. हंसा हिंगड़, राकेश लूणिया सहित 18 विद्वानों और शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। संयोजक शांतिलाल कोठारी ने विद्वानों का आभार व्यक्त किया।

- पी.सी. चौपड़ा, संयुक्त सचिव : रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अन्तर्गत विगत 11 वर्षों से रविवारीय संस्कार शिविर Wings to fly निरन्तर रूप से स्वाध्याय भवन साहुकारपेट में एवं पिछले कुछ माह से किलपॉक, रेलवे क्वार्टर्स अयनावरम् एवं ओसवाल गार्डन कुरुकपेट में भी चल रहा है। इस शिविर में शिविरार्थियों को सामायिक, पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा अयोजित परीक्षा पाठ्यक्रम) पर आधारित

अध्ययन करवाया जाता है। साथ ही व्यावहारिक ज्ञान एवं नैतिक संस्कार दिये जाते हैं। शिविर में 31 कक्षाएँ चल रही हैं, जिनमें 38 प्रशिक्षक निःस्वार्थ भाव से सेवा दे रहे हैं। समय-समय पर जैन सिद्धान्तों पर आधारित प्रदर्शनी, नाट्य प्रस्तुति, भजन, संगीत, वाद-विवाद, चित्रकारी, लेखन प्रतियोगिता आदि विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति शिविरार्थियों द्वारा दी जाती है।

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय भवन साहुकारपेट में 9 सितम्बर 2016 को स्वाध्यायी अभिनन्दन-समारोह आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश के 32 क्षेत्रों के 72 स्वाध्यायियों के प्रति श्री प्रकाशचन्दजी मुथा एवं संघाध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी कांकरिया ने आभार व्यक्त किया।

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा सर्व जैन विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन 11 दिसम्बर 2016 को किया जा रहा है। यह सम्मेलन आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन, 32, दादीसेठ, अग्यारी लेन, कालबादेवी, मुम्बई-400002 में प्रातः 9.00 बजे से प्रारम्भ होगा। प्रवेश शुल्क युवक-युवती के लिए रुपये 500/- मात्र है। उम्मीदवार के साथ उनके किन्हीं दो अभिभावकों को प्रवेश दिया जायेगा। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उम्मीदवार को 30 नवम्बर 2016 तक संस्था कार्यालय में अपना आवेदन दो फोटो और प्रवेश शुल्क सहित जमा कराना अनिवार्य होगा। आवेदन जमा करने का पता- जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभादेवी रोड़, मुम्बई-400025, फोनः-099307-56598. *-युगराज जैन*

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान से 'पत्राचार जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम-2017' में प्रवेश हेतु आवेदन करें। जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति पाठ्यक्रम की अवधि 01 जनवरी 2017 से 31 दिसम्बर 2017 तक है। आवेदन-पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त करें-jvs.jainapa.org, apa.jainapa.org

इसी संस्था द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' एवं 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम'-2017 में प्रवेश योजना निम्न प्रकार है-

1. प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि 1 जनवरी 2017 से 31 दिसम्बर 2017 तक तथा
2. अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि 1 जनवरी 2017 से 31 दिसम्बर 2017 तक है।

आवेदन पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त करें-jvs.jainapa.org, apa.jainapa.org

तीनों पाठ्यक्रमों हेतु शुल्क सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2017 होगी। **सम्पर्क-** डॉ.कमलचन्द सोगाणी, निदेशक-अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004

बैंगलुरु- श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ शांतिनगर बैंगलुरु के तत्त्वावधान में समर्थ गच्छाधिपति श्री उत्तमचन्दजी म.सा.की आज्ञानुवर्तिनी एवं विदुषी महासती श्री कंचनकंवरजी म.सा.के समुदाय की महासती श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास अपूर्व तप-त्याग एवं अनोखे धर्म ध्यान के साथ निरन्तर गतिशील है। शान्तिनगर के श्राविका मण्डल एवं नवयुवक मण्डल का पुरुषार्थ एवं जिनप्रभावक सेवाएँ प्रशंसनीय हैं। पर्युषण महापर्व लालबाग के विशाल प्रांगण में मनाया गया। जहाँ शान्त वातावरण का अपूर्व नज़ारा देखने को मिला। अन्तिम श्रोता तक प्रवचन सुनाई दिया। संघाध्यक्ष श्री महावीरचन्दजी मुथा सहित लगभग 125 युवकों ने अपने परिवार के सामूहिक भोज में 31 व्यंजनों से अधिक न करने का संकल्प किया। संवत्सरी तक 500 तेले एवं लगभग 100 अठाई तप हुए। *-छगनमल लुणावत, मंत्री*

बधाई

विद्वद्वर्य डॉ. सागरमल जैन 'श्री मधुकर अर्चना लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड-2016' से सम्मानित

प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर के संस्थापक-निदेशक डॉ. सागरमलजी जैन को 24 सितम्बर 2016 को **श्री मधुकर अर्चना लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड** से छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में मुख्यमंत्री श्री रमणसिंह द्वारा सम्मानित किया गया। इसके पूर्व भी आपको अनेक संस्थाओं से अवार्ड एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया है। आप जैन विद्या एवं दर्शन के गहन अध्येता, स्वाध्यायशील एवं मर्मज्ञ विद्वान हैं। श्वेताम्बर समाज में आप कनिष्ठिकाधिष्ठित विद्वान् मनीषी हैं। आपके निर्देशन में कई संत-सतीवर्य ने शोधकार्य पूर्ण कर विद्यावारिधि से अलंकृत हुए हैं। जैन दर्शन के हर क्षेत्र में आपने अपनी लेखनी चलाई है। आपके द्वारा हिन्दी एवं अंग्रेजी में लिखित एवं प्रकाशित विशाल साहित्य उपलब्ध है। आप शोधपरक एवं विश्लेषणात्मक लेखन में दक्ष हैं। आपको इण्डियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज द्वारा पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में 21 अक्टूबर 2016 को बौद्धदर्शन में कृत योगदान हेतु **मंजूश्री सम्मान** से भी सम्मानित किया गया है।

डॉ. धर्मचन्द जैन 'महाकवि आचार्य ज्ञानसागर' सम्मान से सम्मानित

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में कला, शिक्षा एवं समाज-विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन को ब्यावर (राज.) में 11 अक्टूबर 2016 को मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित एक भव्य समारोह में **महाकवि आचार्य ज्ञानसागर सप्तविंश पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। प्रो. जैन को यह सम्मान जैन धर्म-दर्शन के क्षेत्र में योगदान हेतु प्रदान किया गया है। सम्मान स्वरूप उन्हें शेरवानी पहनाकर अभिनन्दन-पत्र के साथ इक्यावन हजार की राशि का चैक प्रदान किया गया। दिगम्बर समाज के द्वारा श्वेताम्बर विद्वान का सम्मान विगत कुछ दशकों में पहली बार देखा गया। इस समारोह में डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद को 'विद्यासागर सम्मान' से तथा डॉ. शुभचन्द्र जैन, मैसूर को 'सुधासागर सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 9 से 11 अक्टूबर तक आचार्य समन्तभद्र के वाङ्मय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् एवं आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र के तत्त्वावधान में श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से विद्वानों के मध्य किया गया। सम्मानित विद्वानों को सभी विद्वज्जनों द्वारा मुक्ताहार पहनाये गए। *-डॉ. श्वेता जैन, सह-सम्पादक*

जयपुर- डॉ. रीना जैन, जयपुर को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

द्वारा स्व. प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार 03 अक्टूबर 2016 को मुम्बई में संघ समर्पणा महोत्सव में प्रदान किया गया। प्राकृत भारती अकादमी में सेवारत डॉ. रीना बैद को यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'मानवाधिकार और जैन धर्म' पर प्रदान किया गया।

जोधपुर- युवारत्न श्री धीरज डोसी सुपुत्र श्रीमती मीना-नेमीचंदजी डोसी सुपौत्र स्व.

श्रीमती मोहनकंवर-लादुरामजी डोसी ने अखिल भारतीय जैन नेशनल कोरपोरेशन लिमिटेड़, दिल्ली द्वारा आयोजित **''आज के युवा व्यसन एवं फैशन की ओर''** विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। आपको पुरस्कार स्वरूप रजद पदक, प्रमाण पत्र एवं 81000/- रूपये की राशि भेंट की गई। आप एक युवा स्वाध्यायी हैं और कई संस्थाओं में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में आप श्री स्थानकवासी जैन

स्वाध्याय संघ, जोधपुर में कार्यालय प्रभारी, युवक परिषद् में शाखा संयोजक एवं जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर शहर शाखा के संयोजक पद पर भी अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्रावक श्री अर्जुनराजजी मेहता सुपुत्र स्व. श्री गुलराजजी मेहता को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 01 अक्टूबर 2016 पर जयपुर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. अरुण जी चतुर्वेदी एवं विभाग के निदेशक श्री रविजी जैन ने माल्यार्पण, श्रीफल, शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। वयोवृद्ध वरिष्ठ नागरिकों के कल्याणार्थ समय-समय पर उल्लेखनीय सेवा कार्यों को अदम्य उत्साह के साथ सम्पादित करने के उपलक्ष्य में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

जोधपुर- सुश्री तनुश्री सुराणा ने 7 वर्ष की लघु वय में डिस्ट्रिक्ट एमचर रोलर स्केटिंग सोसायटी द्वारा आयोजित थर्ड डिस्ट्रिक्ट लेवल इंटर स्कूल रोलर स्केटिंग कॉम्पीटिशन में रोलर स्केटिंग, रिंग रेस व रोड रेस में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल जीता।

इन्दौर- श्री अन्तरिक्ष जैन सुपुत्र श्रीमती चन्दा-डॉ. जम्बूकुमार जैन 'प्राध्यापक' को सी.बी.एस.ई. की 12 वीं की परीक्षा 92 प्रतिशत से उत्तीर्ण करने पर एवं जी.आर.एम.सी. ग्वालियर में एम.बी.बी.एस. में प्रवेश मिलने पर हार्दिक बधाई।

थांवला (नागौर)- श्री रोहित जैन सुपुत्र श्रीमती सरोजजी-श्री गौतमचन्दजी डूंगरवाल एवं प्रपौत्र स्व. श्रीमती हगामकंवर-स्व. सेठ श्री फूलचन्दजी डूंगरवाल की राजस्थान हाईकोर्ट, जोधपुर में कनिष्ठ न्यायिक सहायक पद पर नियुक्ति हुई है।

पूना- सुश्री नेहा जैन सुपुत्री श्रीमती (डॉ.) राजकुमारी-डॉ. सुरेशजी जैन ने एम.टेक की परीक्षा 9.41 सी.जी.पी.ए. के साथ प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- श्रावकरत्न, गुरुभक्त श्री सिद्धराजजी बाफना सुपुत्र स्व. श्री सुगनचन्दजी बाफना, भोपालगढ़ का 25 अक्टूबर 2016 को निधन हो गया। उनकी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अनन्य श्रद्धाभक्ति

एवं आस्था थी। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के वर्ष 2008 के चातुर्मास में शास्त्रीनगर जोधपुर में उनकी महनीय सेवाएँ रहीं। आजीवन शीलव्रत आदि कई प्रत्याख्यानों से उनका जीवन सुरभित था। जीवदया, मानव सेवा आदि प्रवृत्तियों में उनका सदा उदार सहयोग रहा। उनके अग्रज भ्राता श्री मूलचन्दजी बाफना क्रियानिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ ज्ञानवान सुश्रावक हैं एवं श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना ने अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री एवं उपाध्यक्ष पद का महनीय दायित्व निर्वहन करने के साथ ही श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया है। अनुज भ्राता श्री नवरतनजी बाफना संत-सतियों की वैय्यावृत्य का लाभ लेते हैं। उनके सुपुत्र श्री नितेशजी बाफना भी श्री जैन रत्न हितैषी युवक परिषद् के सक्रिय सदस्य हैं।

जोधपुर- संघ-सेवी, सुश्रावक श्री दशरथमलजी लोढ़ा (एडवोकेट) का 13 अक्टूबर 2016 को परलोकगमन हो गया। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी आप सदैव तत्पर रहते थे। माता-पिता से प्राप्त संस्कारों को आपने अपने समूचे जीवन में बनाये रखा। उनकी पूजनीया मातुश्री स्व. श्रीमती माणककंवरजी लोढ़ा की श्रद्धा-भक्ति आज भी स्मरणीय है। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रथम अध्यक्ष एवं न्यायमूर्ति श्री सोहननाथजी मोदी के दामाद थे। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में लोढ़ा परिवार का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

गिरि (राज.)- सत्संग प्रेमी, सेवाभावी श्रीमती जमुनादेवीजी धर्मसहायिका श्री शंकरलाल जी सोनी का 11 अक्टूबर 2016 को स्वर्गगमन हो गया। सुश्राविका जब भी संत-सती गिरि ग्राम में पधारते, उल्लसित मन व प्रमुदित भावों से सेवा-सन्निधि का लाभ लेने में अग्रणी रहतीं। जैनेतर होते हुए भी गोचरी-पानी निर्दोष बहराने में पूरा विवेक रखती। अहोभाव से गोचरी-पानी बहराने के पश्चात् ही आहार ग्रहण करती। आप हमेशा जप-तप में लीन रहती। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रभाव से सात्त्विक जीवन शैली को अपनाने वाली बहिन जमुनाजी ने सन् 1978 में रात्रिभोजन त्याग के नियम अंगीकार कर लिये थे। समूचा परिवार रात्रिभोजन त्याग के नियम का पालन 38 वर्षों से कर रहा है। सोनी परिवार का यह आदर्श अनुमोदनीय एवं अनुकरणीय है।

नागपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती धापुबाईजी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री भँवरलालजी सुराणा 'जोधपुर वाले' का 29 सितम्बर 2016 को त्याग-प्रत्याख्यान सहित 93 वर्ष की उम्र में सागारी संथारा सहित समाधिपूर्वक

पण्डित मरण हुआ। आपका जीवन समभाव एवं सादगी से परिपूर्ण तथा अत्यन्त प्रेरणादायक था। आप प्रतिदिन 12-15 सामायिक करती थीं। संवर, पौषध तथा स्वाध्याय नियमित रूप से करती थीं। कई प्रत्याख्यानों का सजगतापूर्वक पालन, चारित्रनिष्ठ संत-सतियों के प्रति पूर्ण समर्पण भाव, अनेक थोकड़ों का ज्ञान, तपस्या, त्याग, धर्म में अप्रमाद आदि अनेक श्रेष्ठ उपलब्धियों, विशेषताओं से आपका जीवन समृद्धशाली था। आपश्री शीतलचन्दजी, सुभाषचन्दजी सुराणा की माताजी थीं।

सूरत- सुश्रावक श्री नवरतनमलजी गांग (मूल निवासी जोधपुर) का 11 अक्टूबर 2016 को 85 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। रत्नसंघीय संत-सतियों के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा भक्ति थी। आप जोधपुर में रहते हुए सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने अपने जीवन में कई व्रत-नियम ग्रहण कर रखे थे। पूरा गांग परिवार स्वधर्मी वात्सल्य सेवा और संत-सतियों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहता है।

सवाईमाधोपुर- सेवाभावी श्री विमलप्रकाशजी जैन (सूरवाल वाले) का 06 सितम्बर 2016 को 74 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप सेवाभावी, हँसमुख व विनोदी स्वभाव के व्यक्तित्व के धनी थे। टायफाइड के रोगियों की आप निःस्वार्थ भाव से सेवा करते थे।

जयपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती उषा जी भण्डारी धर्मसहायिका श्री रमेशकुमारजी भण्डारी का 23 जुलाई, 2016 को स्वर्गवास हो गया। वे सरकारी शिक्षा विभाग में शिक्षक थीं। आप मिलनसार, धार्मिक प्रवृत्ति की सुश्राविका थीं। साधु-संतों की सेवा में, सामायिक, स्वाध्याय, जाप, तप, त्याग, तपस्या, प्रतिक्रमण में सदैव आगे रहती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

9 फरवरी 2017 को पीपाड़ में दो दीक्षाएँ घोषित

परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने मुखारविन्द से संघसेवी श्रावकरत्न स्व. श्री पृथ्वीराजजी-सुन्दरदेवीजी कवाड़ के प्रपौत्र, श्रावकरत्न श्री दलीचन्दजी कवाड़ के पौत्र, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड़ के मुमुक्षु सुपुत्र **श्री कल्पेश जी कवाड़** एवं श्रावकरत्न श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ की सुपौत्री एवं श्रावकरत्न श्री प्रेमचन्दजी कवाड़ की मुमुक्षु सुपुत्री **मधु जी कवाड़** की माघ शुक्ला त्रयोदशी, 9 फरवरी, 2017 को पुण्यधरा पीपाड़ शहर में जैन भागवती दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की है।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15723 से 15734 तक 12 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

21000/- प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर, अहिंसा इण्टरनेशनल दिल्ली से प्राप्त 'अहिंसा इण्टरनेशनल विजयकुमार, प्रबोधकुमार, सुबोधकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार' की सम्मान राशि सप्रेम भेंट।

21000/- तीर्थंकर चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

5100/- श्री ईश्वरलालजी, हर्षल कुमारजी लोढ़ा (जामनेर वाले), जलगाँव, सौ. धनश्री अशोक कुमारजी पुत्रवधू ईश्वरलालजी लोढ़ा के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री उम्मेदराजजी, राजेशजी सिंघवी, मैसूर, श्री उम्मेदराजजी एवं श्रीमती मैनाबाईजी के विवाह की 50 वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्रीमान् प्रकाशचंदजी पंकजजी विशालजी जैन(जलगांव वाले) जयपुर, अपने पौत्र श्री मनन जैन सुपुत्र श्रीमती ईशा विशाल जैन के एवं पडपौत्र श्रीमती गुलाब बाई धर्मपत्नी श्री फूलचंदजी जैन श्यामपुरा वाले के जन्मोत्सव केउपलक्ष्य में।

6000/- श्रीमती मैनाकँवरजी धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी बाघमार, मैसूर, श्री सोहनलालजी बाघमार के 15 अगस्त 2016 को 74वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट। पौत्र श्री अभिषेकजी, सौरभजी, रोहितजी बाघमार की तरफ से एक हजार रुपये सहित।

5000/- श्री बुधमलजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी बाघमार, मैसूर, पिताश्री सोहनलालजी बाघमार के 15 अगस्त, 2016 को 74वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री सम्पतराजजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी बाघमार, मैसूर, पिताश्री सोहनलालजी बाघमार के 15 अगस्त 2016 को 74वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री राजेन्द्रजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी बाघमार, मैसूर, पिताश्री सोहनलालजी बाघमार के 15 अगस्त 2016 को 74वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3056/- श्रीमती ललिताजी, महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, श्री महेन्द्रमलजी गांग, श्रीमती स्वातिजी धर्मपत्नी श्री अनुपमजी गांग (यूएसए) एवं श्रीमती प्रियदर्शिनीजी धर्मपत्नी श्री अभिषेकजी गांग के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में तथा पूज्य मातुश्री स्व. श्रीमती पुष्पकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग की पुण्य स्मृति में भेंट।

3000/- श्रीमती मनोहरकंवरजी लोढ़ा, जोधपुर, अपने पति श्री दशरथमलजी लोढ़ा (एडवोकेट) सुपुत्र श्री हरखमलजी लोढ़ा का 13 अक्टूबर 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्री हस्तीमलजी, विमलजी, अशोकजी, विनोदजी सुराणा, नागौर-कोलकात्ता-बैंगलोर, निमाज चातुर्मास में साधना आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री भैरूलालजी जैन, चौथ का बरवाडा, सवाईमाधोपुर, धर्मसहायिका श्रीमती चंचलदेवीजी जैन के एकान्तर वर्षीतप सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री हुकमीचन्दजी, संतोष कुमारजी, विपुलजी डोसी, बैंगलोर, स्व. श्री विनोदकुमारजी सुपुत्र श्रीमती मदनकँवरजी-हुकमीचन्दजी डोसी की पाँचवीं पुण्य स्मृति 16 नवम्बर 2016 के उपलक्ष्य में भेंट।

1151/- श्रीमती मंजूश्री, आशा, आस्था, अल्फा, आकांक्षा, निकिता सुराणा, जोधपुर, स्व. श्रीमती लाडकंवरजी धर्मपत्नी श्री स्व. उम्मेदमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1151/- एडवोकेट गणपतचंदजी सी.ए., प्रकाशजी, प्रतीकजी सुराणा, जोधपुर, स्व. श्री उम्मेदमल जी सुपुत्र स्व. श्रीमती सुगन कंवर सुजानमलजी सुराणा की पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री ओमप्रकाशजी जैन (नवसारी वाले), मुम्बई, सुपुत्र श्री टीकमजी जैन के 16 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री नरेशजी, जम्बूजी, विनोदजी जैन, आदर्शनगर-सवाईमाधोपुर, श्री विमलप्रकाशजी जैन का 06 सितम्बर 2016 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमान् डूंगरचंदजी बालचंदजी भूरट, जलगांव। अपने भ्राता श्री गोकुलचंदजी सुपुत्र स्व. श्री बालचंदजी भूरट के 03 जुलाई, 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्रीमान् महावीर प्रसादजी गौतमचंदजी संदीपकुमार जी जैन, कोटा, संदीपकुमारजी जैन (शीतल) के जन्मदिवस के उपलक्ष में।

1100/- श्रीमती दाखाबाईजी, ताराचन्दजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, राजेन्द्रकुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पूज्य पिताजी स्व. श्री मूलचन्दजी जैन की द्वितीय पुण्य तिथि पर।

1100/- श्रीमती शकुन्तलाजी कर्नावट, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री आनन्दराजजी, सुनील कुमारजी पटवा, मैसूर, श्रीमती ममताजी धर्मपत्नी श्री आनन्दजी पटवा के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रतनलालजी, पदमचन्दजी जैन, कुस्तला, पूज्य मातुश्री श्रीमती कल्याणीबाईजी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री विमल कुमारजी, धनराजजी जैन (धमूण वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री लड्डूलालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का बरवाडा वाले), मानसरोवर-जयपुर।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका श्री अर्जुनराजजी मेहता, श्री संजयजी-नीतूजी, अपूर्वजी, सुश्री टीशाजी मेहता, जोधपुर, श्री अर्जुनराजजी मेहता को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग राजस्थान सरकार द्वारा अन्तरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 2016 के अवसर पर राज्यस्तरीय वृद्धजन सम्मान से सम्मानित होने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

70000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से पुन: मुद्रित पुस्तक "हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

2100/- श्री नेमीचंदजी, पंकजजी डोसी, जोधपुर, श्री धीरजजी डोसी के अखिल भारतीय जैन नेशनल कोपरेशन लिमिटेड, दिल्ली द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक, प्रमाण पत्र एवं नकद 81000/- रूपये प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्रीमान् अनिलजी प्रवीणजी गांग हाल मुकाम जोधपुर, सूरत अपने पूज्य पिताजी श्री नौरतनमलजी गांग के 01 अक्टूबर 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्रीमती विजयजी मेहता धर्मपत्नी श्री उच्छबराज जी मेहता, जोधपुर, सहयोग हेतु।

पर्युषण सहयोग-2016

21000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल, मुम्बई।

21000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बजरिया।

1101/- महावीर नगर, सवाईमाधोपुर।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/- श्री निर्मलकुमारजी मनोहरलालजी बम्ब, बैंगलोर, सुश्री कियारा सपुत्री श्री हेमन्तजी एवं सुपौत्री श्री निर्मलकुमारजी मनोहरजी बम्ब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

कार्तिक शुक्ला 14, रविवार	13.11.2016	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15, सोमवार	14.11.2016	पक्खी, चातुर्मास समापन, वीर लोंकाशाह जयन्ती
मार्गशीर्ष कृष्णा 8, सोमवार	21.11.2016	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 12, शनिवार	26.11.2016	आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की 101 वीं पुण्यतिथि
मार्गशीर्ष कृष्णा 14, सोमवार	28.11.2016	चतुर्दशी, पक्खी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8, बुधवार	07.12.2016	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 11, शनिवार	10.12.2016	मौन एकादशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 14, मंगलवार	13.12.2016	चतुर्दशी, पक्खी
पौष कृष्णा 8, बुधवार	21.12.2016	अष्टमी
पौष कृष्णा 10, शुक्रवार	23.12.2016	भगवान पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक

संघ हेतु आधार- सूचना संग्रहण-कार्यक्रम

अपेक्षित है आपका सहयोग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना का संग्रह ऑनलाइन किया जा रहा है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचनातंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ हो चुका है। आप **WWW.RATNASANGH.COM** पर अपनी सूचना दे सकते हैं।

- यह फार्म परिवार के तीन वर्ष से अधिक वय के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भरा जाना है। इसे आप आधार कार्ड की भाँति व्यक्तिगत सूचनातंत्र भी समझ सकते हैं।
- इससे संघ का सूचनातंत्र विकसित होगा। आगे चलकर चिकित्सा के क्षेत्र में अन्य समाज की भाँति ग्रुप मेडिकल बीमा हेतु प्रयास कर उसे मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता है।
- आप संघ की वेबसाइट www.ratnasangh.com पर जाकर अपना फार्म स्वयं ही भर सकते हैं। फार्म भरना शुरू करते समय आपके मोबाइल नम्बर पर एक संदेश आयेगा, जिसमें फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख रहेगी। आप स्वयं अपना फार्म पूर्ण भर सकते हैं या उसमें आवश्यक सुधार कर सकते हैं। यदि आपके पास फार्म नम्बर या तारीख का संदेश सुरक्षित न हो तो आप वेबसाइट पर जाकर एडिट फार्म पर क्लिक करें, वहाँ पर आपको फोरगोट पासवर्ड का विकल्प प्राप्त होगा, उस पर क्लिक करके अपने नाम एवं मोबाइल नम्बर की जानकारी प्रदान करें। दोनों जानकारी सही होने पर आपके मोबाइल पर फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की दिनाँक का संदेश आपको पुन: प्राप्त हो जायेगा। इसकी सहायता से आप अपना फार्म एडिट कर सकते हैं।
- इस सूचना संग्रहण कार्यक्रम से आपको यथासमय चातुर्मास, दीक्षा महोत्सव, विशिष्ट पर्व तिथि आदि एवं आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होंगी।
- आशा है आप संघ के इस भागीरथी प्रयास से रीते नहीं रहेंगें एवं अपने परिवार सहित सभी स्वधर्मी भाई-बहनों की सूचना संगृहीत कराने में पूरा प्रयास करेंगे।

-विकास गुंदेचा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पुस्तकालय एवं श्रुत सेवा,
मोबाइल नं. 099283-63581

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Since 1986

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी
का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

सुविधायें

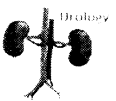

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018
फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन
के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA TM
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

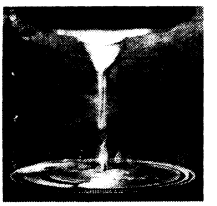

Electric Arc Furnace

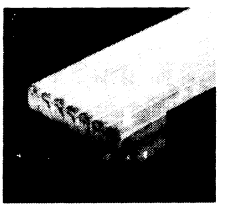

Billets

Rolling Mill

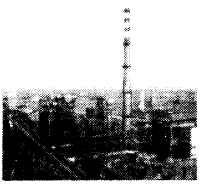

Captive Power Plant

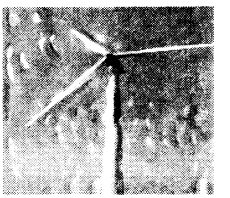

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam.....

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E), Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O), E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg, Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 नवम्बर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2016 ★ कार्तिक, 2073

waterfront
at KALPATARU riverside PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences
022 3064 3065

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.
The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन